देहाती प्राकृतिक चिकित्सा



हिन्द पुस्तक भण्डार
खारी बावली दिल्ली

B2

देहाती प्राकृतिक चिकित्सा

लेखक
अमोलक चन्द्र शुक्ल 'सोमरस'

हिन्द पुस्तक भण्डार

हिन्द पुस्तक भण्डार
खारी बावली, दिल्ली - 110006

मूल्य

आठ रुपये पच्चीस पैसे

सावधानी

इस पुस्तक में दिये गए अधिकांश योग या नुस्खे अनुभूत और पूर्ण विश्वस्त हैं; फिर भी यह सावधानी अवश्य रखें कि रोगी और रोग की अवस्था के विचार से योग बनाते समय या प्रयोग करते समय किसी योग्य चिकित्सक की सम्मति अवश्य ले लें। यदि ऐसा न करें और किसी अनिष्ट की सम्भावना दिखाई दे तो लेखक, अनुवादक, मुद्रक तथा प्रकाशक में से कोई भी उत्तरदायी नहीं होगा।

—अमोलक चन्द्र शुक्ल

प्रकाशक
हिन्द पुस्तक भण्डार
खारी बावली, दिल्ली

मुद्रक
मयूर प्रेस, बी-६६, जी. टी. करनाल रोड
इन्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-११००३३

प्राक्कथन

सुहृद् पाठकगण !

हमारी पूर्वलिखित पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' (साधु की चुटकी आपकी सेवा में पहुँच चुकी होगी और आपने उससे अद्भुत लाभ प्राप्त किया होगा, ऐसा मुझे दृढ़ विश्वास है। क्योंकि संन्यासियों के जिन गुप्तातिगुप्त प्रयोगों को प्राप्त करने के लिए बड़े हकीमी बड़े वैद्य, भी लालायित थे, उन्हें हमने बड़े अथक परिश्रम से संग्रह करके उक्त पुस्तक में अंकित कर दिया था। उस पुस्तक की दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई माँग को देखते हुए उसकी उपयोगिता व लोकप्रियता से मुझे परम आत्म-सन्तोष प्राप्त हुआ।

आप लोगों से इस प्रकार सहयोग और प्रोत्साहन प्राप्त कर हम आज एक और भेंट आपकी सेवा में सगर्व उपस्थित करते हैं। और वह भेंट यही 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' पुस्तक है, जो कि आपके हाथों में है।

इस पुस्तक में क्या है ? आप पढ़ने के बाद स्वयं ही जान लेंगे। किन्तु मैं दावे के साथ यह कह सकता हूँ कि यह पुस्तक जन साधारण विशेषकर भारत की ग्रामवासी निर्धन जनता के लिए अत्युपयोगी सिद्ध होगी।

भला क्यों ?

—इसलिए कि जो मनुष्य भी संसार में आया है, रोग से नहीं वच सका। रोग सभी को लगे रहते हैं। शहर वाले तो अच्छे-अच्छे डाक्टरों की चिकित्सा प्राप्त कर लेते हैं, किन्तु वेचारे गांव वाले क्या करें ? जहाँ मीलों तक वैद्य नहीं मिलते। यदि वे बेचारे आयुर्वेदिक व यूनानी चिकित्सा की पुस्तकों की मदद लेना चाहते हैं, तो देखते हैं कि

उनकी दवाइयां वनाना उनके सामर्थ्य से वाहर की वात है । अस्तु हमने उन्हीं लोगों के कल्याणार्थं यह पुस्तक लिखी है । इसमें हमने चिकित्सा के अनेक हिन्दी व उर्दू ग्रन्थों से ऐसे उत्तम और सरल प्रयोग संग्रह किये हैं, जिन्हें विना किसी व्यय अथवा कठिनाई के हर गांव का व्यक्ति प्राकृतिक पेड़ पौधों आदि की जड़, पत्ते और फलों आदि से वना सकता है। ये प्रयोग देखने में साधारण से हैं, किन्तु परम लाभ-दायक हैं, क्योंकि प्रकृति की गोद में फलने-फूलने वाले इन सर्वत्र प्राप्य पेड़ पौधों में ही अनुपम गुण भरे हुए हैं। कुछेक प्रयोग साधारण औषिधियों और दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं के भी हैं ताकि आप लोग पूरा-पूरा लाभ उठा सकें।

विनयावनत—
अमोलक चन्द्र शुक्ला

विषयानुक्रमणिका

संन्यासी चिकित्सा शास्त्र

यह वह पुस्तक है, जिसने सारे देश के वैद्यों, हकीमों और जनता में खलबली मचा दी है। आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सकों के योग तो सर्वत्र ही आपको मिल जायेंगे। किन्तु पर्वतों की गुफाओं में रहने वाले संन्यासियों के ऐसे-ऐसे महान् योग जिन्हें देखकर बड़े-बड़े वैद्य भी दांतों तले उँगली दबा गये, इस पुस्तक के अलावा शायद ही कहीं मिल सकें। ये वे योग हैं जो किन्हीं भाग्यवानों को बड़े-बड़े संन्यासियों ने रहम खाकर प्रदान कर दिए थे। उन्होंने वर्षों इन्हें गुप्त रखकर हजारों रुपये उनसे कमाए। अन्त में कई साल से अथक परिश्रम और घोर प्रयत्नों से हमने उन्हें प्राप्त करके इस पुस्तक के रूप में पाठकों को अर्पण किया है। मूल्य केवल ८.२५) रुपया। डाकव्यय पृथक्।

संन्यासियों की गुप्त बूटियां

देहाती जड़ी बूटियां दोनों भाग सम्पूर्ण

लेखक तथा सम्पादक—वैद्यराज पं० राम नारायण शर्मा

इह पुस्तक में असंख्य ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त भेद अंकित हैं, जो जंगलों, सड़कों और गाँवों में हर समय मिल सकती हैं, बड़े-बड़े रोगों पर चमत्कारी प्रभाव दिखाती हैं किन्तु आप उनके गुणों से अपरिचित हैं। यह अद्वितीय पुस्तक यदि आपके घर में होगी तो घर की स्त्रियां भी बच्चों व पुरुषों के अनेक रोगों की तत्क्षण चिकित्सा कर सकती हैं।

प्रथम भाग में भारत के विभिन्न प्रांतों में उगनेवाली अपूर्व बूटियों का ज्ञान संग्रह है। किस प्रान्त में कौन-कौन बूटियां कहां-कहाँ पाई जाती हैं, उनके प्रांतीय तथा वैद्यक नाम क्या हैं और किन-किन रोगों पर वे चमत्कारी लाभ दिखाती हैं, आदि ऐसी बातें लिखी गई हैं, जो जनता के लिए अनमोल भेंट सिद्ध होंगी।

पृष्ठ संख्या ४६४ चित्र संख्या २०९ मू० १५) डाकव्यय पृथक

हर प्रकार की पुस्तकें वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का सबसे बड़ा भण्डार

हिन्द पुस्तक भण्डार, खारी बावली, दिल्ली

अन्य बिक्री केन्द्र : नई सड़क, दिल्ली : चावड़ी बाजार, दिल्ली

देहाती प्राकृतिक चिकित्सा

प्रथम अध्याय

मस्तिष्क-रोग

मस्तिष्क का महत्व

हमारे शरीर में मस्तिष्क का वही पद है जोकि राज्य में एक मंत्री का होता है और आप तो जानते ही हैं कि शासन की बागडोर मन्त्री के ही हाथ में होती है । यदि मंत्री कमजोर होता है, तो राज्य में अशांति और उपद्रव छा जाते हैं । ठीक इसी प्रकार हमारे मस्तिष्क में तनिक भी कमजोरी आते ही शरीर रूपी राज्य में भांति २ के रोग और कष्ट उत्पन्न हो जाते हैं । अस्तु यह बात साधारण-तया समझी जा सकती है कि शरीर को स्वस्थ तथा नीरोग बनाए रखने और जीवन को बुद्धि विकास द्वारा उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए मस्तिष्क की रक्षा करना परम आवश्यक है । क्योंकि उस सृष्टिकर्ता भगवान् ने बुद्धि जैसा अनमोल भण्डार भी मस्तिष्क में ही रखा है, अतः बुद्धि को सुरक्षित रखने के लिए मस्तिष्क की रक्षा करना परमावश्यक है ।

प्रायः लोग मस्तिष्क रक्षा की ओर विशेष ध्यान नहीं देते । परिणामस्वरूप मस्तिष्क दुर्बल होता जाता है । नजला, प्रतिश्याय, शिरशूल आदि रोग हर समय घेरे रहते हैं । बुद्धि दिन प्रतिदिन क्षीण होती जाती है ।

किसी मानसिक अथवा परिवारिक कार्य में उनका चित्त नहीं लगता और ऐसे व्यक्तियों का जीवन कुछ ही दिनों में पशुओं के समान हो जाता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति मस्तिष्क के महत्व को समझते हैं वे एक बार चाहे अन्य रोगों की उपेक्षा भी कर जायं, किन्तु मस्तिष्क को पुष्ट व नीरोग बनाए रखने की ओर पर्याप्त ध्यान रखते हैं, और अपने बुद्धिबल द्वारा उन्नति के शिखर पर जा पहुंचते हैं। भाई ! आजकल तो बुद्धि विकास का ही युग है । संसार के बड़े-बड़े वैज्ञानिक आविष्कार भी बुद्धिविकास से ही हुए हैं । राजनीति के बड़े-बड़े दांव-पेच और कानून भी बुद्धिविकास के ही फल हैं, और इसी पर बड़े-बड़े राष्ट्रों की शासन सत्ता और उन्नति निर्भर है। इसके अतिरिक्त किसी भी क्षेत्र को ले लीजिए, उसका विकास भी मानव के बुद्धि-विकास पर ही आधारित है, किन्तु जब मस्तिष्क ही रोगहीन न रहेगा, तो बुद्धि किस प्रकार विकसित हो सकती है ? अस्तु—

मैं बारम्बार अपने प्रिय पाठक बन्धुओं से अनुरोध करता हूं कि वे अपने मस्तिष्क के लिए पूर्णतया सचेष्ट रहें, इसी पर न केवल उनकी, अपितु स्वराष्ट्र भारत को उन्नति भी निर्भर है। आज हमारे असंख्य भाई अज्ञानता-वश अपने गाढ़े पसीने की कमाई चाय, सिगरेट तथा मद्य-पान आदि हानिकारक वस्तुओं पर लुटा देते हैं, यदि वे उतने पैसों का सदुपयोग करते हुए घी, दूध आदि पौष्टिक पदार्थ सेवन करें, तो न केवल मानसिक शक्ति, अपितु शारीरिक शक्ति का भी विकास हो, और उनका जीवन सुखमय हो जाय । क्या आपने कभी सोचा, कि हमारे प्राचीन पूर्वजों की यश-गाथाएं क्यों अब तक संसार भर में

गाई जाती हैं। इसलिए कि उस समय के लोग इन हानि-कारक वस्तुओं से बचते थे। और देशभर में घी दूध की नदियां बहती थीं। यही कारण था कि हमारा देश संसार भर का गुरु माना जाता था। आज हम उन्हीं की सन्तान किस दयनीय दशा को पहुंच चुके हैं?

मेरे प्रिय भाइयो! अभी समय है, तनिक आखें खोल कर संसार के अन्य राष्ट्रों की प्रगति को देखो और चेत जाओ, अन्यथा कुछ ही दिनों में तुम्हारा अस्तित्व समाप्त हो जायगा। जीवन का सुख हीरे जवाहरात नहीं हैं, मोटर कारें नहीं हैं। भोग विलास और कुकृत्यों में कोई सुख नहीं, जीवन का सच्चा सुख तो स्वास्थ्य पर निर्भर है, और विशेषकर आधुनिक युग में शारीरिक स्वास्थ्य से बढ़कर मानसिक स्वास्थ्य का महत्व है। बुद्धिबल के द्वारा ही आप संसार के वैभवों को अपने चरणों में झुका सकते हैं, अतः मस्तिष्क की रक्षा करो, यही मेरी नेक सलाह है।

बस, अब हम पुस्तक के मुख्य विषय पर आते हैं। मस्तिष्क सम्बन्धी रोग तो असंख्य हैं, किन्तु यहां हम केवल उन्हीं प्रमुख रोगों का वर्णन कर रहे हैं, जो सामान्यतः आए दिन आपके मस्तिष्क को घेरे रहते हैं, और बड़े ही हानिकारक सिद्ध होते हैं। साथ ही उन रोगों को दूर करने के लिए हम सर्व-साधारण के कल्याणार्थ ऐसे-ऐसे उत्तम और सरल प्रयोग अंकित करते हैं, जिनसे आप बिना एक भी पैसा व्यय किए रोग-मुक्त हो सकते हैं। हम जानते हैं कि हमारे देश के अधिकांश भाई अत्यन्त ही निर्धन हैं वे डाक्टरों की जेबें नहीं भर सकते, वे आयुर्वेद चिकित्सा की मूल्यवान् औषधियां सेवन नहीं कर सकते, ऐसे ही भाइयों

के कल्याण को दृष्टिगत रखते हुए इस पुस्तक की रचना की गई है। इसमें केवल वही सरल प्रयोग संगृहीत किए गए हैं, जो कि प्रकृति माता की गोद में पाई जाने वाली जड़ी बूटियों तथा गांव २ में पाए जाने वाले पेड़ पौधों आदि से ही बनते हैं। ये उस प्रभु की लीला हैं कि जिसने इन सर्वत्र प्राप्य साधारण वस्तुओं में भी ऐसे २ गुण भर रखे हैं। आपने प्रायः देखा अथवा सुना होगा कि हमारे देश के प्राचीन संन्यासी साधारण सी बूटियां झोली से निकाल कर मिनटों में बड़े २ कष्टसाध्य रोग को उड़ा देते थे। हमने उन्हीं संन्यासियों के बड़े २ चमत्कारी प्रयोग 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र'—नामक पुस्तक में संग्रह किए हैं, उनके अतिरिक्त और भी सैंकड़ों सुगम प्रयोग हैं, जो कि प्राकृतिक वस्तुओं से ही बनते हैं, और आश्चर्यजनक प्रभाव रखते हैं। हमारे देश के अनेक विद्वान् वैद्य इनसे अपूर्व यश कमा चुके हैं, और प्रायः सभी वैद्य इन प्रयोगों की खोज में दिन रात लगे रहते हैं। लीजिए आज हम आपको वही प्रयोग संग्रह करके दे रहे हैं। हमें आशा ही नहीं; वरन् पूर्ण विश्वास है, कि यह पुस्तक हमारे निर्धन भाइयों का पर्याप्त कल्याण करने में समर्थ होगी और उनके शुभ आशीर्वादों से हमारी झोली भरेगी।

मस्तक-शूल

प्राचीन चिकित्सकों ने सिर-पीड़ा (मस्तक शूल) के इतने भेद लिखे हैं, जिनका स्मरण रखना व निदान करना हमारे लिए असम्भव नहीं तो दुस्साध्य अवश्य है किन्तु अर्वाचीन चिकित्सकों का मत है कि सिर की पीड़ा स्वयं कोई रोग नहीं, वरन् यह अन्यान्य रोगों का प्रभाव मात्र है

कुछ भी सही, हम आपको सिर पीड़ा के कुछ प्रमुख भेद और उनके अति सरल योग बताते हैं, जिनसे आवश्यकता के समय पर्याप्त लाभ होगा।

सूर्यावर्त

इस रोग को जनसाधारण की आम बोलचाल में 'आधाशीशी' कहते हैं। यह एक प्रकार की ऐसी पीड़ा है जो प्रायः सिर के आधे भाग में, और कभी २ सारे सिर में भी उत्पन्न हो जाती है। इस रोग की उत्पत्ति का मूल कारण प्रायः पैतृक प्रभाव ही होता है, किन्तु कभी-कभी प्रतिश्याय नजला आदि की विधिवत् चिकित्सा न होने के कारण खारी आर्द्रता का मस्तिष्क रगों में रुक कर विकार उत्पन्न कर देना भी हो जाता है।

सूर्यावर्त के लक्षण

सूर्यावर्त की पीड़ा प्रारम्भ होने से पूर्व रोगी का सिर घूमने लगता है, आंखों के सामने चिनगारियां सी उड़ती प्रतीत होती हैं। तत्पश्चात् कनपटियों की रगें प्रबलता से तड़पने लगती हैं और साथ ही पीड़ा की अधिकता के कारण रोगी का सिर फटने लगता है, जी मिचलाता है, और उसे प्रकाश से तीव्र घृणा हो जाती है।

सूर्यावर्त की चिकित्सा

सर्वप्रथम रोगोत्पत्ति के मूल कारण को दूर करने का प्रयत्न करें, और चिकित्सालय में रोगी को कोष्ठबद्धता कदापि न होने दें। इस रोग को दूर करने के लिए नीचे कुछ अति सुगम योग अंकित किए जाते हैं, किन्तु यदि किसी कारणवश इनसे पीड़ा शान्त न हो, तो 'देहाती अनुभूत

योग संग्रह' नामक पुस्तक में वर्णित उत्तमोत्तम आयुर्वेदिक योगों से लाभ उठावें। और यदि उनसे भी लाभ न हो तो 'हमारी सन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में वर्णित सन्यासी प्रयोग तो ऐसे अचूक रामबाण हैं, जो कभी निष्फल नहीं जाते। अस्तु, इस पुस्तक को अवश्य पास रखें। बस दुस्साध्य से दुस्साध्य रोग को भी जड़ मूल से उड़ा देने में आप पूर्णतया सफल होंगे।

अत्युत्तम नस्य

जंगली उपले को जला कर राख करलें और उसमें थोड़ा आक का दूध मिला कर सुखालें। आवश्यकता के समय इसमें से थोड़ी सी औषधि नस्यवत् रोगी को सुंघा दें। तत्काल छींकें आना प्रारम्भ हो जायंगी और मस्तिष्क की रगों में रुका हुआ श्लेष्म तुरन्त ही निकल जायगा। तथा ईश्वर कृपा से तड़पते हुए रोगी को उसी समय आराम हो जायगा। यह योग वैद्यों द्वारा सैकड़ों रोगियों पर अनुभूत हो चुका है।

द्वितीय विशेष योग

यह योग हमारे एक मित्र को ऐसे हकीम साहब से प्राप्त हुआ था जो स्वयं आधाशीशी रोग में ग्रसित हो गए थे। संयोगवश मोगा में उनकी भेंट एक ऐसे लालाजी से हुई, जो कि आधाशीशी की चिकित्सा में दूर २ तक विख्यात थे। कारण, कुछ वर्ष पूर्व लालाजी को किसी संन्यासी ने यह अचूक योग प्रदान कर दिया था, और उसी योग से उन्होंने सैकड़ों पीड़ित रोगियों को ठीक किया था। बड़े प्रयत्न करने पर लाला जी ने वह योग प्रकट किया। आज वही

हम अपने प्रिय पाठकों को भेंट कर रहे हैं। योग इस प्रकार है—

पोस्त के अनपछ डोडे नए २ तोला, गेहूं की भूसी ४ तो०, पुराना गुड़ ४ तो०, तीनों को पानी में उबाल व छान कर सोते समय पी लिया करें। इसी प्रकार निरन्तर तीन दिन सेवन करने से निश्चय ही लाभ होगा। स्वयं मैंने आधाशीशी के लिए इससे उत्तम योग आज तक दूसरा नहीं देखा।

तृतीय योग

पुरानी पक्की ईंट पीसकर गेरू बनालें और उसे आक के दूध में तर करके सुखालें, तदुपरान्त तौल कर प्रति तोला ७ लवंग बारीक पीसकर मिला दें और थोड़ी सी रोगी को नस्यवत् सुंघाएं। न केवल सूर्यावर्त, अपितु कनपटी पीड़ा, दन्तपीड़ा तथा मोतियाबिन्दु के लिए भी परम लाभदायक है।

चतुर्थ योग

(जो कि आधाशीशी व अनन्तवात दोनों के लिए अक्सीर है।)

ऊट की मींगनी आक के दूध में तर करके छाया में सुखालें और जलाकर राख करलें। इस राख में से थोड़ी सी दवा रोगी को सुंघाएं, आधाशीशी व अनन्तवात को जड़ से मिटा देगी।

अनन्तवात

यह बड़ा ही कष्टप्रद रोग है। रोगी को पलभर भी चैन नहीं मिलता। चिकित्सकों के मतानुसार यह पीड़ा भी

सूर्यावर्त का ही एक कष्टसाध्य भेद है, ऐसा प्रतीत होता है मानो आधे सिर की पीड़ा एकत्र होकर केवल एक कनपटी और आंख की पुतली में आ गई है। कनपटी से टीसें उठकर आंख के देले में से निकलती हैं, रोगी असह्य पीड़ा से व्याकुल हो जाता है और कभी कभी तो सहसा आँख फूट जाती है अथवा लाली या फोला हो जाता हैं। अस्तु इस रोग की चिकित्सा में उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यह रोग तो कठिन है, किन्तु हम आपको कुछ अत्यधिक परिश्रम से प्राप्त किए गए ऐसे सरल प्रयोग भेंट करते हैं जो ईश्वर कृपा से तत्काल लाभकारी सिद्ध होंगे।

अनन्तवात का प्रथम योग

यह योग एक अति वयोवृद्ध और अनुभवी चिकित्सक का प्रदान किया हुआ है, जो कि सहस्रों रोगियों पर परीक्षित हो चुका है और कभी निष्फल नहीं गया। ऐसे विशेष योग को प्रदान कर देना उन वृद्ध महाशय की उदारता का प्रमाण है; अन्यथा कृपण व्यक्ति तो भूल कर भी प्रकट नहीं कर सकते। उनका कथन है कि मेरे जीवनभर की कमाई केवल यही अचूक योग है। आवश्यकता के समय जो लोग परीक्षा करेंगे, वे अपूर्व लाभ प्राप्त करेंगे। योग इस प्रकार है :—

श्वेत फिटकरी, हल्दी की गांठें दोनों ही वस्तुएं घर-घर में प्राप्त हैं। मिट्टी के बर्तन में थोड़ा सा पानी डाल कर बराबर पीसें। जब गाढ़ा सा लेप तैयार हो जाय तो तर्जनी अंगुली से पीड़ा वाली ओर की आँख में डाल दें तथा थोड़ा सा कनपटी व भ्रू पर लेप कर दें। एक ही

बार में ईश्वरानुकम्पागत लाभ हो जायगा। औषधि के प्रयोग काल में रोगी को केवल ताजा जलेबी खिलायें, और कुछ नहीं।

द्वितीय सुगम योग

इटसिर जिसे साठी भी कहते हैं। उसकी ताजा जड़ कूटकर रस निकालें और रोगी को सुंघाएं। ईश्वर कृपा से कठिन से कठिन पीड़ा भी तुरन्त शान्त पड़ जायगी।

तृतीय

आक की जड़ का छिलका छाया में सुखालें और उसमें से १ तो० लेकर ७ दाने इलायची के बीज ६ रत्ती कपूर मिलाकर बारीक पीसलें। आवश्यकता के समय रोगी को नस्य दें। छींकें आकर तत्काल पीड़ा शान्त हो जायगी।

चतुर्थ

रीठे का छिलका तथा बड़ी छमक निमोली के बीज समभाग लेकर बारीक पीस लें, और रोगी को नस्य दें। यह नस्य हर प्रकार की मस्तक पीड़ा को तत्क्षण रोक देता है, जब चाहें परीक्षा कर देखें।

पन्चम

आक के पके हुए पीतवर्ण पत्ते गौ घृत से चुपड़कर आग पर गर्म करें और मलकर रस निचोड़ लें। आवश्यकता के समय रोगी को चित्त लिटाकर उसकी नाक में दो २ बूंद रस टपका दें। छीकें आकर कफ निकल जायेगा और पीड़ा दूर हो जायगी।

प्रतिश्याय (नजला व जुकाम)

नजला और जुकाम एक ही रोग के दो रूप हैं। मस्तिष्क का दूषित मल जब नासिका मार्ग से बहने लगता है, तो जुकाम कहलाता है और वही अन्दर टपकने लगता है, तो नजला कहलाता है। इन रोगों से आए दिन लोग पीड़ित रहते हैं।

प्रतिश्याय के मूल कारण

प्रायः प्रतिश्याय होने के मूल कारण ऋतु परिवर्तन, मानसिक दुर्बलता, अधिक धूप में चलना फिरना, उष्ण पदार्थों का खाना, बड़ी पगड़ो व बड़े केश रखना, आदि होते हैं। इनसे पित्त अधिक होकर कफ में मिल जाता है और पित्त प्रतिश्याय उत्पन्न हो जाता है। इसी प्रकार शीतल जल से नहाना, ठण्डी वस्तुओं के अधिक सेवन से मस्तिष्क में कफ उत्पन्न होकर शीतल प्रतिश्याय हो जाता है, किन्तु अर्वाचीन चिकित्सकों के मतानुसार इस रोग की उत्पत्ति का कारण माइक्रो काक्स कैटारिल्स (Micro Cocks Catarils) नामक कीड़ा होना है।

लक्षण तथा चिकित्सा

प्रारम्भ में चित्त आलस्य में रहता है और फिर माथे पर जकड़न सी उत्पन्न होकर छींकें आने लगती हैं। तदुपरान्त पतली-पतली खराशवाली आर्द्रता उत्पन्न होकर नाक द्वारा बहने लगती है।

इसकी चिकित्सा में सर्वप्रथम यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि जारी हुई आर्द्रता को बन्द करने का यत्न न करें। अपितु इसे गाढ़ा करके निकालना चाहिये। पित्त

प्रतिश्याय में ठण्डी औषधियाँ लाभदायक होती हैं। अनजान लोग प्रत्येक प्रतिश्याय में गर्म औषधियां ही सेवन करते हैं, यह उनकी भूल है, यदि दूषित मल मस्तिष्क में ही रोक देंगे तो वह अन्य विकार उत्पन्न कर देगा। यदि प्रतिश्याय में सिर में पीड़ा भी होने लगे समझ लीजिए कि दूषित मल मस्तिष्क में रुक गया है, अतः कोई तीव्र नस्य प्रयोग करके उसे निकाल देना चाहिए। दूसरे इस रोग को साधारण समझ कर चिकित्सा में उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। क्योंकि प्रायः इसके बिगड़ जाने पर सन्निपात, शिरशूल, मोतिया बिन्दु, यक्ष्मा, निमोनिया आदि भयंकर रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

नीचे इस रोग को दूर करने के कुछ शतशोनुभूत तथा अति सुगम योग अंकित किए जाते हैं। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभ उठावें।

प्रथम सरल योग

यह योग कई लोगों ने परीक्षा करके परम लाभदायक पाया है। प्रत्युत एक व्यक्ति, जो शीतकाल के पूरे ३ मास प्रतिश्याय में ग्रसित रहता था, इसकी केवल ३-४ मात्राओं से ही ठीक होते स्वयं मैंने अपनी आंखों से देखा है। इस आश्चर्यजनक योग से नए व पुराने दोनों प्रकार के प्रतिश्याय दूर हो जाते हैं। नैतिक प्रतिश्याय वालों को एक सप्ताह तक निरन्तर सेवन करना चाहिये।

१ तोला श्वेत फिटकरी पूरे ४ पहर तक आक के दूध में खरल करके सुखालें। तदनन्तर ४ पहर धतूरे के पत्तों के रस में खरल करें और टिकिया बनाकर सराव सम्पुट करके १० सेर उपलों की अग्नि दें। फिटकरी श्वेत खील होकर

निकलेगी। इसे सूक्ष्म पीसकर शीशी में रखलें और १ रत्ती से २ रत्ती तक मलाई अथवा हलुवे में रखकर खिलाएं तथा जल न पिलाएं। कुछ मात्राओं में ही प्रतिश्याय जड़ से मिट जायेगा। यह भस्म ज्वर तथा पीड़ाओं के लिए भी लाभदायक है।

द्वितीय योग

इस योग की विशेषता है कि लाभकारी होने के साथ ही सुस्वादु भी है तथा कोष्ठबद्धता नाशक भी है। इसके अकथनीय गुण तो वही जान सकेंगे, जो कि आवश्यकता के समय इसका उपयोग करेंगे। अत्यधिक सरल व सस्ता योग है।

पाव भर पानी को आग पर उबालें। जब खूब उबलने लगे तो उसमें ४ माशा बनफशा के पत्ते डालकर तत्काल नीचे उतार लें और ५ मिनट तक बर्तन के मुंह को बन्द रखें तदनन्तर छानकर थोड़ा सा दूध और मिश्री मिलाकर गर्म-गर्म चाय की भांति घूंट-घूंट करके पिएं बस। सारे दिन जब भी प्यास लगे यही वस्तु ताजा तैयार करके पिएं, अन्य कोई वस्तु खाने को न दें। इससे एक ही दिन में चित्त स्वस्थ हो जाता है। जब तक बिल्कुल ठीक न हो जाय, इसी को जारी रखें। अचूक रामबाण सिद्ध होगा।

नैतिक नजला का सरल योग

२१ नग सफेद मिर्च साबत ही निगलवा दिया करें। ईश्वर की कृपा से सप्ताह भर में ही आराम हो जायेगा।

अद्वितीय नस्य

यह अनुपम प्रयोग नजला व जुकाम के लिए अत्युत्तम

है। हमारे एक परम मित्र वैद्य के स्वर्गीय शिक्षक का यह विशेषातिविशेष योग था और उन्होंने इस सुगम योग से ही सहस्रों रोगियों को आजन्म के लिए प्रतिश्याय मुक्त कर दिया था। आवश्यकता के समय परीक्षा करके इसका चमत्कार देखिए।

इटसिर, जिसे पुनर्नवा भी कहते हैं, उसके वीजों को लेकर छाया में सुखालें और अतिसूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय तनिक सी औषधि रोगी को सुंघावें। ४-५ बार के प्रयोग से ही समस्त मल निकल जायगा, और चित्त स्वस्थ हो जायगा।

पित्त प्रतिश्याय के लिए

कम से कम ड़ेढ़ पाव गाय का ताजा दही उचित परिमाण में मिश्री मिलाकर रोगी को पिलायें। इससे गर्मी का प्रतिश्याय एक दिन में ही ठीक हो जाता है। मैंने स्वयं अपनी चिकित्सा इसी से की थी।

अत्युत्तम प्रयोग

यह प्रयोग स्थायी नजला व जुकाम के लिए परम गुणकारी है:—७ नग भुने हुए चने और १ नग काली मिर्च प्रतिदिन निराहर मुख खा लिया करें। चार दिन पश्चात् १४ नग भुने हुए चने और दो नग काली मिर्च लेना प्रारम्भ करें। दो सप्ताह तक इसी प्रकार सेवन करते रहें। ईश्वर की कृपा से पुराने से पुराना नजला जुकाम जड़ मूल से जाता रहेगा।

निम्बू का चमत्कार

निम्न विधि से नींबू का प्रयोग करने से प्रायः एक

ही दिन में कठिन से कठिन प्रतिश्याय भी रुक जाता है, बड़ा ही प्रभावक व प्रशंसनीय प्रयोग है।

प्रयोग इस प्रकार है—

नींबू को खद्दर के भिगोए हुए कपड़े में लपेट कर ऊपर से चिकनी मिट्टी का लेप कर दें और इसे यथा विधि भूभल में दबा दें, जिससे उसका भुरता सा बन जाय। अब इसे गर्म २ को ही निकाल कर निचोड़ लें और वैसा ही गरम २ पीलें। यदि इसमें उचित मात्रा में शुद्ध मधु भी मिला लिया जाय, तो अच्छा है।

द्वितीय विधि

नींबू को चीर कर नजला व जुकाम के रोगी को सुंघाना अति लाभप्रद होगा।

प्रतिश्याय नाशक वटी

ये गोलियां प्रतिश्याय के लिए अत्यधिक लाभकारक व सैंकड़ों रोगियों पर अनुभूत हैं। इसके अतिरिक्त महामारी (प्लेग) व रक्त विकार के लिए भी जादू के समान प्रभाव रखती हैं।

नीम के पत्ते १ तोला, काली मिर्च ६ माशा दोनों को नीम के दण्डे से बारीक पीसकर १-१ रत्ती की गोलियां बनालें और छाया में सुखाकर रखलें। आवश्यकता के समय ३-४ गोलियां प्रातः सायं रोगी को गुनगुने पानी से दें। ईश्वर की कृपा से बड़े २ योगों से भी बढ़ कर लाभकारक सिद्ध होंगी।

मूली का चमत्कार

मूली का क्षार ४ रत्ती चूना कत्था लगे पान में रखकर

दिन में ३–४ बार रोगी को खिलाएं। यदि किसी कारण-वश पान उपलब्ध न हो सके तो गर्म पानी के साथ खिलाएं। ईश्वर कृपा से एक दो दिन में ही नजला, जुकाम व खांसी को आराम हो जायेगा।

सूचना—क्षार बनाने की विधि 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में विस्तार से समझा कर लिखी गई है। उसमें आप पढ़ ही चुके होंगे।

बट पत्र की चाय

लोग चाय को प्रतिश्याय के लिये अक्सीर समझते हैं, किन्तु कुछ अवस्थाओं में चाय न केवल लाभ रहित, अपितु हानिकारक भी है। लीजिए हम आपको एक ऐसी चाय बताते हैं जो कि हर प्रकार के प्रतिश्याय के लिये अपूर्व लाभदायक है।

प्रयोग इस प्रकार है—

बट वृक्ष (बरगद) के वह कोमल पत्ते जो कि लाल रंग के होते हैं, आवश्यकतानुसार लेकर छाया में सुखालें और उनको मसल कर चाय की पत्ती जैसा करके डिब्बों में भरलें। आवश्यकता के समय ६ माशा पत्ती लेकर आध सेर जल में पकाएं। जब आध पाव के लगभग पानी रह जाय तो यथा विधि दूध व खांड मिलाकर चाय की भांति पियें। प्रातः व सायं पीना चाहिये। कुछ ही दिनों में नजला व जुकाम दूर हो जायेंगे और मस्तिष्क पुष्ट होगा।

विशेष सूचना

'देहाती अनुभूत योग संग्रह' नामक पुस्तक में आयुर्वेदिक व यूनानी चिकित्सा के प्रतिश्याय नाशक व मस्तिष्क

पौष्टिक उत्तमोत्तम योग अंकित किये हैं। आवश्यकता के समय उनसे लाभ उठावें।

मानसिक दुर्बलता

प्राय: मानसिक श्रम की अधिकता, रक्त की न्यूनता, मैथुन की अधिकता, तथा हृदय की दुर्बलता के कारण मस्तिष्क दुर्बल हो जाता है । इसमे सिर के पृष्ठ भाग में पीड़ा होती रहती है; दृष्टि घट जाती है, कानों में बाजे बजते हैं, स्मरण शक्ति क्षीण हो जाती है। ये सब मानसिक दुर्बलता के लक्षण हैं।

मस्तिष्क की दुर्बलता को आप निम्न योगों द्वारा बिना किसी मूल्य के दूर कर सकते हैं, किन्तु इन योगों को यथा विधि नियमित रूप से प्रयोग करना अत्यावश्यक है। बड़े २ अमीर लोग तो बहुमूल्य औषधियां तथा पौष्टिक पदार्थ खाकर मस्तिष्क को पुष्ट बना लेते हैं, किन्तु हम निर्धनों को भी निराश होने की आवश्यकता नहीं उस परम दयालु भगवान् ने हमारे लिए उन छोटी २ वस्तुओं में जो सर्वत्र सुलभ प्राप्य हैं ऐसे गुण भर दिए हैं जोकि बहुमूल्य पदार्थों से भी बढ़ कर हैं। आवश्यकता के समय जब आप निम्न प्रयोगों की परीक्षा करेंगे, तो इनका प्रभाव देखकर चकित रह जायेंगे। और तब आपको हमारे इस कथन की सत्यता का अनुभव हो सकेगा।

प्रथम योग

आधा सेर सौंफ भली भांति स्वच्छ करके कूटलें और समभाग मिश्री मिलाकर कांच पात्र में सुरक्षित रखें। तथा दोनों समय भोजनोपरांत ६ माशा की मात्रा पानी के साथ खाया करें। इसके निरन्तर सेवन करते रहने से मानसिक

दुर्बलता दूर होगी और फिर कभी भी मस्तिष्क की दुर्बलता न होगी ।

अपूर्व चूर्ण

यह चूर्ण भी मानसिक दुर्बलता दूर करने के लिए बड़ा ही गुणकारक है। इसके निरन्तर तीन सप्ताह के सेवन से ही मस्तिष्क सम्बन्धी रोग मिट जाते हैं। हर समय काम में मन लगा रहता है, और किसी समय भी चित्त उचाट नहीं होता ।

१ छटांक धनिया तथा २ तोला बड़ी हरड़ की छाल को खूब बारीक पीसकर चूर्ण बनालें, और यदि समपरिमाण में चीनी भी मिला ली जाय तो और भी उत्तम है। आवश्यकता के समय प्रातः सायं ६-६ माशा की मात्रा पानी के साथ फांक लिया करें। प्रातः काल टट्टी भी खुल कर होगी। सारा दिन प्रसन्न व स्फूर्ति रहेगी।

सर्वोत्तम प्रयोग

यह प्रयोग यवनों के अनुकूल है, तथापि शिक्षित वर्ग के हिन्दू जो कि धार्मिक कट्टरता को विशेष महत्त्व नहीं देते, इससे लाभ उठा सकते हैं।

मुर्गी के दो कच्चे अण्डों की पीपता आध सेर दूध में भली प्रकार फेंटकर और शहद से मीठा करके पिया करें। मस्तिष्क के लिए अत्यन्त पौष्टिक है।

पीपल का चमत्कार

पीपल की कोंपल १० आध सेर गौ-दुग्ध में डाल कर पकावें और ३-४ उबाल आ जाने के उपरांत छानकर मिश्री

मिला कर नित्य पिया करें । मस्तिष्क के लिए अत्यधिक पौष्टिक सिद्ध होगा ।

सन्निपात

सन्निपात उस रोग को कहते हैं, जिसमें कि मस्तिष्क में सूजन उत्पन्न होकर रोगी मूर्छित हो जाता है । यह बड़ा ही भयंकर और कष्टसाध्य रोग है, तथापि निम्नांकित चुटकले ईश्वर कृपा से इस रोग को चुटकियों में उड़ा देते हैं । रोग का विशेष विवरण जादू की भांति प्रभाव दिखाने वाले संन्यासी प्रयोग जानने के लिए मेरी ही लिखी हुई 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' नामक पुस्तक का अध्ययन करें ।

अति सुगम प्रयोग

सन्निपात के मूर्छित रोगी की नाक के नथनों में बारीक पिसा हुआ नमक पानी में घोलकर थोड़ा-थोड़ा टपकावें । प्रायः इस चुटकले से ही रोगी की मूर्छा तत्काल दूर हो जाती है ।

द्वितीय प्रयोग

यह अपूर्व चमत्कारी प्रयोग है । न केवल सन्निपात, अपितु अपस्मार, व हृदय की दुर्बलता आदि किसी कारण से भी मूर्छा क्यों न हो, तत्काल दूर हो जाती है । प्रयोग यह है ।

पीपल का दूध २ से ४ बूंद तक रोगी की नाक के नथुनों में टपकावें, तथा थोड़े से पीपल के दूध में सम-परिमाण उत्तम शहद मिला कर मस्तक पर लेप करदें । ईश्वर कृपा से शीघ्र ही रोगी को होश आ जायेगा ।

यवन चिकित्सा

एक जंगली कबूतर को पकड़ कर रोगी के सिर पर 'जिबह करें, ताकि उसके गले का गरम २ रक्त रोगी के सिर पर पड़े। फिर तत्क्षण ही उसका पेट चीर कर बालों व पर सहित गरम २ ही रोगी के सिर पर बांध दें। चाहे वह कितना हो बेहोश क्यों न हो, तत्काल होश में आ जायेगा।

विशेष सूचना

'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में सन्निपात के लिये एक बहुत ही अक्सीर प्रयोग लिखा गया है, जो कभी निष्फल नहीं जाता।

अर्द्धाङ्ग व अर्दित

अर्धांग वह रोग है जिसमें आधा शरीर जड़वत् हो जाता है, और अर्दित वह रोग है, जिसमें मुंह एक ओर को टेढ़ा हो जाता है। प्रायः यह रोग शीतकाल में ठंडी हवा लग जाने या ठण्डा पानी पी लेने से दुर्बल और वृद्ध लोगों को हो जाता है। इसका पूर्ण विवरण 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में दिया गया। इन रोगों के लिए निम्न प्रयोग बड़े ही लाभदायक हैं। सैकड़ों रोगी लाभान्वित हो चुके हैं।

प्रथम योग

तिलों के तेल को कड़ाही में डालकर आग पर रखें और उसमें आक के पत्ते डाल कर पकावें। जब पत्ते जल जायं, तो छान कर तेल शीशी में भर लें। तथा अर्धांग व

अर्दित के रोगी की मालिश कराए। ईश्वर कृपा से एक दो दिन में ही ठीक हो जायेगा।

विशेष हिदायत

अर्धांग व अर्दित के रोगी को भोजन देना बिल्कुल बन्द कर देना चाहिये। तथा जब रोगी से किसी प्रकार भी भूखा न रहा जाय, तो शहद गरम पानी में घोलकर पिलाना चाहिए। यदि भूख बहुत ही सताए, तो कबूतर या बटेर शोरवा दिया जा सकता है।

दूसरे अर्धांग व अर्दित के रोगी को अन्धकारपूर्ण कमरे में रखना चाहिए। क्योंकि हवा और प्रकाश दोनों ही रोगी के लिए अत्यधिक हानिकारक हैं।

तीसरा यह कि अर्धांग व अर्दित में ४० दिन तक किसी प्रकार की नस्य नहीं चाहिए।

द्वितीय योग

आक के दूध को चीनी अथवा कांच के पात्र में डाल कर उसमें समभाग कुक्कुट (मुर्गे) का रक्त उसमें मिलादें, तथा रोगी के शरीर पर उसकी मालिश किया करें। विशे-षातिविशेष लाभकारी योग्य है।

अन्तिम योग

शुद्ध मधु, अदरक का रस, प्याज का अर्क। प्रत्येक १-१ सेर बोतल में डालें और चतुर्थ भाग खाली रखें फिर मुंह बन्द करके ३ दिन रखा रहने दें। तदुपरांत भली प्रकार बोतल को हिला कर ३ माशा अर्क की मात्रा से पीना शुरू करें तथा धीरे २ मात्रा बढ़ाते जाएं। ईश्वर की कृपा से कुछ ही दिनों में पूर्णतया लाभ हो जायगा।

अपस्मार (मृगी)

यह रोग बड़ा ही भयंकर है, और एक बार जिस रोगी को लग जाता है तो दूर करना कठिन हो जाता है। इस रोग में दौरा पड़ता है और दौरे के समय रोगी मूर्च्छित होकर वहीं गिर जाता है, चाहे वह घर में हो अथवा सड़क पर। मुंह से झाग निकलने लगती है। प्रायः इस रोग के लिये सन्यासियों के चुटकले अत्यधिक सफल सिद्ध होते हैं। हमने अपनी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में अपस्मार के लिये अत्युत्तम प्रयोग बड़े परिश्रम से प्राप्त करके पाठकों को भेंट किये हैं। आशा है आप लोग उनसे पूर्ण लाभ उठाएंगे। कुछेक सुगम योग इस पुस्तक में भी लिखे जाते हैं। जो कि कई रोगियों को लाभ पहुंचा चुके हैं।

अति प्रभावक नस्य

ढाक की जड़ को पानी के साथ घिस कर दौरे के समय मृगी के रोगी की नाक में टपकावें, ईश्वर कृपा से दौरा तुरन्त रुक जाता है। अनेक बार परीक्षा करने के बाद प्रकट किया गया है, अस्तु निश्चय ही सफल सिद्ध होगा।

तदनुसार

कड़वी तोरी के रस की कुछ बूंदें दौरे के समय नाक में टपकावें, तत्काल दौरा दूर हो जाता है। इस प्रयोग की प्रशंसा हमारे एक परिचित वैद्य जी करते थे, इस साधारण वस्तु के गुणों की समता उत्तमोत्तम विलायती औषधियां भी नहीं कर सकीं। अपितु मेरे विचार से तो अपस्मार के

लिये इससे उत्तम और सरल औषधि है ही नहीं पाठक गण जब चाहें कैसे ही रोगी पर परीक्षा कर देखें, निश्चय ही सफलता मिलेगी।

पन्सारी की दवा

हमारे यहां एक पंसारी था, जो कि मृगी का दौरा तत्काल दूर कर देने के लिये गांव भर में प्रसिद्ध था। जहां किसी रोगी को दौरा हुआ कि उसके घर वाले दौड़े हुए पन्सारी की दुकान पर गये। पन्सारी जी ने एक चूर्ण सा पुड़िया में बांध कर दे दिया। जिसे रोगी को सुंघाते ही सुंघाते दौरा शान्त हो जाता था। मैंने केवल यह जानने के लिए ही पन्सारी जी से मित्रता बढ़ाई और अन्त में उन्होंने इस प्रकार यह रहस्य प्रकट किया—अरे भाई मैं कोई डाक्टर वैद्य थोड़े ही हूं। मैंने तो यह प्रयोग 'देहाती एकौषधि चिकित्सा नामक एक पुस्तक में पढ़ा था। एक बार मेरे मन में आया कि लाओ इसकी परीक्षा करूं। अकस्मात् एक दिन अपस्मार का एक रोगी मुसाफिर मेरी दुकान के सामने ही दौरे से मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। बस मैंने उचित अवसर समझ कर दुकान में से ही दवा निकाल कर बनाई और रोगी को सुंघा दी। सुंघाते-सुंघाते रोगी उठ खड़ा हुआ। बस भाई ईश्वर की ऐसी कृपा कि गांव भर में नाम हो गया। और जब भी जिस रोगी को भी मैंने यह दवा दी, उसे उसी समय लाभ हो गया। यह रहस्यमय कथा सुनकर मैं भी दंग हो गया। वही योग उस पुस्तक के पाठकों को भी भेंट किया जा

रहा है, यद्यपि वह 'देहातो औषधि चिकित्सा' में भी लिखा हुआ है।

प्रयोग इस प्रकार है—

रीठा की छाल को अति सूक्ष्म पीस कर कपड़े से छान कर रखलें, और जब भी किसी रोगी को दौरा पड़े तनिक सी औषधि उसे सुंघा दें। ईश्वर कृपा से रोगी स्वस्थ होकर उठ खड़ा होगा।

तदनुसार

एक और भी इसी प्रकार का अति सरल व प्रभावक प्रयोग यह है :—

इन्द्रायण का गूदा छाया में सुखाकर सूक्ष्म पीस कर रखें, और आवश्यकता के समय रोगी को सुंघावें। इधर नस्य नाक के अन्दर गई और उधर रोगी ने तत्काल आखें खोल दीं। ईश्वर कृपा से रोगी के ठीक होने में मिनट भी नहीं लगते।

आक का चमत्कार

आक की जड़ की छाल को बकरी के दूध में पीस कर अफस्मार के दौरे में रोगी की नासिका के छेदों में दो दो बूंद टपका दें। उसी समय रोगी चैतन्य होकर बैठ जायेगा।

अंतिम प्रयोग

यदि किसी कारणवश उपरोक्त प्रयोगों में से एक भी सफल न हो, तो यह नस्य अपस्मार के लिये अन्तिम महौषधि है।

धतूरा के बीज, केशर और मिश्री तीनों द्रव्यों को सम-परिमाण में लेकर बारीक पीसलें और दौरे के समय रोगी को नस्यवत् प्रयोग करायें। इससे न केवल अपस्मार का दौरा ही रुक जाता है अपितु कुछेक बार के प्रयोग से आजन्म के लिए यह दौरा ही दूर हो जाता है। एक अनुभवी वैद्य ने इसी नस्य द्वारा चार रोगियों को नितान्त रोगमुक्त ही कर दिया जो कि कई वर्षों से इसके चंगुल में फंसे हुए थे।

युवावस्था में ही बाल श्वेत हो जाना

यह एक ऐसा रोग है, जो कि युवकों के साहस तथा सौन्दर्य दोनों को नष्ट कर देता है। आज हजारों युवक इसी रोग के कारण वृद्धों के समान दिखाई पड़ते हैं। यह रोग प्रायः पैतृक ही हुआ करता है किन्तु कई बार प्रति-श्याय विगड़ जाने, हानिकार वस्तुओं के सेवन करने, बहु-मैथुन, चिन्ताधिक्य व मानसिक दुर्बलता आदि कारणों से भी समय से पूर्व ही बाल श्वेत हो जाते हैं। अधिकतर धीरे २ कुछ वर्षों में बाल सफेद होते हैं, किन्तु कुछ उदाहरण ऐसे भी प्राप्त हुए हैं कि केवल एक मास, सप्ताह वरन् एक ही रात में बाल श्वेत हो गये।

प्राचीन काल में हमारे पूर्वज केशों का श्वेत होना मृत्यु का सन्देश मानते थे, किन्तु आजकल हम लोग अनियमित जीवन बिता रहे हैं, इस कारण पूर्ण यौवनावस्था में ही बाल श्वेत हो जाते हैं. निस्सन्देह ही यह हमारे यौवन का कलंक है।

अब हम इस रोग को मिटाने वाले अर्थात् श्वेत बालों को पुनः काले और सुन्दर बनाने वाले अति सरल और सस्ते प्रयोग अंकित करते हैं, जिनसे ईश्वरानुकम्पागत आप

आप अपना खोया हुआ सौन्दर्य पुनः प्राप्त करेंगे। किन्तु यह ध्यान रहे, कि इस रोग में पथ्य बड़ा ही आवश्यक है यदि आप पथ्य सहित निम्न प्रयोग व्यवहार में लाएंगे, तो पूर्ण लाभ होगा। बालों की श्यामता को पुनः प्राप्त करके चिरकाल तक स्थिर रखने के लिए निम्न पदार्थों का सेवन यथासम्भव कम करें। विशेषकर वे लोग, जो कि प्रायः ही नजला जुकाम से पीड़ित रहते हैं।

दही, छाछ, दूध, अचार तथा खट्टी वस्तुएं। इनके अतिरिक्त मैथुनाधिक्य भी एक ऐसा रोग है, जिससे मनुष्य कुछ ही वर्षों में वृद्ध-तुल्य हो जाता है। अतः मैथुनाधिक्य से सदैव बचकर रहना चाहिए। विविध प्रयोग भेंट किए जाते हैं।

पृथक केश तेल

इन्द्रायण के बीज आवश्यकातानुसार लेकर उनको सात बार हरे आंवलों के स्वरस की भावना दें, फिर यंत्र द्वारा अथवा कोल्हू द्वारा तेल निकलवा लें, और शीशी में सुरक्षित रखें। तथा प्रातःकाल २-३ बूंद नस्यवत् सुंघाया करें। यह तेल बालों को श्वेत होने से रोकता है और श्वेत हुए बालों को पुनः काला बना देता है। नजला व जुकाम के लिए भी अत्यधिक लाभकारी है।

श्वेत बालों को पुनः श्याम करने वाला सर्वोत्तम अर्क

कीकर की फलियां ४ सेर, उस समय लें जब कि उनमें भली भांति रस पड़ चुका हो, किन्तु उनके बीज अभी कड़े न हुए हों। इन फलियों को मटके में डालकर

२० सेर पानी व आधा सेर लौह चूर्ण डाल दें। पूरे २० दिन तक धूप में रखा रहने दें। किन्तु हर तीसरे दिन कीकर की लकड़ी से हिला दिया करें, २१ वें दिन ऊपर से पानी निथार कर बोतलों में डाल रखें। बस यही अक्सीरी अर्क है।

नित्य प्रातःकाल इस अर्क में से १॥ छटांक से ३ छटांक तक वलावल अनुसार सेवन करें, चाहे सारे ही बाल क्यों न श्वेत हो चुके हों, कुछ ही दिनों के सेवन से पुनः काले हो जायेंगे। इसके अतिरिक्त यह अर्क यकृत की निर्बलता, प्रमेह व शीघ्रपतन आदि के लिए भी अक्सीर है।

बालों के लिये सर्वाधिक हितकर नीम का तेल

प्रथम विधि—आवश्यकतानुसार सूखी निम्बोलियां एकत्र करलें और उनकी गिरी निकाल कर किसी होशियार तेली को दे दें। वह स्वयं कोल्हू में डालकर तेल निकाल देगा। इस तेल के सेवन से श्वेत बाल अतिशीघ्र काले हो जाते हैं और उनकी श्यामता चिरकाल तक स्थिर रहती है।

द्वितीय विधि—प्रथम विधि उसी दशा में उपयोगी है, जब कि आपको व्यापार करने की इच्छा हो, अन्यथा एक दो शीशी तेल के लिये किसी वैद्य के पास जाकर यह रोगन निकलवा लें। कुछ अन्य विधियां 'नीम के गुण तथा उपयोग' नामक पुस्तक में भी वर्णित हैं। बहरहाल; जिस प्रकार आपको सुविधा हो, तेल प्राप्त करलें। अत्युपयोगी तेल है।

सिर धोने की सर्वोत्तम विधि

यदि निम्न वर्णित विधि से तैयार करके हर तीसरे दिन सिर धोते रहें, और ऊपर से कच्ची घानी का तेल लगा लिया करें, निस्सन्देह केशों की श्यामता दिन प्रति दिन बढ़ती ही रहे, और चिरकाल तक उनका सौन्दर्य स्थिर रहे ।

विधि इस प्रकार है—

आमले कूटकर रात को मिट्टी के बर्तन में भिगो दें, और प्रातःकाल निथार कर उसी पानी से सिर धो लिया करें। तत्पश्चात् कच्ची घानी का सरसों का तेल बालों में लगाया करें। ईश्वर कृपा से कभो बाल सफेद न होंगे।

अपूर्व चमत्कारी प्रयोग

(जिससे बाल काले होने के साथ ही बाजीकरणशक्ति भी बढ़ जाती है।)

सचमुच ही यह प्रयोग बड़ा चमत्कारी सिद्ध हुआ है। इसके कुछ ही दिनों के सेवन से श्वेत बाल पुनः काले हो जाते हैं, साथ ही बाजीकरण-शक्ति भी अपूर्व रूप से बढ़ जाती है और विशेषता यह है कि यह अति साधारण और सर्वत्र प्राप्य वस्तु है, जिसमें न कोई अन्य वस्तु मिलाने की आवश्यकता है और न घोट कर बनाने का ही परिश्रम। एकमात्र अकेली ही वस्तु में ऐसे गुण भरे देखकर उस प्रभु की महिमा पर हृदय बलिहार हो जाता है। जो सज्जन इसे प्रयोग करेंगे वे ही इसका अनुपम और मुग्धकारी प्रभाव जानेंगे।

प्रयोग इस प्रकार है—

छिलकों रहित करके साफ की हुई मालकंगिनी की गिरी इच्छानुसार लेकर एक बोतल में बन्द करके सुदृढ़ कार्क लगा कर रखें। तथा प्रथम दिवस तीन दाने साबुत ही पानी के घूंट के साथ निगल जावें, इसी प्रकार दूसरे दिन चार दाने, तीसरे दिन पांच दाने और १-१ प्रतिदिन बढ़ाते-बढ़ाते तेरह दाने तक पहुंचा दें। फिर नित्य ही तेरह दाने सेवन करते रहें। इस प्रकार निरन्तर एक वर्ष तक सेवन करने से लाभ आपको स्वयं ही विदित हो जायेगा, अद्भुत चमत्कारी वस्तु है।

विशेष आदेश

किन्तु औषधि के साथ पथ्य रखना परम आवश्यक है। गेहूं या बेसनी रोटी, मूंग, मोठ अथवा चने की दाल तथा मेथी का शाक सेवन करें। घी प्रत्येक वस्तु में खूब मिलाना चाहिये। मांसाहारी व्यक्ति तीतर, बटेर और मुर्गा का माँस खा सकते हैं। मिठाई खाने की तीव्र इच्छा हो तो जलेबी या खांड का अधिक घी वाला हलुवा भी खा सकते हैं। इसके अतिरिक्त मैथुन बिल्कुल न करना चाहिये अन्यथा सारा परिश्रम निकल जाएगा। जो चाहें लाभ उठा सकते हैं।

एक सुलभ बूटी का चमत्कार

यह बात सर्व सम्मत मानी जा चुकी है कि कुछ बूटियां यथार्थतः अक्सीर के समान हैं उनमें छिपे हुए गुणों को वही लोग भली प्रकार समझ सकते हैं जो कि यथा समय प्रयोग करते हैं। 'देहाती बूटियां' नामक पुस्तक

में आपने ऐसी ही अनेक बूटियों के गुण पढ़े होंगे और उन्हें यदि कभी अनुभव किया होगा तो उनके चमत्कारमय प्रभाव को भी आप भली भांति समझ गये होंगे। यहां भी हम आपको एक ऐसी ही बूटी का प्रयोग भेंट करते हैं जो कि अन्यान्य गुणों के अतिरिक्त श्वेत बालों को काला बनाने और उनकी श्यामता को स्थायी रखने में अक्सीर है।

प्रयोग

मुण्डी बूटी के फूल जब पक जायं तो छाया में सुखा कर शीशी में रख लें और तीन माशा मात्रा प्रतिदिन पानी के साथ सेवन करें। निरन्तर ६ मास के सेवनोपरांत आयु भर बाल श्वेत न होंगे और दृष्टि तथा यौवन की रक्षा करेगी। किन्तु घी अधिक खाते रहें।

सर्वोत्तम केश-रक्षक औषधि

आवश्यकतानुसार आमले लेकर किसी चीनी के पात्र में डालें और ऊपर से भंगरा बूटी का रस इतना डालें कि आमले उसमें डूब जायें। इसी प्रकार सात भावना दें और फिर सूखने पर अति सूक्ष्म पीसकर शीशी में रखलें। तथा ३ माशा चूर्ण प्रतिदिन ताजा जल से सेवन करते रहें। कुछ ही दिनों में नितान्त श्वेत बाल भी काले हो जायेंगे, और फिर आयुपर्यन्त श्वेत न होंगे।

विशेष सूचना

अब हम मस्तिष्क-रोगों का प्रकरण समाप्त करते हैं, किन्तु इसके साथ ही हम अपने प्रिय पाठकों से कल्या-

णार्थ यह निवेदन करना आवश्यक समझते हैं कि मस्तिष्क सम्बन्धी कठिन से कठिन रोगों को एक दो दिन में ही उड़ा देने वाले वह गुप्त संन्यासी प्रयोग जिन्हें प्राप्त करने के लिये हर वैद्य तथा हकीम हर समय लालायित रहता है, और जिनके चमत्कार को आप भी अनेक बार देख या सुन चुके होंगे, हमने बड़े परिश्रम के साथ खोज २ कर 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में संग्रहीत करके लिख दिये हैं। सब के सब वही प्रयोग हैं, जोकि यथा अवसर बड़े २ बड़े महान् सन्यासियों ने कतिपय भाग्यवानों को प्रदान कर दिये थे। अतः उस पुस्तक का पास होना हर वैद्य, हकीम तथा साधारण व्यक्ति के लिए परम आवश्यक है।

———

नेत्र-रोग

नेत्र-सम्बन्धी समस्त रोगों का विस्तृत वर्णन इस छोटी सी पुस्तक में लिखने की कल्पना गागर में सागर भरने के समान असम्भव प्रतीत होती है, किन्तु अधिकांश बहु प्रचलित नेत्र-रोगों के सरलाति-सरल उपचार लिखने का प्रयास अवश्य कर रहा हूं। हां जो सज्जन पूरे चिकित्सक ही बनना चाहें, वे 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' पुस्तक से लाभ उठावें। क्योंकि उसमें नेत्रों के प्रमुख रोगों के लक्षण, कारण व उत्तमोत्तम योग पूर्णतया समझा कर लिखे गये हैं। इस पुस्तक में हम केवल संक्षिप्त विवरण देते हुए योग-मात्र आपको भेंट कर रहे हैं।

उससे पूर्व

—हम आपको नेत्रों के लिए कुछ विशेष हानिकर आदतों व नेत्रों के लिये हितकर उपायों से परिचित करा देना चाहते हैं, और हितकर उपायों पर नियमित रूप से आचरण करेंगे तो ईश्वर की कृपा से समस्त नेत्र रोगों से स्वत: सुरक्षित रह सकेंगे।

हानिकर आदतें

१—धीमे प्रकाश में पुस्तकों का अध्ययन करने से आंखों पर अधिक जोर पड़ता है, और दृष्टि क्षीण हो जाती है, अत: इस हानिकार आदत से बचना चाहिये।

२—हर समय पुस्तकों या समाचार-पत्रों को ही पढ़ते रहना नेत्रों के लिये बड़ा हानिकारक होता है।

३—दिन में सोना और रात में जागते रहना नेत्रों को स्वयं खराब करने की एकमात्र विधि है।

४—सिनेमा थियेटर अधिक देखने से नेत्रों की शक्ति नष्ट हो जाती है।

५—प्रात:काल देर से जागना और नेत्रों को भी भली प्रकार न धोना नेत्र-रोगों को निमन्त्रण देना है।

६—केवल सौन्दर्य के लिये बिना टैस्ट कराये ऐनक लगाना दृष्टि के लिये अहितकर है।

७—धूम्रपान की अधिकता से भी आंखें खराब होती हैं।

८-मस्तिष्क दुर्बलता की चिकित्सा में उपेक्षा करने से आंखों को सबसे प्रथम हानि पहुंचती है।

९—बहु मैथुन, हस्त मैथुन आदि तो नेत्रों के शत्रु हैं।

१०—लहसुन, प्याज, बासी मांस आदि का भक्षणाधिक्य तथा भोजनोपरान्त तुरन्त सो जाना भी नेत्रों के लिए विशेष हानिकर सिद्ध होता है।

हितकर उपाय

प्रत्यक्षतः ये उपाय अति साधारण से हैं किन्तु यदि इन पर आचरण किया जाय, तो नेत्र रोगों के लिए अत्युपयोगी सिद्ध होते हैं।

पूर्वोक्त हानिकर आदतों से बचना अत्यावश्यक है इससे आयुपर्यन्त नेत्र सुरक्षित रहते हैं।

२—नित्य प्रातः शौचादि से निवृत्त होने के उपरान्त दातुन करना, दातुन से जीभ व कण्ठादि भली प्रकार स्वच्छ करना न केवल दांतों की रक्षा करता है अपितु दृष्टि के लिए भी परम लाभकारी है।

३—प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व बाग-बगीचे अथवा हरे-भरे खेतों की सैर करना, नेत्रों के लिए विशेष हितकर होता है।

४—निर्मल जल से युक्त जलाशय में डुबकी लगाकर नेत्रों को खोल देना बहुत से रोगों से रक्षा करता है, विशेष-कर कुकरे रोग से बचने का एकमात्र सरल उपाय है।

५—भोजन कर चुकने के उपरान्त हाथ धोकर मुख पर फेरना दृष्टि को तीव्र करता है।

चिकित्सकों का मत है कि उपरोक्त नियमों का पालन करने वाले व्यक्ति की दृष्टि वृद्धावस्था में भी क्षीण नहीं हो सकती।

नेत्र पीड़ा

आम बोल-चाल में हम लोग इसे आंख दुखना कहते हैं। नेत्रों के लिए यह रोग बड़ा कष्टप्रद होता है। लीजिए हम आपको नेत्र-पीड़ा के ऐसे २ सुगम प्रयोग भेंट करते हैं, जिनसे आप स्वयं इस रोग से मुक्त हो सकते हैं। किसी डाक्टर के पास जाने की कोई आवश्यकता न पड़ेगी। सभी प्रयोग एक से एक बढ़कर हैं।

नेत्र रक्षक पुष्प

जिन लोगों के नेत्र प्रायः साल अथवा छः मास उपरान्त दुखते रहते हैं, अथवा जो लोग चाहें कि वे नेत्र-पीड़ा से सुरक्षित रहें, उनके लिए यह प्रयोग अमूल्य भेंट है।

इच्छानुसार मुंडी बूटी के पुष्प ले लें और उन्हें बिना पानी की सहायता के निगल जायं। यदि आप एक फूल निगल लेंगे, तो एक वर्ष तक आपकी आंखें न दुखेंगी और यदि दो फूल निगल लेंगे, तो दो वर्ष तक। इसी प्रकार जितने फूल निगल लेंगे, उतने ही वर्ष तक नेत्र-पीड़ा से सुरक्षित रहेंगे। अद्भुत चमत्कारी प्रयोग है, परीक्षा कर देखें।

नेत्र-लालिमा-हर वटी

ये गोलियां न केवल नेत्र-पीड़ा व नेत्र-लालिमा के लिए हैं अपितु कुकरे व नेत्र-स्रावक के लिए भी अक्सीर हैं, और एक भी पैसा व्यय किए बिना तैयार हो जाती हैं। देहाती फार्मेसी में यही गोलियां नेत्र रोगियों को धर्मार्थ बांटी जाती हैं।

प्रयोग इस प्रकार है—

हरे आंवलों का रस निकाल कर कलई की हुई देगची में डालें और मन्द २ आंच पर पका कर गाढ़ा करलें। जब खूब गाढ़ा हो जाय, तो उतार कर ठंडा करलें और लम्बी २ गोलियां बनालें। आवश्यकता के समय गोली का एक सिरा पानी में भिगोकर आंख में लगावें, या गोली घिस कर सलाई से आंख में डालें, एक दो बार के लगाने से ही आराम हो जायगा।

अति सरल प्रयोग

नीम के कुछ पत्तों को पानी के छीटें देकर कुचलें और निचोड़ कर रस निकालें तथा पीड़ित आंख के दूसरी ओर वाले कान में थोड़ा सा रस गुनागुना करके डालें। कुछेक बार डालने से ही पूर्ण आराम हो जायेगा।

बिना पैसे की दवा

यह प्रयोग दुखती आंखों के लिए अचूक और शत-शोनुभूत है, आवश्यकता के समय परीक्षा करके तत्काल लाभ उठावें और शुभाशीष प्रदान करें।

जिस आंख में पीड़ा हो, उसके विपरीत वाले के अंगूठे के नाखून पर आक के दूध का लेप करदें। यदि दोनों आखों में पीड़ा हो, तो दोनों अंगूठों पर लेप कर दें। लेप को रात भर रखें और प्रातःकाल पानी से धोकर साफ करदें। चाहे किसी कारण से भी आंखें क्यों न दुखीं हों, अचूक इलाज है।

नेत्र-पीड़ा-हर लेप

लोहे के खरल में नींबू का रस डाल कर बिना कोई अन्य वस्तु मिलाए खरल करते रहें । जब खरल करते २ गाढ़ा सा हो जाय, तो सुरक्षित रख छोड़ें और आवश्यकता पड़ने पर आंखों पर इसका लेप करें। पीड़ा, जलन तथा लालिमा आदि शीघ्र ही दूर हो जाती है ।

अति सुगम चुटकले

प्रथम

जिस दिन आंख में पीड़ा हो, उसी दिन थोड़ा सा बड़ का दूध पीड़ित आंख में सलाई से डाल दें, उसी दिन पीड़ा शान्त हो जायेगी, और आंखें न दुखेंगी ।

द्वितीय

सत्यानाशी की शाखा तोड़ने से जो पीला दूध निकलता है, उसे सलाई से आंखों में डालें, नेत्र-पीड़ा से चिल्लाता हुआ रोगी तुरन्त आराम प्राप्त करता है, मेरा अपना अनुभूत प्रयोग है ।

तृतीय

रुई को हवन दस्त में भली-भांति कूट कर आंख पर बांध दें । यदि ईश्वर की कृपा हुई, तो ५ मिनट के अन्दर-अन्दर आराम हो जायेगा ।

चतुर्थ

यदि नेत्र-पीड़ा कफजनित कारण से हो, तो रात के समय रोगी को खांड तथा काली मिर्च बारीक की हुई फंका

दें किन्तु ऊपर से जल नहीं पिलाना चाहिए । प्रातः आंख साफ हो जायगी ।

फोला व जाला

इस रोग से हर व्यक्ति भली भांति परिचित है, स्थानाभाव के कारण हम यहां विशेष विवरण न लिखकर इसके लिए उत्तमोत्तम प्रयोग भेंट करते हैं, जिनसे आवश्यकता के समय आपको परम लाभ होगा । रोग के लक्षण, कारण व निदान आदि विशेष विवरण के लिये 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' देखें ।

फोले की अद्भुत औषधि

पुरानी रुई को तीन बार आक के दूध में भिगो-भिगोकर सुखा लें, फिर गाय के घी में तर करके एक बड़ी सीपी में रखकर भस्म करलें, किन्तु ध्यान रहे, जलकर भस्म काली रहे श्वेत न हो जाय । उस काली भस्म को पीस कर शीशी में डालकर रखें, तथा रात के समय इसकी १-१ सलाई आंखों में डाला करें । ईश्वर कृपा से २-३ दिन के प्रयोग से ही फोला व जाला नितान्त कट जाएगा । इस प्रयोग की बड़े २ हकीमों तथा वैद्यों ने भी मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है । परम लाभकारी सिद्ध होता है ।

फोला व जाला की अक्सीर

आक के सम्पूर्ण अंग (फूल, फल, पत्ते, टहनी, जड़) लेकर सुखालें । और जलाकर राख बनालें । इस राख को मिट्टी के खुले बर्तन में अठगुना पानी डालकर भिगोदें और प्रतिदिन कम से कम तीन बार लकड़ी से चला दिया

करें । चार दिवस उपरान्त ऊपर से पानी निथार कर उतार लें और इस निथरे हुए पानी को कड़ाही में डालकर पकावें । पकते २ जब सारा पानी जल जायगा, तो नीचे श्वेत वर्ण का क्षार शेष रह जाएगा । बस यही अक्सीरी दवा है । इसे अति सूक्ष्म पीसकर रखें और १-१ सलाई आंखों में लगाया करें । फोला व जाला तथा नेत्र श्वेतता के लिये अद्भुत औषधि है । केवल ४-५ दिन लगाने से ही दुस्साध्य से दुस्साध्य फोला भी कट जाता है ।

द्वितीय अक्सीर

४ तोला रीठे का छिलका, एक कांसी के कटोरे में पैसा लगे नीम के डण्डे से नींबू के रस के साथ घोटें, यहां तक कि १ सेर नींबू रस शोषण हो जाय । जब गोलियां बनाने योग्य हो जायं, तो लम्बी २ गोलियां बनाकर छाया में सुखालें और सम्भाल कर रखें, तथा आवश्यकता पड़ने पर पानी में घिस कर नेत्रों में प्रातः सायं डाला करें । ईश्वर कृपा से कुछ दिन में ही फोला कट जाता है ।

आवश्यक सूचना

ये गोलियां 'देहाती फार्मेसी' में अधिक मिलती हैं, जो सज्जन चाहें बनी बनाई इस पते से मंगालें । दाम उचित हो लिये जाते हैं ।

पता :—

देहाती फार्मेसी

मु० पोस्ट कासन,

जिला गुड़गावां (हरियाणा)

सर्वोत्तम नेत्र-रसायन

(यह औषधि धुन्ध, जाला व फोले पर अक्सीर है)

लोहे के उत्तम खरल में एक हरे रंग की चूड़ी डालकर नींबू के रस में खरल करें, यहां तक कि घोंटते-घोंटते लगभग २१ नींबुओं का रस उसमें सुखादें। बस चमत्कारी औषधि तैयार हो गई। रात के समय १-१ सलाई डाला करें ईश्वर कृपा से पुराना और बड़े से बड़ा फोला भी कट जायेगा और दृष्टि निर्मल हो जायगी।

सूचना—औषधि जितनी ही बारीक पीसेंगे, उतनी ही अधिक लाभप्रद होगी। कम पिसने पर हानि हो सकती है।

नेत्र रसायन बूटी

स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी) बूटी का रस १ तोला और २१ वार पानी में धुला हुआ मक्खन १ तोला दोनों को कांसी की थाली में डालकर नीम के डंडे से कम से कम १० घण्टे तक भली भांति घोटें और फिर सुरक्षित रखलें। आवश्यकता के समय १ या दो सलाई प्रतिदिन आंख में डाला करें, धुन्ध, जाला, नेत्र-स्राव आदि के लिए अत्यधिक लाभप्रद है।

फोला व जाला के लिए सुगम चुटकुले

१—बारहसींगे का सींग स्त्री के दूध में घिसकर आंखों में लगाया करें। इससे २० वर्ष पुराना फोला भी कट जाता है।

२—रीठे के छिलके को पानी के साथ घिस कर सलाई से आंख में लगावें, इससे भी फोला दूर हो जाता है।

३—केवल नौशादर को अति सूक्ष्म पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें और १—१ सलाई आंखों में डाला करें।

४—समुद्र भाग को पानी में घिसकर आंखों में डालते रहें, जाला, बिन्दु, श्वेतता आदि के लिये परम लाभकारी सिद्ध होता है।

मोतियाबिन्दु

यह बड़ा ही भयंकर रोग है। प्रायः इससे लाखों व्यक्ति दृष्टि जैसी अनमोल निधि से वंचित हो जाते हैं। यदि रोग के प्रारम्भ में ही इसका उपाय कर लिया जाय तो उतरता हुआ पानी सरलता के साथ रोका जा सकता है, किन्तु पूरा उतर आने पर इसे औषधोपचार से साफ करना दुस्साध्य हो जाता है। फिर भी हमने विशेष परिश्रम द्वारा कुछ ऐसे अक्सीरी प्रयोग संग्रह किये हैं जोकि उतरते हुए तथा उतरे हुए दोनों प्रकार के मोतियाबिन्दु को साफ कर देते हैं। वही प्रशंसित प्रयोग पाठकों को भेंट किए जा रहे हैं। आज इन प्रयोगों की सारे देश में धूम मची हुई है, क्योंकि जिस मोतियाबिन्दु को डाक्टर तक असाध्य बना चुके थे, इन प्रयोगों से उन रोगियों की दृष्टि निर्मल हो गई है।

मोतियाबिन्दु का शर्तिया इलाज

प्याज का पानी १ भाग, शहद १ भाग, भीमसेनी कपूर १। भाग मिलाकर रात को २-२ सलाई नेत्रों में लगावें। इससे उतरता हुआ मोतिया शीघ्र ही रुक जाता है, प्रत्युत उतरा हुआ भी साफ हो जाता है। यदि भीमसेनी कपूर न मिल सके, तो शहद और प्याज के पानी से ही

काम चलावें। मोतियाबिन्दु का शर्तिया इलाज है। हमारे एक मित्र वैद्य इसी प्रकार के द्वारा मोतियाबिन्दु को चिकित्सा गारन्टी के साथ करते हैं, और अपार धन तथा यश प्राप्त कर रहे हैं। आवश्यकता के समय परीक्षा करके ही इस प्रयोग की महानता समझ सकेंगे।

चमत्कारी नेत्रांजन

४ तोला गाय के मक्खन में दो कागजी नींबू का रस मिलाकर खूब घोटें। जब दोनों वस्तुयें भली प्रकार सम्मिलित हो जायं, तो उसमें पानी डालकर रख दें। इसी प्रकार २५ बार धो कर किसी चीनी की डिबिया में बन्द करके रखें। रात के समय इसमें से थोड़ा सा लेकर आंख में लगाया करें। ईश्वर कृपा से मोतियाबिन्दु का उतरता हुआ पानी वहीं रुक जाता है। बड़ा ही चमत्कारी अंजन है। परीक्षा करके लाभ उठावें।

एक और सरल योग

काले सिरस के बीज २ तोला लेकर खूब बारीक करलें और खरल में डालकर नींबू के रस में खूब घोटें, यहां तक कि घोटते घोटते दस नींबुओं का रस उसमें सुखादें। बस दवा तैयार है। आवश्यकता के समय सलाई द्वारा प्रतिदिन रात को सोते वक्त आंख में लगाया करें। मोतिया वहीं रुक जायगा।

प्रारम्भिक मोतियाबिन्दु के लिए अत्युपयोगी खाद्य योग

इस औषधि ने एक काले मोतियाबिन्दु के रोगी को

भी ईश्वर की कृपा से पूर्ण लाभ हो चुका है। आयुर्वेदिक चिकित्सा का यह दर्प्य योग है। मेरे परम मित्र वीरेन्द्र कुमार जैन (प्रोप्राइटर जनरल फार्मेसी इटावा) ने एक बार मुझे बताया था कि उनके यहां कुछ वर्ष पूर्व मोतियाबिन्दु से नितान्त अन्धा एक रोगी आया जिसे डाक्टरों ने असाध्य कह कर निराश कर दिया था। मैंने यह खाद्य योग सेवन करने के लिए बताया तथा साथ में वह योग आंख में डालने के लिए दिया, जोकि इस पुस्तक में 'मोतियाबिन्दु का शर्तिया इलाज' के नाम से पीछे लिखा जा चुका है। ईश्वर की लीला देखिये, कि अल्पकाल में ही उस रोगी की दृष्टि लौट आई। वही परम गुणकारी खाद्य योग इस पुस्तक के पाठकों को भी भेंट किया जा रहा है, लाभ उठावें।

प्रयोग इस प्रकार है—

पीली हरड़ मोटी २ लेकर दूध के बर्तन में डाल कर दो सेर पानी में डाल कर उपलों की आग पर पकावें। जब सारा पानी जल जाय, तो हरड़ों की गुठलियां निकाल लें और खूब कूटलें तथा उसमें १ सेर विशुद्ध देशी खांड मिला कर फिर आध सेर शुद्ध मधु भी मिला दें। फिर किसी चीनी या मिट्टी के बर्तन में डाल कर मुंह बन्द करके अन्नागार में दबा दें और प्रतिदिन रात को सोने से पहले २॥ तोला, दूध के साथ खिलाया करें। यद्यपि स्वाद में कटु है, किन्तु इसके गुण अत्यन्त मधुर हैं। मोतिया के लिए रामबाण है।

फकीरी सुरमा

१ तो० तूतिया हरा लेकर स्त्री के दूध में खरल करते

रहें, यहां तक कि पाव भर दूध प्रविष्ट हो जाय। बस अनुपम सुरमा तैयार है। यह सुरमा धुन्ध, जाला, रतौंधा, कुकरे, तथा मोतियाबिन्दु के लिये अक्सीर है, जोकि शत-प्रतिशत सफल सिद्ध होता है।

पड़वाल

विशेष-विवरण 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में देखने का कष्ट करें। यहां कुछ उत्तम व सरल प्रयोग सेवार्पित हैं, लाभ उठाकर शुभाशीष दें।

प्रथम सरल प्रयोग

एक स्वच्छ बोतल में ओस का जल इकट्ठा करके उससे आधी दीमक डाल दें और बोतल को दृढ़ कार्क लगा कर एक सप्ताह तक धूप में लटकाये रखें। अनुमानतः सारी दीमक भी पानी बन जायगी। फिर उसे कपड़े से छान कर सुरक्षित रखें। अब एक गधे का सुम लेकर आग में कोयला कर लें और इस कोयले में से २ तोला लेकर खरल में डाल कर पूर्वोक्त जल मिलाकर महीन पीसते रहें जब चार गुना जल सूख जावे, तो तैयार समझें। रात के समय दो-दो या तीन-तीन सलाई लगाया करें अथवा चुटकी से पपोटे उलट कर लगाएं। किन्तु पहिले बाल उखाड़ लेना आवश्यक है। आशा है कि तीन बार के प्रयोग से ही पूर्ण लाभ हो जायेगा।

द्वितीय पड़वाल नाशक योग

नीम के पत्तों को कुचल कर रस निकाल लें और इसमें रुई की एक मोटी सी बत्ती तर करके सुखालें तथा दीपक

में पावभर मीठा तेल भर कर यह बत्ती उसमें जलावें और उसके ऊपर मिट्टी या चीनी की प्याली औंधी लटका कर काजल प्राप्त करें । फिर इसमें मक्खन मिलाकर कांसी के कटोरे से ही खरल करें । जब भली प्रकार खरल हो चुके तो इसे जस्त की डिबिया में भर कर सुरक्षित रखें ।

इसकी सेवन विधि यह है

पड़वालों को मोचने से उखाड़ कर जस्त की सलाई से आंखों में लगाया करें । जब बाल फिर दोबारा पैदा हों तो पुनः इसी प्रकार लगावें । कुछेक वार में बाल विल्कुल नष्ट हो जायेंगे । हमरे एक परिचित वैद्य जी पड़वाल के ३–४ रोगियों को इसी औषधि से ठीक कर चुके हैं ।

रतौंधा (नक्तान्ध)

इस रोग को आप सब लोग भली प्रकार जानतें होंगे, इसके रोगी को दिन में तो खूब दिखाई देता है, किन्तु रात के समय विल्कुल दिखाई नहीं देता । इसका मुख्य कारण यह होता है, कि आमाशय से दूषित भाप उठकर मस्तिष्क की ओर जाती है और इसी दोष के कारण रतौंधा रोग उत्पन्न हो जाता है । यदि यह जन्म से हो, अथवा बहुत पुराना हो, तो बड़ी कठिनता से जाता है । अतः रोग के प्रारम्भ होते ही इसकी चिकित्सा करानी चाहिए । हम आपको रतौंधा के कुछ अति सरल प्रयोग भेंट करते हैं, जिनसे आवश्यकता के समय आपको विशेष लाभ उपलब्ध होगा । पूर्ण अनुभूत योग हैं ।

नक्तान्ध नाशक अद्भुत नस्य

नकछिकनी १ माशा, बनफशा का के तेल ३ माशा नकछिकनी को अति सूक्ष्म पीस कर बनफशा के तेल में मिलालें और रोगी को नस्यवत् सुंघाएं। इस प्रयोग से रोगी को एक ही दिन में लाभ हो जाता है, और एक सप्ताह के निरन्तर प्रयोग से तो बहुत पुराना रोग भी दूर हो जाता है। रतौंधा के लिए इससे बढ़कर प्रभावक योग अन्य शायद ही मिल सके। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभान्वित हों।

शतशोऽननुभूत प्रयोग

यह प्रयोग हमारे एक मित्र वैद्य द्वारा सौ से भी अधिक रोगियों पर परीक्षित हो चुका है, और सर्वथा लाभप्रद सिद्ध हुआ है। वैद्य जी कहना है, कि एक रोगी को दस साल से रतौंधा था, ईश्वर कृपा से उसे भी केवल दो सप्ताह में इस प्रयोग से लाभ हो गया। ये बड़ा ही सरल प्रयोग है।

चौलाई एक प्रसिद्ध शाक है, जो कि प्रायः लोग खाया करते हैं। रात के समय भोजन करने के उपरान्त बिना नमक मिर्च लगाए जितना खा सकें, घी मिलाकर खाया करें। नया रोग केवल ३ दिन में ही जाता रहेगा।

एक मिनट में इलाज

जब रतौंधे का कोई रोगी आपके पास आए तो उसी समय प्याज को निचोड़ कर रस निकाल लें, और १-१ बूंद आंख में डाल दें। प्रारम्भिक रोग तो उसी क्षण दूर हो जायेगा। चमत्कारी प्रयोग है।

नीम का चमत्कार

नीम के पत्तों को लेकर किसी स्वच्छ उत्तम खरल में डालकर कूटें और उसमें पानी का छींटा देकर बराबर पीसते रहें, यहां तक कि लुगदी बन जाय । फिर इस लुगदी को कपड़े में से दबा कर पानी निकालें और रात को १-१ सलाई डाला करें। ईश्वर कृपा से रोग मिट जायेगा और एक भी पैसा व्यय न होगा।

नेत्र कण्डु

यदि नेत्रों में खुजली होती हो और पलकों के बाल झड़ने प्रारम्भ हो गये हों तो ऐसे के लिए के लिए निम्न प्रयोग बड़ा लाभप्रद सिद्ध होता हैं।

छालियां (सुपारी) को कांसी के बर्तन में गाय की छाछ की कुछ बूंदे डालकर घिसें और सलाई द्वारा नेत्रों में लगाया करें । यह आयुर्वेदिक चिकित्सा का एक दर्प्य प्रयोग है, जो कि प्रायः नेत्र-कण्डु के लिए अक्सीर सिद्ध होता है।

नेत्र-कण्डु की दूसरी अक्सीर

हरमल की शाखाओं को छाया में सुखा कर जलावें और सुरमे की भांति बारीक पीस कर रखें। तथा नित्य प्रातः सायं ३-३ सलाई आंखों में डाला करें। ईश्वर कृपा से रोग चिन्ह भी न रहेगा।

गुहांजनी

यह एक साधारण सा नेत्र रोग है, किन्तु कभी-कभी बड़ा ही कष्टप्रद होता है। लीजिए हम आपको इसके

लिए सुगमतम प्रयोग बताते हैं, जोकि बड़ी २ डाक्टरी दवाओं को भी मात देता है। साथ ही विशेषता यह है कि यह एक ऐसी साधारण वस्तु है, जो कि गांव में बहुत पाई जाती है, और गांव के अज्ञान लोग इसे व्यर्थ समझ कर फेंक देते हैं। यह वस्तु अन्यान्य रोगों को भी बहुत लाभ पहुंचाती है, जैसा कि पुस्तक में यथास्थान वर्णित है, किन्तु गुहांजनी के लिये तो ऐसी अक्सीर है, मानो प्रभु ने इसे पैदा हो गुहांजनी के नाश के लिए किया है।

गुहांजनी की अक्सीर प्रयोग इस प्रकार

इमली के बीजों की गिरी को पत्थर पर घिस कर गुहांजनी पर लेप करें। तत्काल ठण्डक पड़ जायगी और शाम तक रोग का चिह्न मात्र शेष न रह जायेगा। बड़ा ही चमत्कारी प्रयोग है।

कुकरे की सर्वोत्तम औषधि

६ माशा श्वेत कत्था अति सूक्ष्म पीस कर रखें और कुकरे के रोगी की आंख में १ रत्ती दवा डाला करें। रोगी को तत्काल आराम प्रतीत होगा और एक दो दिन में बड़े से बड़ा कुकरा भी जड़ से मिट जायेगा। यही औषधि बच्चों के लिए भी लाभकारी है। हमारे परम मित्र वैद्य जी जोकि देहाती फार्मेसी मुकाम-पोस्ट कासन, जिला गुड़गांवा में चिरकाल से इस औषधि का प्रयोग कर रहे हैं, कहते हैं कि यह दवा कुकरों के लिए कापर कास्टिक तथा जिक-लोशन आदि अंग्रेजी दवाओं से भी बाजी मार ले गयी है। ईश्वर कृपा से आज तक कुकरों का कोई रोगी हमारी फार्मेसी से निराश नहीं गया।

कर्ण तथा नासिका रोग

कान और नाक हमारे शरीर के अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग हैं। जिस प्रकार संसार की विविध सुन्दर वस्तुओं के देखने के लिये परमात्मा ने हमें नेत्र जैसी अनुपम देन प्रदान की है, इसी प्रकार स्वर ज्ञान के लिए कान और सुगन्धि और दुर्गन्धि का घ्राणशक्ति द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के लिए नाक प्रदान की है। हम ने अपनी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में अंग परिचय कराते हुए शरीर के इन समस्त प्रमुख अंगों का कार्य व महत्व विस्तार से समझाकर लिखा है, अस्तु यहां पुनः वही बातें लिखकर हम आपका समय और पुस्तक में पृष्ठ व्यर्थ नहीं गंवाना चाहते। यहां हम प्रथम कर्ण रोगों का संक्षिप्त विवरण लिखते हुए उनके उत्तमोत्तम प्राकृतिक योग अकित करते हैं। जो कि प्राकृतिक पेड़ पौधों आदि से गांव २ और घर २ में बनाये जा सकते हैं, और ईश्वर कृपा से लाभ में बड़े २ योगों से किसी कदर कम नहीं है।

कर्ण–पीड़ा

प्रायः सर्दी लगने, दांत के सड़ जाने, कान में पानी पड़ जाने, अथवा फुन्सी उत्पन्न हो जाने आदि कारणों से कर्ण पीड़ा उत्पन्न हो जाती है। यह पीड़ा बड़ी ही भयंकर और कष्टदायक होती है, इसकी टोसें माथे और चेहरे तक पहुंचती हैं, और रोगो असह्य पीड़ा के मारे छटपटाया करता है। यदि पीड़ा सरदी से होगी, तो केवल सेंक देने से ही आराम हो जाता है, किन्तु यदि अन्य कारणों से है, तो निम्न प्रयोगों से अल्पकाल में ही आराम हो जाता है। अति

सरल प्रयोग अंकित किये जाते हैं, जिन्हें आप बिना पैसे के स्वयं ही बना सकते हैं ।

कर्ण-पीड़ाहर महौषधि

यह प्रयोग हर प्रकार की कर्ण-पीड़ा के लिए रामबाण सिद्ध हो चुका है, चाहे किसी कारण से क्यों न हो । अधिकांश वैद्य इसी को बना कर सुन्दर शीशियों में भर कर रखते हैं, और रोगी से मनमाने पैसे ले लिया करते हैं । इसके कान में पहुंचते ही छटपटाते हुए रोगी को भी तत्क्षण आराम मिल जाता है, प्रभावक और उत्तम योग है । आवश्यकता के समय प्रयोग करें ।

योग इस प्रकार है—

गधे की लीद का पानी, प्याज का रस तथा गुलाब जल और सिरका बराबर २ मिलाकर शीशी में भरलें, और जब कोई कर्ण-पीड़ा से तड़पता हुआ रोगी आपके पास आए, तो २ बूंद दवा डाल दें । ईश्वर की कृपा से रोगी हंसता हुआ जायगा । यह प्रयोग कभी निष्फल नहीं जाता । शतशोनुभूत है ।

अति सुगम प्रयोग

आक के पीले पत्ते भली भांति पोंछकर घी से चुपड़ कर आग पर गरम करे । जब उष्णता के कारण सिकुड़ने लगें, तो उन्हें हथेली से मसलकर कान में रस निचोड़ दें उसी क्षण पीड़ा शान्त हो जायगी । बचपन में जब मैं अपने गांव में था, तो हमारी दादी जी ने इसी प्रयोग से कई बार मेरी कर्ण-पीड़ा शान्त कर दी थी ।

ऐसा ही एक और प्रयोग

भुनी हुई फिटकरी अति सूक्ष्म पीसकर कान में डालें, और ऊपर से कुछ बूंदें नींबू का रस निचोड़ दें। यदि नींबू का रस प्राप्त न हो, तो प्याज का रस डालें। ईश्वर की कृपा से तत्काल पीड़ा शान्त हो जायगी।

कर्ण पीड़ा हर भफारा

नीम के पत्ते मुट्ठीभर लेकर सेरभर पानी में उबालें और गरम २ भाप कान में पहुंचाएं। पीड़ा शीघ्र ही बन्द हो जाती है। बिना पैसे की अत्युत्तम चिकित्सा है।

कर्ण रसायन तेल

यह तेल कर्ण सम्बन्धी अनेक रोगों के लिये परम लाभदायक है, यहां तक कि कुछ दिन निरन्तर सेवन करने से बहिरा आदमी भी पुनः श्रवण-शक्ति प्राप्त कर लेता है। और कर्ण पीड़ा के लिये तो यह सर्वोत्तम औषधि है। चाहे किसी कारण से पीड़ा क्यों न हो दूर होने में मिनट भी नहीं लगते।

तेल बनाने की विधि इस प्रकार है

आध पाव भर धतूरे के पत्तों का रस और आध पाव मीठा तेल, दोनों को मिलाकर आग पर रखें। जब आधा पानी जल कर तेल तथा कुछ पानी शेष रहे, उस समय आक के सात पत्ते लें और उनको मीठे तेल से चुपड़ कर ऊपर से नमक छिड़क दें। तत्पश्चात् उन पत्तों को भी पूर्वोक्त तेल में डालदें, और जला डालें। फिर इसको स्वच्छ करके शीशी

में रखलें। इसकी सेवन विधि यह है कि आवश्यकता के समय समोष्ण करके कुछ बूंदें कान में टपकावें। इससे न केवल कर्ण-पीड़ा, अपितु कान से पीप आना भी बन्द हो जाता है, और कुछ दिन के निरन्तर प्रयोग से बहरापन दूर कर देता है। सारांश यह कि कर्ण के सभी रोगों के लिए इससे अधिक गुणकारी और सरल दवा अन्य नहीं।

सूचना

संन्यासी चिकित्सा शास्त्र में कर्ण रोगों के लिए एक विशेषातिविशेष गुप्त सन्यासी प्रयोग पाठकों को भेंट किया गया है, चमत्कारी प्रभाव को देख कर बड़े-बड़े वैद्य तथा हकीम व डाक्टर भी दंग रह गये हैं। कर्ण रोगों के लिए उससे उत्तम प्रयोग आज तक सुनने में नहीं आया।

कर्णस्राव

इस रोग को साधारण भाषा में कान का बहना अथवा पीप आना कह सकते हैं। प्रायः यह कान की फुन्सी अथवा शोथ पककर फूट जाने से होता है। यदि इसकी तुरन्त चिकित्सा न की जाय, तो मस्तिष्क को भारी हानि पहुंचने का भय रहता है। प्रत्युत यदि यही क्षत मस्तिष्क में पड़ जाय, तो सन्निपात हो जाता है। इस रोग में रोगी के कान से पीप आती है। जब कुछ रुक जाती है, तो पीड़ा में अधिकता हो जाती है। कभी २ घाव कान में भीतर गहराई में होने के कारण सिर में चक्कर आने लगते हैं। नीचे पाठकों को कर्णस्राव के उत्तमोत्तम और सहस्रों बार के अनुभूत सरल प्रयोग भेंट किये जाते हैं, लाभ उठाकर सेवक को शुभाशीष द्वारा स्मरण करें।

कर्ण-स्राव के लिए सर्वोत्तम प्रयोग

गत पृष्ठों में कर्ण-पीड़ा के वर्णन में जो योग 'कर्ण रसायन तेल' के नाम से अंकित किया जा चुका है, उससे बढ़ कर लाभकारी योग देखने में नहीं आया। पाठकगण स्वयं परीक्षा करके उसके गुण देखें।

द्वितीय योग

सरसों के तेल में कीकर के फूल जलाकर तेल को छान कर शीशी में बन्द करलें और दो-तीन बूंद प्रातः सायं नित्य कान में डालते रहें। ईश्वर कृपा से कुछ ही दिन में पीप आना बिल्कुल बन्द हो जायेगा।

अनुपम चिकित्सा

अंजरूत को थोड़ा बारीक करके उसमें शुद्ध मधु उचित परिमाण में मिलाए और रूई की एक बत्ती उसमें तर करके कान के भीतर रखें। ईश्वरानुग्रह से एक दो बार में ही कान का सारा मल निकल जायेगा, और सदा के लिए रोग मिट जायेगा। एक वैद्य जी ने इसी प्रयोग द्वारा हमारे छोटे भाई को सदा के लिए कर्णस्राव रोग से मुक्त कर दिया था। आज तक उसके कान से दुबारा पीप नहीं आया, लाभकारी योग है।

प्रशंसित प्रयोग

कुछ समय पूर्व निम्न प्रयोग 'रसायन' में प्रकाशित हुआ था। जिसकी अनेक वैद्यों ने परीक्षा करके अत्यधिक प्रशंसा की है। कर्णस्राव के रोगियों के लिए यह प्रयोग परमोपयोगी है।

तीन तोला नीम के हरे पत्ते बारीक करके मधु (शहद) में मिलाकर भली प्रकार पीस लें तथा किसी कपड़े से छान कर सावधानी से शीशी में रख छोड़ें, आवश्यकता के समय दिन में तीन बार यही दवा कान में डाला करें। ५-६ दिन में ही पूर्ण लाभ हो जायगा।

अन्य उत्तम प्रयोग

३ माशा मूली का क्षार १ तोला विशुद्ध मधु में मिलाकर भली प्रकार घोल लें और शीशी में संभाल कर रख लें। आवश्यकता के समय नित्य प्रति रुई की बत्ती तर करके दिन में २-३ बार बदलते रहें। ईश्वर कृपा से ८-१० दिन में ही पूर्णतया लाभ हो जायेगा।

मूली का क्षार बनाने की विधि—'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में सविस्तार वर्णित है।

बच्चों के कर्ण-स्राव के लिये अपूर्व लाभकारी प्रयोग

रसौंत व आमलासार गन्धक दोनों को बराबर-बराबर लेकर बारीक करके मिलालें। जब किसी बच्चे का कान बहने लगे, तो प्रथम कान को नीम के उबले हुए पानी से स्वच्छ करलें। जब कान सूख जाय, तो उसमें १ रत्ती दवा डालें और नलकी आदि से फूंक मार कर दवा को कान में घुमादें। एक सप्ताह के निरन्तर प्रयोग से ईश्वर कृपा से नासूर तक को लाभ हो जायेगा और फिर कभी उस बच्चे का कान न बहेगा।

कर्ण कृमि

यह रोग बड़ा ही भयंकर होता है। इसमें रोगी के कान में कीड़े पड़ जाते हैं। यदि चिकित्सा में तनिक भी उपेक्षा से काम लिया जाय तो ये कीड़े मस्तिष्क तक फैल जाते हैं। हमने बड़ी खोजबीन और परिश्रम से इस रोग के निवारणार्थ ऐसे उत्तम प्रयोग खोज निकाले हैं जो कि एक दिन में ही कान के समस्त कीड़े निकाल कर नितान्त स्वच्छ कर देते हैं। इस रोग के उत्तम प्रयोग प्राचीन चिकित्सा ग्रन्थों में भी कम ही पाये जाते हैं। अतः निम्नांकित प्रयोग संग्रह करने में हमें जो अधिक परिश्रम उठाना पड़ा है, उसे केवल मेरा हृदय ही जानता है। किन्तु यदि इन प्रयोगों से हमारे प्रिय पाठकों व निर्धन भाइयों का कुछ भी कल्याण हो सका तो मेरा परिश्रम सफल हो जाएगा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह हमारे देश के निर्धन भाइयों को इनसे लाभान्वित करे और रोगों से मुक्ति दिलाए।

कान के कीड़ों को मारने के लिए ईश्वरीय वरदान

यह प्रयोग क्या है, ईश्वरीय वरदान है। भला हर साधारण व्यक्ति को क्या पता कि उस परम कृपालु परमात्मा ने गांव २, घर २ और नगर २ में पाई जाने वाली अति सामान्य वस्तुओं में भी कैसे-कैसे अनुपम गुण भर दिए हैं। निम्नांकित प्रयोग कान के कीड़ों को मारने के लिए ईश्वरीय बाण है और हर स्थान पर प्रचुरता से प्राप्त है।

प्रयोग

मूली कूट कर मलमल के वस्त्र में से निचोड़ कर पानी निकालें और समोष्ण करके कुछेक बूंदें कान में डालें, प्रथम तो पहिले ही दिन, शेष दूसरे, तीसरे दिन सारे कीड़े झड़ जायेंगे और कान साफ हो जायेगा।

कर्ण कृमि नाशक योग

१ तोला प्याज के रस में ६ माशा एलुवा भली प्रकार घोल लें, और आवश्यकता के समय थोड़ा सा कान में डालें। सारे कीड़े मर कर बाहर निकल पड़ेंगे, अद्भुत चमत्कारी योग है।

तदनुसार

आक के पत्तों का रस, हरे पुदीने का अर्क और सिरका दोनों द्रव्यों को समान मात्रा में लेकर मिलालें, और आवश्यकता के समय ४ रत्ती कान में डालें। प्रभु कृपा से एक दो दिन में ही सारे कीड़े निकल पड़ेंगे, और पूर्ण आराम हो जायगा।

अवसरानुकूल औषधि

कभी २ ऐसा अवसर आ जाता है। कि भूमि पर ही सो जाना पड़ता है, उस समय कान में यदि चींटीं अथवा और कोई कीड़ा घुस जाता है, तो घोर कष्ट उत्पन्न हो जाता है। इसकी पीड़ा को वही लोग भली प्रकार समझ सकते हैं, जिन्हें कभी ऐसा अवसर पड़ चुका है। लीजिए हम आपको एक अति सरल दवा बताए देते हैं

जिससे कीड़ा तत्काल मर जायेगा, और पूर्णतया आराम हो जायेगा।

नीम के पत्तों के रस में थोड़ा सा नमक मिला कर समोष्ण करके कान में डाल देंगे तो दवा के अन्दर पहुंचते २ कीड़ा मर जायेगा।

एक महान सन्यासी द्वारा प्रदत्त कृमिनाशक दुग्ध

बकरी का दूध ३ माशा थोड़ा गरम करके उसमें तीन बूंदें बरगद के दूध की डालकर तत्क्षण कान में डालदें। इसी प्रकार तीन दिन पर्यन्त प्रयोग करें। ईश्वर कृपा से समस्त कीड़े निकल जायेंगे। यह प्रयोग एक संन्यासी ने मेरे पूज्य पितामह पं० मुसद्दीलाल जी शुक्ल को उस समय बताया था, जब कि उनके कान में कीड़े पड़ गये थे। पूज्य दादा जी ने मुझे बताया था कि केवल दो दिन में ही उनका कान नितान्त साफ हो गया था। यद्यपि इसका अनुभव मैंने नहीं किया, किन्तु चूंकि स्वयं मेरे दादा जी का अनुभूत है; अतः मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यह परम लाभदायक योग है। जो सज्जन आवश्यकता के समय इसका प्रयोग करेंगे, ईश्वर कृपा से निश्चय ही लाभ उठायेंगे। लाभ होने पर सेवक को शुभ आशीर्वाद प्रदान करना न भूलें, ताकि मैं आप लोगों की अधिक सेवा करने की शक्ति प्राप्त कर सकूं।

बधिरता (बहरापन)

यदि किसी व्यक्ति की श्रवण-शक्ति नितान्त लुप्त हो जाय, अर्थात् वह शब्द सुन नहीं सके, तो उसके लिए सारा

संसार ही स्वर-हीन हो जाता हैं । तनिक विचार कीजिए कि परमात्मा ने आपको कर्णा-रूपी कैसे अद्भुत यन्त्र प्रदान किए हैं, जिनसे आप सुमधुर गीत व संगीत का रसास्वादन प्राप्त कर सकते हैं, स्वजनों की प्रेमभरी बातें सुनकर हृदय को कितना आनन्द प्राप्त होता है, और यदि एक दिन के लिए भी आपकी श्रवण शक्ति छिन जाय, तो आपको कितनी व्याकुलता प्रतीत हो । अब आप उस व्यक्ति के हृदय की व्यथा का अनुभव लगाइये जो सहसा बहरा हो गया हो । किन्तु ऐसे दुखी भाइयों को शोकाकुल होने की आवश्यकता नहीं । क्या हुआ यदि आपके पास चिकित्सा के लिए पर्याप्त पैसे नहीं ? उस परम कृपालु परमात्मा ने जगत व्याप्त प्रकृति की गोद में ही कठिन से कठिन रोगों को दूर करने वाली औषधियां भी उत्पन्न करदी हैं । यदि हमारे पाठक भाई इस बात का निश्चय कर लें, कि वे किसी रोग में भी डाक्टर के पास दौड़े जाकर अपनी पसीने की कमाई न बहाएंगे, प्रत्युत ईश्वर की बनी हुई प्रकृति रूपी रसायन शाला से ही बिना पैसे की औषधियां प्राप्त करके समस्त रोगों की चिकित्सा करेंगे, तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं, कि इस पुस्तक की ही मदद से दे बड़े से बड़े और दुस्साध्य से दुस्साध्य रोग की भी जड़ें काटने में सफल होंगे । क्या मैं अपने प्रिय पाठकों से आशा करूं कि वे घर २ में इस पुस्तक का प्रचार करके निर्धन व दीन भाइयों का उपकार करेंगे । ताकि वे भी इन बिना मूल्य प्राप्त अनमोल प्राकृतिक औषधियों से पूरा २ लाभ उठा सकें ।

अब हम आपको कुछ अत्युत्तम प्रयोग भेंट करते हैं ।

जिनसे ईश्वर की कृपा से निराश रोगी भी पुनः श्रवण-शक्ति प्राप्त कर सकेंगे। उस प्रभु की लीला अपरम्पार है, जिसने तुच्छ वस्तुओं में भी प्रशंसनीय गुण भर दिए हैं।

बधिरता का सर्वोत्तम प्रयोग

इस प्रयोग की जितनी भी प्रशंसा की जाय, थोड़ी ही है। इतने सुलभ और साधारण द्रव्यों से बनने वाला तेल प्रभाव में कितना गुणकारी है, इस बात को वह सज्जन भली प्रकार समझ सकेंगे जो कि इसका अनुभव करके ईश्वर कृपा से लाभ उठाएंगे।

प्रयोग इस प्रकार है

मूली के ऐसे पत्तों का पानी जो कि पीलापन लिए हुए हों ५ तोले, मूली का पानी ५ तो०, मीठा तेल ५ तोले, तीनों को कलईदार देगची में डाल कर मन्द २ अग्नि पर पकावें। जब पानी जल कर केवल तेल शेष रह जाय, तो छान कर शीशी में सुरक्षित रखलें। और इसमें से कुछेक बूंदें समोष्ण करके नित्य कान में डाला करें। परमात्मा की कृपा से कुछ ही दिनों में खोई श्रवण शक्ति पुनः प्राप्त हो जायगी। अब तक अनेक निराश रोगी इसके चमत्कार से लाभान्वित हो चुके हैं।

एक और प्रशंसित तेल

६ माशा पानी में ४ तोला नमक बारीक पीस कर मिला दें। जब नितान्त घुल जावे तो इसमें १० तो० मीठा तेल मिला कर मन्द २ आंच पर पकावें। जब पानी जल कर तेल मात्र अवशिष्ट रह जाय, तो उतार कर रखदें।

थोड़ी देर में तेल निथर जायेगा। इसको शीशी में भर कर सुरक्षित रखलें और कई दिवस पर्यन्त इस तेल को निरन्तर रूप से कानों में डालते रहें। यदि धैर्य और विश्वास के साथ बराबर प्रयोग करते रहे तो ईश्वर की कृपा से निश्चय लाभ होगा। यह तेल समोष्ण करके कान में डालने से कठिन से कठिन कर्ण पीड़ा भी तत्काल शान्त हो जाती है।

बधिरता का शर्तिया इलाज

किसी बात का सही दावा तो कोई नहीं कर सकता, किन्तु इस औषधि से ९९ प्रतिशत बधिरता के रोगी लाभ प्राप्त करते हैं। औषधि का प्रयोग गत पृष्ठों में कर्ण-पीड़ा के प्रकरण में 'कर्ण रसायन तेल" के नाम लिखा जा चुका है।

बधिरता के सहस्रों रोगियों द्वारा परीक्षित इन्द्रायण तेल

इस प्रयोग के विषय में देहाती फार्मेसी के वैद्य जी ने स्वयं मुझसे बड़ी प्रशंसा की है। उनका कथन है कि प्रारंभ में मेरे पास एक दो रोगी ऐसे आए, जिनकी श्रवण-शक्ति दिन प्रतिदिन न्यून होती जा रही थी। मैंने इसी तेल को बनाकर उन्हें दे दिया, और ईश्वर की कृपा से उन्हें लाभ हो गया। फिर तो बधिरता के रोगियों का फार्मेसी में तांता लग गया। मैं भी चुपचाप यही तेल बनाकर सबको देता गया। किंतु पुराने रोगियों को कम से कम एक मास पर्यन्त सेवन करने का आदेश कर देता था। परमात्मा की ऐसी अनुकम्पा हुई कि शतप्रतिशत रोगियों को लाभ हुआ। हां जिन्होंने कुछ दिनों के प्रयोग से ही

घबड़ा कर छोड़ दिया, उन्हें अवश्य निराश होना पड़ा। वैद्य जी ने बताया कि अब तक यह तेल सहस्रों रोगियों को लाभ पहुंचा चुका है, और अब भी धड़ाधड़ बिक रहा है। पाठकों की सेवा में हम वह प्रयोग भी निःसंकोच भाव से अर्पण किए देते हैं।

प्रयोग

इन्द्रायण का स्वरस और तिल का तेल समभाग लेकर किसी चीनी अथवा सिलवर के बरतन में अंगुली से भली भांति मिश्रित करलें और सदैव थोड़ा गरम करके तथा पुनः भली प्रकार मिला कर कुछेक बूंद कानों में डाला करें। ईश्वर कृपा से निश्चय ही लाभ हो जायेगा। पुराने रोगी धैर्यपूर्वक निरन्तर प्रयोग करते हुए लाभ की आशा रखें। ईश्वरानुग्रह से उन्हें भी निराश न होना पड़ेगा।

नासिका रोग

अब हम नाक के विविध रोगों के उत्तमोत्तम योग अंकित करेंगे। जो सज्जन इन रोगों का विस्तृत विवरण, कारण, लक्षण आदि जानना चाहें, वे हमारी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में देखें।

इस रोग में नाक की रगें रक्त से भर कर फट जाती हैं। इसके बहुत से कारण होते हैं। प्रायः नव-युवती कन्याओं को मासिक धर्म की अवधि से पूर्व नक्सीर फूट जाया करती है। कभी २ तेज ज्वर में भी नक्सीर फूट जाती है।

नक्सीर के शुभाशुभ लक्षण

बुढ़ापे में नक्सीर का आना और सिर के घाव व चोट आदि से नक्सीर फूटना बहुत ही भयंकर होता है। अतः घोर ज्वर में पार्श्व शूल में वोहरान के रूप में आता है, वह स्वास्थ्य लाभ का सन्देश लाती है, अतः उसे रोकने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। यदि नक्सीर में काले रंग का रक्त निकलता हो, तो उसे भी नहीं रोकना चाहिए। हां जब अत्यधिक मात्रा में निकले, तो रोक देना चाहिए। एक बहुत ही भयानक किस्म की नक्सीर और भी होती है, जिसे प्रायः मौत का सन्देश समझा जाता है, उसके लिए एक विशेषातिविशेष गुप्त संन्यासी प्रयोग 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में लिखा गया है। जिससे कि निश्चय ही इस घातक नक्सीर से छुटकारा मिल जाता है। अन्य सामान्य प्रकार की नक्सीरों के लिए उत्तमोत्तम सरल प्रयोग यहां अंकित किए जाते हैं। किन्तु प्रयोग लिखने से पूर्व हम आपको प्राचीन अनुभवी चिकित्सकों के कुछ ऐसे अनुभव बता देना चाहते हैं, जिससे कि रोगी की नाक देखकर आप उसके मृत्युकाल को पूर्व ही जान सकते हैं। यदि निम्न लक्षण प्रकट हो जायं तो रोगी के जीवित रहने की आशा छोड़ देनी चाहिए।

चिकित्सकों के अनुभव

१—यदि रोगी के चेहरे का रंग पीला हो, और नाक का रंग उससे भी अधिक पीला हो, तथा नाक की कोंपल पतली होकर एक ओर मुड़ जाय, तो ऐसे रोगी को कुछेक घड़ियों का ही मेहमान समझ लेना चाहिए।

२—जिस रोगी की नासिका शुष्क हो जाय, या अचानक सिकुड़ कर बैठ सी जावे, तो वह रोगी एक सप्ताह से भी अधिक जीवित नहीं रह सकता।

३—यदि रोगी को नस्य आदि प्रयोग कराने पर भी छींकें न आवें तो मृत्यु का प्रत्यक्ष चिह्न समझ लेना चाहिए।

नक्सीर को पांच मिनट में रोकने वाला सर्वोत्तम प्रयोग

३ माशा सुहागा को पानी में घोल कर दोनों नथुनों पर लेप करदें। ईश्वर कृपा से तत्काल रक्त प्रवाह बन्द हो जायेगा। अनेक लोगों ने कई बार परीक्षा करके अत्यधिक प्रशंसा की है।

स्थायी नक्सीर रोगियों के लिए रामबाण औषधि

जो लोग प्रायः ही नक्सीर से पीड़ित रहते हैं, उन्हें यदि किसी औषधि से लाभ न होता हो, तो तनिक इस साधारण सी वस्तु को भी प्रयोग कर देखें और इसके चमत्कारी प्रभाव से लाभ उठावें। इसके एक दो दिन के सेवन से ही नदी के समान बहने वाली नक्सीर भी सदा के लिए बन्द हो जाती है, परीक्षा करके स्वयं वर्षों पुराना प्रभाव देखें।

१ तो० मुल्तानी मिट्टी रात के समय किसी भी मृत्तिका पात्र में आधा सेर पानी में भिगो कर रखदें और प्रातः

समय पानी निथार कर पी लिया करें। रोग भी सदा के लिए दूर ही जायेगा।

तदनुसार

रेहां के बीज १ तो० प्रातः समय निराहार मुख दूध की लस्सी के साथ दिया करें। कुछ दिन के सेवन से ही रोग जड़ मूल से मिट जायगा। जो सज्जनवृन्द एक बार सेवन करके अनुभव करेंगे वही इसके गुणों से भली प्रकार परिचित हो सकेंगे।

नक्सीर के लिये शर्बत

अंजबार की जड़ २ तो० कूटकर रात को सेर भर पानी में भिगो दें, और प्रातःकाल अग्नि पर पकावें। पकते २ जब आधा सेर पानी जल जाय, तो उतार कर छानलें और उसमें आधा सेर मिश्री मिला कर यथाविधि शर्बत बनालें। तथा ३ तो० शर्बत पानी मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करना नक्सीर के लिए पर्याप्त लाभ कर होगा।

अद्भुत चुटकुला

गधी का दूध इच्छानुसार लेकर रोगी के सिर पर मालिश करें ताकि रोगी का सिर दो घण्टे तक दूध से तर रहे। ६-७ दिन निरन्तर इसी प्रकार मालिश करने से पुनः रक्त कदापि न आएगा। किन्तु दूध हर बार ताजा लेना चाहिये।

अत्युत्तम नस्य

ऊंटनी के बाल लेकर जलालें और आवश्यकता के समय रोगी को सुंघावें। तत्क्षण रक्त-प्रवाह रुक जायेगा।

बरगद का चमत्कार (प्रथम)

बरगद का छिलका छाया में सुखाकर अति सूक्ष्म पीस लें, और नस्य की भांति रोगी को सुंघावें तत्काल नकसीर का बहता हुआ रक्त रुक जायेगा।

बरगद का चमत्कार (द्वितीय)

बरगद की अति कोमल छोटी कोंपलें लेकर पानी के साथ ठण्डाई के समान घोट-छान कर उसमें मिश्री मिलाकर पिलावें। नक्सीर के लिए अति लाभदायक है। कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से वर्षों पुराना रोग भी दूर हो जाता है।

बरगद का चमत्कार (तृतीय)

बरगद के पत्ते जो लाल रंग के होते हैं, थोड़ा सा पानी डालकर अत्यधिक बारीक पीसें और रोगी के मस्तक पर लेप करदें। ईश्वर कृपा से निश्चय ही नक्सीर का रक्त प्रवाह रुक जायेगा। मैंने स्वयं इस प्रयोग का कई बार अनुभव किया व रोगियों को लाभ पहुंचाया है। विश्वस्त प्रयोग है।

तत्काल प्रभावक नस्य

रोगी को यह नस्य सुंघाने की देर है कि तत्काल रक्त

स्राव को वहीं का वहीं रोक देती है।

भुनी हुई फिटकरी, जंगली, उपलों की राख व सियालकोटी कागज की भस्म, तीनों बराबर लेकर मिलालें और रोगी को नस्य दें। सुंघाते ही अद्भुत प्रभाव दृष्टिगोचर होगा।

नाक की दुर्गन्धि

प्रायः लोगों की नाक से बड़ी दुर्गन्धि आने लगती है। उसे दूर करने के लिए निम्न प्रयोग लाजवाब है, आवश्यकता के समय लाभ उठावें।

कड़ुवे कद्दू का गूदा निचोड़ कर पानी निकाल लें और यदि कद्दू मिलने की ऋतु न हो तो सूखे कद्दू के टुकड़े लेकर पानी में उबालें और फिर मल कर छानलें और शीशी में सुरक्षित रख लें आवश्यकता पड़ने पर १–१ बूंद प्रतिदिन नाक में डाला करें। कुछ दिन के बाद निरन्तर प्रयोग से दुर्गन्धि नितान्त दूर हो जायगी। अनुभूत औषधि है।

नाक की बवासीर

यह बिलकुल बवासीरी मस्सों की भांति होती है जोकि बड़ी कष्टप्रद होती है। इसके लिए निम्न प्रयोग सर्वदा अचूक रामबाण सिद्ध हुआ है।

आवश्यकतानुसार रसौंत लेकर पानी के द्वारा मरहम सी

बनालें और इसमें बत्ती तर करके नाक में रखें। ईश्वर कृपा से अनावश्यक मांस निकाल कर नाक स्वच्छ व रोग-मुक्त हो जायगी।

नासिका कृमि

यदि दुर्भाग्यवश नाक में कीड़े पड़ जायें तो तत्काल चिकित्सा की ओर ध्यान दें, अन्यथा ये कीड़े यदि कहीं मस्तिष्क तक पहुंच गए तो जीवन में संकट उपस्थित हो जायेगा। निम्न प्रयोग पूर्ण अनुभून है।

कनेर के पत्ते तथा नौशादर बराबर-बराबर लेकर बारीक पीसलें और रोगी को नस्यवत् सुंघावें। अति शीघ्र कीड़े बाहर निकल जायेंगे और पूर्ण आराम हो जायेगा।

घ्राण-शक्ति का लोप हो जाना

यह रोग बड़ा ही भयंकर समझा जाता हैं, कोई-कोई वैद्य तो इसे मृत्यु का पूर्व लक्षण समझतें हैं। इससे रोगी के लिए उत्तम से उत्तम सुगन्धि और बुरी से बुरी दुर्गन्धि में कोई अन्तर नहीं रह जाता और कन्नौज का इत्र व मिट्टी का तेल बराबर होता है। ईश्वर कृपा से निम्न प्रयोग इस रोग के लिए बड़ा ही लाभकारी सिद्ध हुआ है, और कुछेक बार के प्रयोग से ही विलुप्तप्राय घ्राण-शक्ति पुनः प्राप्त हो जाती है।

सर्वोत्तम प्रयोग

२-३ माशा उत्तम बासमती चावल स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी) के दूध में तर करके छाया में सुखा लें और अति सूक्ष्म पीस कर थोड़ी-थोड़ी औषधि रोगी को नस्य-

वत् सुंघायें। तथा १ माशा स्वर्णक्षीरी का दूंध पाव भर गौ दुग्ध में मिला कर रोगी को पिलाया करें। निरन्तर कई दिन के प्रयोग से निश्चय ही रोग निवारण हो जाता है।

द्वितीय प्रयोग

१ तो० कलौंजी व ३ तोला ऊंट का मूत्र लें। कलौंजी को ऊंट के मूत्र में यहाँ तक पकावें कि केवल एक तोला मूत्र शेष रह जाय। फिर उसे मलकर छान लें तथा दिन में ३ बार २-२ रत्ती सुंघाया करें। कुछ ही दिनों में रोग जड़ से मिट जायेगा।

नासिका व्रत

कई बार नाक में घाव हो जाता हैं, जोकि निस्संदेह बड़ा खतरनाक होता है। अस्तु इसकी चिकित्सा में उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

नासिका व्रत का सर्वोत्तम प्रयोग

यह प्रयोग नितान्त सरल व जादू के समान प्रभाव प्रदर्शक है। एक वैद्य जी ने बड़ी मुश्किल से प्रकट किया है।

प्रयोग

घाव के ऊपर ताजा बरगद का दूध टपकावें। बड़ा ही लाभकारी सिद्ध होगा। मैंने स्वयं एक रोगी पर इसकी परीक्षा करके गुणों को देखा है।

द्वितीय लाभप्रद योग

६ माशा मोम और १ तो० तिलों का तेल लें।

प्रथम तेल को किसी चमचे में डालकर मन्द २ आंच पर गर्म करें। जब खूब गरम हो जाय, तो उसमें मोम डाल दें। थोड़ी देर में मोम बिल्कुल घुल मिल जायेगा। तब नीचे उतार कर ठण्डा कर लें और किसी डिबिया में रखलें। आवश्यकता पड़ने पर दोनों समय घाव पर लगाया करें। एक दो दिन में ही पूर्णतया लाभ हो जाएगा। यदि घाव को पहले नीम के पानी से साफ करलें, तो और भी शीघ्र लाभ होगा।

हमारा दावा

अधिकांश लोगों का मत है कि 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में नासिका व कर्ण रोगों के बहुत ही उत्तम योग हैं, किन्तु हमारा दावा है; कि 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' जो कि अभी हाल ही में प्रकाशित हुई है, उसमें उक्त पुस्तक से भी बढ़-चढ़ कर आश्चर्यजनक प्रयोग अंकित हैं। अब पाठक गण स्वयं ही दोनों पुस्तकों को पढ़कर इस बात का सही निर्णय करें।

दन्त रोग

दांत भी परमात्मा की अनुपम देन है। दांतों से ही भोजन को चबाकर हम पचने योग्य बनाते हैं। साथ ही शब्दों का उच्चारण भी दांतों पर ही निर्भर होता है। बिना दांतों के हमारा जीवन निरर्थक सा होता है। ऐसी महत्त्वपूर्ण देन को स्वच्छ सुदृढ़ रखना हमारा आवश्यक कर्त्तव्य है। दांतों को स्वच्छ न रखने से अनेक दन्त रोगों के अतिरिक्त और भी कई भयंकर रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अनुभवी डाक्टरों का मत है कि ८० प्रतिशत पागल

दांतों की गन्दगी व खराबी से ही होते हैं। क्योंकि दांतों का मस्तिष्क से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। और यह बात तो हर सामान्य व्यक्ति भी समझ सकता है कि भोजन दांतों द्वारा चबाया जाकर ही पेट में जाता है, यदि दांत गन्दे होंगे, तो उनका मैल व कीड़े आदि भोजन के साथ पेट में चले जायेंगे और भांति २ के विकार उत्पन्न कर देंगे। इसीलिए हमारे पूर्वजों ने नित्य प्रातःकाल दन्तधावन कर्म को धार्मिक नियम के रूप में बतलाया है। अतः मैं बार-बार आप लोगों से प्रार्थना करता हूं कि यदि आप पूर्ण स्वस्थ रह कर सुखमय जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो दांतों की भली-भांति सफाई करो, और नित्य नियमित रूप से करो।

यदि आप निर्धन हैं? अगर बड़े आदमियों की भांति ब्रुश, टुथ पेस्ट और टुथ पाउडर आप नहीं खरीद सकते, तो अपने गांव के बाहर से नीम, बबूल, अथवा पीपल जैसे सुप्राप्त वृक्षों की दातुन उन ब्रुशों, तथा पाउडरों से हजार गुनी बढ़ कर लाभकारी है। बड़े आदमी किसी वस्तु के गुण अवगुण नहीं देखते, वरन् उसकी चमक, दमक, खुशबू और बढ़िया पैकिंग देखते हैं, और आजकल तो सबसे पहले यह देखा जाता है कि माल 'इंगलैंड मेड' हैं या 'इण्डिया मेड'। उनकी दृष्टि में विदेशियों का पाखाना भी हिन्दुस्तानी लड्डू पेड़ों से कहीं अच्छा होता है। और यदि आपको भी थोड़ी बहुत इनकी हवा लग गई है, यदि आप भी दातुन पसन्द न करके टुथ पाउडर ही पसन्द करते हैं तो लीजिए आपके कल्याणार्थ कुछ परम गुणयुक्त मंजन बनाने की विधियां भी लिखे देते हैं जो कि आपके शौक को पूरा करेंगे और आपके दांतों को भी लाभ पहुंचायेंगे। किन्तु,

उसके पूर्व हम दन्त रोगों के वर्णन व उनके अति सुगम प्रयोग लिखते हैं, जो कि पुस्तक का मुख्य विषय है।

१—ज़ेसदार पदार्थ, रेवड़ियां, सोहन हलुवा; मैदे की मिठाई, खट्टे पदार्थ आदि नहीं खाने चाहिएं।

२—गर्म वस्तुएं खाकर तुरन्त हो ठण्डा पानी पोना बहुत हानिकारक सिद्ध होता है।

३—बरफ का अधिक सेवन भी दांतों के लिए हानि-कारक है।

४—मौलसिरी की दांतुन दांत के लिए रसायन है।

५—खाना खाते ही सो जाना दांत तथा आमाशय सभी के लिए बहुत हानिकारक है।

दन्त-शूल

प्रायः दांत और दाढ़ में भयंकर पोड़ा हो जाती है:— १. दांतों पर मैल जम जाना, २. दांतों में कोड़े लग-जाना। ३. अजीर्ण पारद आदि के मिश्रण सेवन करना आदि। रोगी के दांत में घोर पीड़ा होती है, मसूड़े पर सूजन आ जाती है, और कभी २ गाल भी सूज जाता है।

दन्त-पीड़ाहर सुगम योग

उत्तम तम्बाकू, लाल गेरू, और काली मिर्च तीनों द्रव्यों को बराबर २ लेकर बारीक पोसलें और कपड़े में से छान कर सुरक्षित रखलें। आवश्यकता के समय प्रातः दांतों पर मला करें और मलने के आध घंटे के बाद कुल्ली किया करें। हर प्रकार की दन्त-पीड़ा की अचूक दवा है।

दन्त-पीड़ा की अनुपम दवा

जब दन्त-पीड़ा उत्पन्न हो, उसी समय बारीक पिसी

हुई काली मिर्च १ रत्ती मात्रा, कुछ बून्द पानी में घोल कर कान में डालें। पीड़ा तत्काल रुक जायेगी। फिर कान में थोड़ा सा घृत डाल दें। इससे सूजन भी दूर हो जायेगी और पीड़ा को भी आराम हो जायेगा। यह प्रयोग सैकड़ों बार का परीक्षित है और सर्वदा अचूक है।

दाढ़ पीड़ा का संन्यासी प्रयोग

एक बार मेरे परम मित्र श्रीयुत् रामस्वरूप जी दीक्षित की दाढ़ में भयंकर पीड़ा उत्पन्न हो गई। शाम को वे हमारे साथ एक महात्मा जी के पास पहुंचे। गये तो थे महात्मा जी के दर्शन करने, किन्तु महात्मा जी ने उन्हें पीड़ित देखकर सारा हाल पूछा और सुन कर तत्काल मन्दिर के आक की ताजा जड़ दांतुन जितनी मोटी लाकर मन्द आंच में दबा दी। जब वह भुर्ता सी हो गई तो उसे निकाल कर कुछ-कुछ गर्म को ही दाँतुन करने के लिए श्री दीक्षित जी को दे दी। लगभग चार घण्टे हम लोग महात्मा जी के पास बैठे रहे और इस बीच उन्होंने दो बार दांतुन कराई। ईश्वर की ऐसी कृपा कि वहां से लौटते-लौटते पीड़ा और सूजन का नाम तक न रहा। मैं भी इस अद्भुत चमत्कारी प्रयोग को देखकर दंग रह गया। आवश्यकता के समय जो भी सज्जन इस प्रयोग की परीक्षा करेंगे प्रभाव देख कर मुग्ध हो जायेंगे।

एक पैसे की दवा

भुनी हुई फिटकड़ी और रीठे की गुठली की राख बराबर २ लेकर बारीक पीस लें और पीड़ा के स्थान पर

मल दें। यदि सारे दांतों में भी पीड़ा होगी, तो आराम हो जायेगा।

तदनुसार

जभी दांतों में दर्द हो, तो बबूल का ताजा छिलका लेकर उसमें फिटकड़ी की डली रखकर चबाएं कुछेक बार के चबाने से ही पूर्ण आराम हो जायेगा।

नोट—इस को यदि अन्दर निगल जावें, तो खांसी के लिए लाभप्रद है।

दांतों में कीड़ा लगना

प्रायः दांतों में कीड़ा लग जाने से भी भयंकर पीड़ा उत्पन्न हो जाती है। नीचे कुछेक ऐसे जादू असर चुटकले अंकित किए जाते हैं, जिनसे बात की बात में कीड़ा मरकर बाहर निकल जाता है, और पीड़ा शान्त हो जाती है।

दन्त-कृमिनाशक योग

भटकटाई अर्थात् छमक निमोली अथवा छोटी कटेरी के बीज दांतों के कीड़े निकालने के लिए अद्वितीय औषधि सिद्ध हुए हैं। देहाती फार्मेसी के वैद्य जी ने इसका अनुभव अनेक रोगियों पर किया है और अचूक रामबाण पाया है। इन चीजों से कीड़े निकालने की विधि यह है, कि कुछ दहकते हुए कोयलों पर थोड़े से बीज डाल कर ऊपर से एक ऐसा बर्तन ढक दें, जिसके पैंदे में छेद हो। जब उस छिद्र में से बीजों का धुम्रां निकलने लगे तो उस पर हुक्के की नली आदि का एक सिरा लगाकर दूसरा सिरा दाढ़ के छिद्र पर

लगा दें, ताकि भली प्रकार धुम्रां लग सके। इस धुएं से कीड़े निकल कर नीचे गिरते जायेंगे। जब धुम्रां कम हो जावे, तो बीज और डालदें। इस क्रिया को देर तक जारी रखें सारे कीड़े निकल कर दाढ़ की पीड़ा शान्त हो जायेगी।

अद्भुत चमत्कार

जिस ओर की दाढ़ में दर्द हो, उसमें कृमिजोट ग्रायल की एक फुरेरी लगादें, ईश्वर कृपा से तत्काल कीड़ा मर जायेगा और पीड़ा शान्त हो जायेगी। यह औषधि किसी भी अंग्रेजी दवा विक्रेता से ले लें। चूंकि दवा अक्सीर है, इसलिए पुस्तक के अनुकूल न होने पर भी पाठकों के लाभार्थ अंकित कर रहे हैं। क्योंकि इसकी परीक्षा स्वयं मैं कई बार कर चुका हूं। यह तत्काल प्रभाव दिखाती है।

विविध दन्त मंजनों के योग

लीजिये जैसा कि हमने इस प्रकरण के प्रारम्भ में आपको वचन दिया था कि हम कुछेक दंत मंजनों के अत्युत्तम, लाभप्रद, सरल योग आपको भेंट करेंगे। तदनुसार अंकित किए जाते हैं। यदि हमारे फैशनेबुल भाई केवल पैकिंग की सुन्दरता पर न रीझ कर विदेशी टुथ-पाउडरों के के स्थान पर इन शुद्ध स्वदेशी मंजनों का प्रयोग करेंगे तो निस्संदेह अपूर्व लाभ उपलब्ध करेंगे। कुछ दिनों के सेवनोपरान्त ही आपको इनके गुण और लाभ दृष्टिगोचर होंगे।

अत्युत्तम सुगंधित मंजन

इस मंजन में कोई न तो हानिकर तीक्ष्ण वस्तु है और न ही कोई स्वादहीन पदार्थ, प्रत्युत बड़ा ही अमीराना

और सुगन्धियुक्त मंजन है । यदि प्रतिदिन प्रातः सायं इसका प्रयोग किया जाय तो दांतों का सारा मैल व गंदगी दूर होकर दांत मोतियों की भांति चमकने लगते हैं, साथ ही मुख की दुर्गन्धि नष्ट होकर हर समय सुगंधियुक्त रहता है ।

योग इस प्रकार है

असली रूमी मस्तंगी, छोटी इलायची के दाने, और वंशलोचन, सबको बराबर २ लेकर बारीक पीस कर चूर्ण (पाउडर) करलें, और दोनों समय दांतों पर मला करें। सर्वोत्तम मंजन है ।

अति सुगम मंजन

भुनी हुई फिटकरी, भुना हुआ लाहौरी नमक तथा कीकर का कोयला, बराबर २ लेकर बारीक पीसलें और मंजन की भांति प्रयोग करें। दांतों के मैल, दुर्गन्धि आदि को दूर करके मोती के समान स्वच्छ कर देता है, और हिलते हुए दांतों को भी सुदृढ़ बनाता है । और विशेषता यह है कि सर्वत्र प्राप्य अति साधारण और सस्ती वस्तुओं से ही बनकर तैयार हो जाता है ।

तदनुसार

बादाम के छिलकों का कोयला १ तो०, भुनी हुई फिटकरी ६ माशा, लाहौरी नमक ३ माशा, काली मिर्च १ माशा सबको बारीक पीसकर मंजनवत्, प्रयोग करें और आधा घण्टे उपरान्त कुल्ली किया करें। इससे बढ़ कर दूसरा कोई मंजन न होगा ।

एक और ऐसा ही मंजन

बड़ी हरड़ का कोयला ६ माशा, हीराकसीस दो माशा, खाने का नमक ३ माशा, काली मिर्च १ माशा। सबको बारीक पीस कर रख छोड़ें और प्रतिदिन दांतों पर मला करें। यदि ब्रुश द्वारा उपयोग में लायें तो और भी अच्छा है।

और भी लीजिए

यदि कोई भाई इतने निर्धन हों, और एक पैसा भी व्यय न कर सकते हों, तो उनके लिये हम एक अति सुगम मंजन बताते हैं, जो कि लाभ में किसी से कम नहीं, हां स्वाद में उपरोक्त मंजनों की समता नहीं कर सकता।

सैंधव नमक (घर में होगा ही) आग में जला कर अति सूक्ष्म पीस कर शीशी में रख लें और प्रतिदिन प्रातः दांतों पर मला करें। इससे दांतों का मैल कीड़े आदि कुछ ही दिनों में दूर हो जाते हैं, और दांत स्वच्छ तथा सुदृढ़ हो जाते हैं।

अथवा

यदि सैंधव नमक भी आपके घर में नहीं है, तो हम आपको एक ऐसा प्रयोग बताते हैं, जिसमें कि आपको एक पैसा भी व्यय न करना पड़ेगा। अपितु आपके गांव में ईश्वर ने प्रचुरता से उत्पन्न कर दिया है। यह मंजन भी बड़ा ही गुणप्रद है दांतों को स्वच्छ सुदृढ़ करना तथा मसूड़ों से रक्त आना रोक देना इसका पहिला काम है। स्वयं परीक्षा करके इसके गुण से लाभ उठाएं।

आम की कोंपले, फून (बौर) तथा की आम लकड़ी की राख, तीनों को समपरिमाण में लेकर मंजन बनालें और नित्य प्रातः प्रयोग करें।

मुझे पूर्ण आशा है कि हमारे पाठक भाई स्वयं परीक्षा करके इसके गुणों अवगुणों को समझने की चेष्टा करेंगे और उनसे लाभ उठायेंगे। यह नहीं सोचेंगे कि ये बिना पैसे के मंजन भला विलायती मंजनों की समता कैसे कर सकते हैं ?

मुख तथा कंठ के रोग

मुंह के छाले

मुख में छाले पड़ जाने के अनेकानेक कारण होते हैं, यथा धूम्र पान, पारद मिश्रित औषधियों का सेवन, आमाशय के विकार, गर्म औषधियों का सेवन आदि। जब कभी आप इस कष्ट से पीड़ित हों, तो तनिक निम्न प्रयोगों की परीक्षा करें, ईश्वरेच्छा से तत्काल आराम हो जाएगा।

छालों का अचूक योग

बड़ी इलायची का दाना और सुपारी, दोनों को आवश्यकतानुसार लेकर जलालें और बारीक पीस लें। तनिक सी औषधि छालों पर छिड़कें और जीभ को छालों पर फिराते रहें। दो एक बार इसी क्रिया को करने से छाले नितान्त मिट जायेंगे।

द्वितीय प्रयोग

१ माशा श्वेत जीरा मुख में डाल कर चबायें, थूक सा-

पैदा होगा। थोड़ी देर पश्चात् ४ रत्ती सफेद कत्था चबाएं और थूक को जीभ द्वारा छालों पर फेरते रहें, थोड़ी २ देर पश्चात् थूक को बाहर भी निकालते रहें। ईश्वर कृपा से एक ही बार में पूर्णतया आराम हो जायेगा।

छालों की सर्वोत्तम चिकित्सा

चाहे छाले किसी भी कारण से क्यों न हों, हर प्रकार के छालों के लिए यह सर्वोत्तम चिकित्सा है। एक दो बार के प्रयोग से ही छालों का निशान तक नहीं रह जाता है। इसकी परीक्षा स्वयं मैं भी कर चुका हूं। एक बार मेरे मुंह में इतने जोर से छाले हो गए कि सारा मुख वा जिह्वा छालों से भर गयीं। भोजन का एक ग्रास निगलना भी असम्भव हो गया। मुझे बड़ा कष्ट प्रतीत हुआ। अन्त को मैंने चिकित्सा सम्बन्धी एक अति उत्तम पुस्तक में से यह प्रयोग खोज निकाला। ईश्वर कृपा पहिली बार में ही पर्याप्त लाभ हो गया और दूसरी बार में तो छालों का नाम निशान तक नहीं रह गया। मैं भी इस योग से बड़ा प्रभावित हुआ था, अतः आज पाठकों के लाभार्थ यहां अंकित कर देना उचित समझता हूं।

योग इस प्रकार था

कीकर तथा गोंदनी, दोनों की छाल २-२ तोला लेकर १ सेर पानी में डालकर पकावें, जब आधा पानी शेष रह जाय, तो उतार कर समोष्ण से ही गरारे करें। तत्काल प्रभाव दृष्टिगोचर होगा। बड़ा ही सफल योग है। पहिली ही बार में छालों को मिटा देता है।

तदनुसार

उसी पुस्तक में एक और भी अत्युत्तम सरल प्रयोग अंकित था । ग्रन्थकार ने इस प्रयोग की भी अत्यधिक प्रशंसा की थी । आशा है कि आवश्यकता के समय पाठकों को पर्याप्त लाभ होगा अस्तु उसे भी अंकित किए देता हूं ।

योग इस प्रकार है

अरहर के पत्ते दो तो०, धनिया दो तो०, दोनों को एक सेर पानी में उबालें । जब आधा पानी जल जाए तो नीचे उतार लें, और थोड़ा ठण्डा हो जाने पर यथाविधि गरारे करायें । उसी समय छाले मिट जाते हैं । ग्रन्थकार के कथानुसार सैंकड़ों बार का अनुभूत है ।

छालों के लिए जादू की चुटकी

यह औषधि सचमुच जादू की चुटकी है । पुराने से पुराने छाले भी दो ही दिन में जड़ से मिट जाते हैं, आवश्यकता के समय लाभ उठाएं ।

कागज की राख, सफेद कत्था और फिटकरी, तीनों समान मात्रा में लेकर बारीक पीस लें और आवश्यकता पड़ने पर एक चुटकी मुख में डाल कर जिव्हा की नोक से छालों के ऊपर लगादें । थूक को थोड़ी देर मुख में बन्द रख कर थूक दें । दिन में ३-४ बार और विशेष कर रात को सोते समय इसी क्रिया को करें । ईश्वर कृपा से एक दिन में अन्यथा दूसरे दिन तो निश्चय ही आराम हो जायेगा ।

मुख की दुर्गन्धि

अधिकतर आमाशय की खराबी के कारण लोगों के

मुख से दुर्गन्ध आने लगती है यूं तो जिन लोगों के दांत गन्दे रहते हैं: उनके मुख से दुर्गन्ध आती ही है और उन्हें दन्त प्रकरण में अंकित मंजनों द्वारा पहिले दांत स्वच्छ करने चाहिएं, मुख की दुर्गन्ध स्वतः मिट जायेगी । किन्तु जो लोग दांतों को भली-भांति स्वच्छ रखते हैं कभी-कभी उनके मुख से भी दुर्गन्ध आने लगती है और उसका एकमात्र कारण आमाशय विकृति ही होता है । निम्न प्रयोग ऐसे अवसर पर बड़ा लाभ दिखाते हैं। एक दो दिन में ही दुर्गन्धि मिट कर सुगन्धि आने लगती है।

सर्वोत्तम सुगम प्रयोग

एक तोला मधु (शहद) को १ पाव पानी में मिलाकर गरारे किया करें। ३-४ दिन इसी क्रिया को करते रहें। दुर्गन्धि मिट कर अति मधुर सुगन्धि आयेगी। जब चाहें परीक्षा करें ।

प्रकृति के चमत्कार

प्रकृति की गोद तो ऐसे अनमोल रत्नों से भरी पड़ी हुई है, जिनका कोई मूल्य आंका नहीं जा सकता। इनके अनुपम गुणों को तो वही लोग जानते हैं जो कि उनसे परिचित हो चुके हैं। मुख की दुर्गन्धि दूर करने के लिए हम आपको एक ऐसा ही चमत्कार और अति सरल प्रयोग भेंट करते हैं, लाभ उठावें ।

प्रातःकाल शौचादि से निवृत्त होकर आम की हरी लकड़ी की दांतुन कर लिया करें। बस, दो चार दिन में ही चमत्कार प्रकट हो जाएगा। मुख में दुर्गन्धि का नाम भी न रहेगा ।

मुख दुर्गन्धिनाशक अमीराना विधि

अमीर लोग प्रायः इस विधि से हर दूसरे चौथे दिन लाभ उठाया करते हैं। स्वस्थ व्यक्ति भी यदि कभी २ प्रयोग कर लिया करें तो स्वयं भी मुख की सुगन्धि से आनन्दित रहें और पास बैठने वालों का मन भी मुदित करते रहें। विशेष कर उन लोगों के लिए जिनके मुख से दुर्गन्ध आया करती है, एकमात्र सर्वोत्तम विधि है :—

नींबू का ताजा रस १ भाग, गुलाब जल २ भाग मिला कर नित्यप्रति प्रातः सायं कुल्ले किया करें। इससे न केवल मुख की दुर्गन्धि नष्ट हो कर सुगन्धि आने लगती है अपितु होठों के घाव भी ठीक हो जाते हैं, दांत स्वच्छ हो जाते हैं और मुख सब प्रकार के दोषों से रहित हो जाता है।

गला बैठना

प्रायः कई कारणों से लोगों का गला बैठ जाता है और बेचारे गूंगों की भांति इशारों में बातें करने के लिए विवश हो जाते हैं। निम्नांकित योग बैठे हुए गले को तत्काल खोल देते हैं। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभ उठावें।

प्रथम प्रयोग

प्याज को आग में दबाकर भुरता करलें और प्रथम दो रत्ती सुहागा खिला कर ऊपर से प्याज का भुरता खिलावें, शीघ्र हो आवाज खुल जायेगी।

द्वितीय योग

एक तोला अदरक की गांठ में छिद्र करके उसमें एक

माशा हींग और २ माशा नमक बारीक करके भर दें तथा शेष छिद्र को निकाले हुए भाल से भर दें। फिर इसको आटें में लपेटकर भूभल में दबा दें। जब आटा लाल हो जाए, तो निकाल कर ठण्डा करके आटा अलग करें और अदरक निकाल कर उसकी ८ गोलियां बनालें। प्रातः सायं १-१ गोली मुख में रख कर रस चूसते रहें। एक ही दिन में काफी आराम हो जायेगा। अनेक बार की अनुभूत औषधि है।

एक सरल उपचार

यदि अधिक गाने या जोर २ से बातचीत करने के कारण गला बैठ जाय, तो निम्न योग से लाभ उठायें।

१ तोला कच्चा सुहागा बारीक पीसकर शीशी में रख छोड़ें और आवश्यकता के समय ४ रत्ती मुख में रख कर उसका रस चूसते रहें। ईश्वर कृपा से २-३ घण्टों में ही गला नितान्त साफ हो जायेगा।

खुन्नाक

यह रोग बड़ा ही भयंकर होता है। इसमें रोगी के कण्ठ में शोथ हो जाता है, जिससे रोगी को खाना पीना प्रत्युत सांस लेना भी कठिन हो जाता है। कभी २ तो रोगी की मृत्यु हो जाने की भी आशंका रहती है। इस रोग की उत्पत्ति का मुख्य कारण नजला व जुकाम आदि बिगड़ जाना अथवा कण्ठ का काग गिर जाना होता है। रोगी के गले में बोझ, पीड़ा तथा खुरदरापन होकर बार २ खांसी उठती है, और गले में कुछ अटका हुआ सा प्रतीत होता है, जिसे वह निगल जाने का प्रयास करता है।

खुन्नाक के लिए कुछ विशेषातिविशेष लाभप्रद योग

अंकित किए जाते हैं, जो कि अत्यन्त सरल भी हैं और जादू के समान प्रभावक भी।

अकसीरी प्रयोग

एक तो० रीठे का छिलका, १ माशा फिटकरी दोनों का नियमानुसार क्वाथ बनाकर रोगी के कण्ठ में डाल दें। तत्काल होश आ जायगा। कई बार गरारे भी करावें। यदि अकेले रीठे के गरारे कराए जायें तो भी पर्याप्त लाभ हो। अनुभूत प्रयोग है।

खुन्नाक विषनाशक अगद

इसके एक दो बार के सेवन से खुन्नाक का अन्त हो जायेगा तथा गले की सूजन आदि भी नितान्त मिट जायेगी।

महुआ की खली आवश्यकतानुसार लेकर इसे बारीक पीस लें। आवश्यकता के समय ३ माशा की मात्रा लेकर रोगी के मुख में डालें और ऊपर से एक दो घूंट पानी पिलादें। ईश्वर कृपा से तत्काल प्रभाव दिखाएगा। सैकड़ों रुपयों से मूल्यवान योग है।

अनुभवी चिकित्सक की भेंट

यह प्रयोग एक वयोवृद्ध व अनुभवी चिकित्सक ने प्रदान किया था, जो कि खुन्नाक के लिए रामबाण सिद्ध होता है। उक्त चिकित्सक महोदय खुन्नाक रोगियों की चिकित्सा प्रायः इसी प्रयोग से करते हैं। प्रयोग यह है:—

अमलतास का गूदा १ तो० पावभर समोष्ण जल में घोल कर रोगी को गरारे कराएं। दिन में दो तीन बार कराने से पूर्णतया आराम हो जायेगा। इसी को पानी में

पीसकर थोड़ा गर्म २ ही सूजन पर लेप कर दें। अति शीघ्र लाभ होगा।

अद्भुत चमत्कार

एक अनुभवी वैद्य का कथन था कि यदि खुन्नाक रोगी को गधी के दूध के गरारे कराए जायं, तथा ऊपर से दूध की ही टकोर की जाय, तो ईश्वर कृपा से अति शीघ्र लाभ हो जाता है। यदि गधी का दूध न मिले, तो गाय, भैंस या बकरी का ही दूध ले लें। इससे भी पर्याप्त लाभ होगा।

सरलाति सरल उपचार

प्याज को भली प्रकार घोट कर गले पर ऊपर से लेप कर दें। ईश्वर कृपा से पर्याप्त लाभ होगा। प्रत्यक्षतः यह प्रयोग नितान्त साधारण सा प्रतीत होता है, किन्तु यथावसर प्रभाव में बड़े २ उत्तम योगों से बाजी ले जाता है।

कण्ठमाला

यह बड़ा ही कष्टप्रद रोग है और कभी २ प्राण घातक सिद्ध होता है। इसे अंग्रेजी में स्क्रोफ्ला (Scrofula) कहते हैं। प्रायः वातपित्त और मेद गले के दोनों ओर स्थित होकर कण्ठमाला रोग उत्पन्न कर देते हैं। आधुनिक चिकित्सकों के मतानुसार सिल तथा कण्ठमाला एक ही प्रकार के कीटाणुओं से होते हैं।

कंठमाला के लक्षण

गले में अण्डकोष जैसा दृढ़ शोथ होकर गांठें लटक जाती हैं, ये गांठें गले को माला के समान घेर लेती हैं अतः इस रोग का नाम कंठमाला पड़ गया। किसी रोगी की

गांठें बड़ी होती हैं और किसी २ की छोटी। यह रोग वात, कफ, मेद की भिन्नता के कारण तीन प्रकार का होता है। वात से उत्पन्न कण्ठमाला में पीड़ा अधिक होती है, गले की नसें काली अथवा लाल रहती हैं और गांठें कड़ी होती हैं, जो देर से बढ़ती हैं, शोथ पकता नहीं, रोगी का मुख स्वादहीन रहता है और कंठ तथा तालू शुष्क रहते हैं। कफ से उत्पन्न कंठमाला अंडकोष की भांति लटकता हुआ, भारी और शीतल शोथ होता है, खुजली सी होती रहती है, और पीड़ा कम ही होती है। इसका शोथ देर से बढ़ता और देर से ही पकता है। रोगी के मुख का स्वाद मीठा तथा कंठ व तालु कफयुक्त रहते हैं। मेद कंठमाला में शोथ चिकना, पीला, कोमल, हल्की पीड़ा युक्त होता है, और गले की सन्धि में तुम्बी के समान लटका रहता है। यह जड़ में से पतला होता है। इसमें रोगी का मुख चिकना रहता है और वह गले में बोलता है।

कण्ठमाला की चिकित्सा

यद्यपि हमने कंठमाला को समूल नष्ट करने के लिए "संन्यासी चिकित्सा शास्त्र" में ऐसे जादू असर संन्यासी नाना प्रयोग संग्रह किये हैं, जिन्हें देखकर और परीक्षा करने पर उनका प्रभाव देखकर अच्छे २ वैद्य भी चकित रह गये हैं। किन्तु फिर भी इस पुस्तक में हम वे अति सरल प्रयोग अंकित कर रहे हैं, जिनके बनाने में आपको अधिक पैसा और परिश्रम व्यय न करना पड़ेगा और ईश्वर की कृपा से पूरा २ लाभ होगा। स्मरण रहे कि यहां वही प्रयोग अंकित किये गये हैं जो सैकड़ों बार के अनुभूत हैं, और अगणित

रोगियों का भला कर चुके हैं, अस्तु इनकी सफलता में तनिक भी शंका के लिए स्थान नहीं है।

अत्युत्तम खाद्य औषधि

सिरस के बीजों को बारीक पीसकर उससे दूना शहद मिलाकर मिट्टी के बर्तन में डालकर मुख बन्द करदें और सात दिन पर्यन्त धूप में रखें, और ६ माशे से १ तोला तक की मात्रा रोगी को प्रति दिन खिलाया करें। ईश्वरेच्छया पूर्ण लाभ हो जायगा।

चमत्कारी फल

नागफली बूटी का फल, जिसका रंग ऊदा होता है और स्वाद आम्र की भांति खट्टा होता है, इस रोग के लिए अगद है : रोगी को प्रतिदिन ३-४ फल खिला दिया करें और कुछ पीस कर लेप कर दिया करें। कंठमाला के लिए इससे उत्तम व सुगम योग अन्य न होगा।

कण्ठमाला नाशक अगद

६ माशा हल्दी पीसकर प्रतिदिन रोगी को पानी के साथ खिलाया करें और इसी को घिसकर लेप किया करें। देखने में अति साधारण सा प्रयोग है, किन्तु कंठमाला के लिए अगद सिद्ध होता है। किन्तु कई दिवस पर्यन्त इसका निरन्तर सेवन करना चाहिये।

संन्यासियाना प्रयोग

काले सांप की केंचुली को तिल के तेल में जला कर भली भाँति खरल करके मरहम-सा बनालें और प्रति दिन कंठमाला पर लगाया करें। संन्यासी जी का कथन था मैंने

इसी दवा से सारे देश में घूम २ कर असंख्य रोगियों को ठीक कर दिया है। आज तक यह प्रयोग कभी निष्फल नहीं गया।

दूध का चमत्कार

अनेकों वैद्यों ने परीक्षा करके इस प्रयोग की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है, किन्तु यह उसी समय लाभदायक सिद्ध होता है, जब कि यह कण्ठमाला की गिल्टियां फूट चुकी हों। बिना फूटी हुई गिल्टियों पर तनिक भी लाभ नहीं करता है। विशेषता यह है कि न कोई औषधि है और न कोई बूटी। केवल दूध का चमत्कार है, यथा समय लाभ उठावें।

प्रयोग विधि यह है

दिन में तीन बार केवल दूध की टकोर किया करें, किन्तु प्रतिबार दो घंटे से कम नहीं होने चाहिएं। इस क्रिया के निरन्तर १५-२० दिन तक करते रहने से ईश्वर कृपा से निश्चय ही लाभ हो जाता है। भला कितना सरल उपचार है।

कण्ठमाला नाशक वृक्ष

प्रायः आपने देखा होगा कि पक्की दीवारों के बीच में पीपल का पौधा उग आता है। वह कंठमाला के लिए अमृत-तुल्य गुण रखता है। यह एक महान् संन्यासी ने कंठमाला के एक दयनीय रोगी को बताया था, जिसके द्वारा शीघ्र ही उस रोगी ने पूर्ण स्वस्थ होकर नव जीवन प्राप्त किया था। जिन रोगियों को ऐसा पीपल वृक्ष यथावसर प्राप्त हो जाए, वे इससे अवश्य ही लाभ उठावें। बिना एक भी पैसा व्यय किये सैकड़ों रुपये की औषधियों के समान लाभ प्राप्त करेंगे। कथनानुसार वृक्ष न मिलने की दशा में अन्य प्रयोग अपनावें।

प्रयोग इस प्रकार है

ऐसे पीपल की जड़, जो कि पक्की दीवार में लगा हो और उसकी जड़ अभी तक जमीन पर न पहुंची हो, प्रतिदिन पानी में घिस कर कण्ठमाला की ग्रन्थियों पर लगाया करें। परमात्मा की कृपा से अवश्य ही रोग निवृत्त हो जायगा।

कंठमाला के लिए आश्चर्यजनक अति सरल प्रयोग

प्रथम

फिटकड़ी ३ माशा, अंजीर की लकड़ी की भस्म ६ माशा, पानी ३ माशा में दोनों द्रव्यों को घोट कर ऊपर लेप किया करें। ईश्वर कृपा से कुछ दिन के प्रयोग से ही पूर्णतया लाभ हो जायेगा। सैकड़ों वैद्य इस योग के गुणों पर मुग्ध हैं, और अपने रोगियों को इसी का प्रयोग कराते हैं।

द्वितीय

फिटकड़ी के कोरे कूजे में खील बनाकर अति सूक्ष्म पीसलें और १-१ माशा प्रातः सायं पानी के साथ खिलाने से प्रायः आराम हो जाता है।

तृतीय

यदि ग्रन्थियां फूट कर क्षत हो गये हों, तो फिटकड़ी को पानी में घोलकर उसी पानी से घावों को दिन में दो बार धोया करें। यद्यपि कुछ समय तो लगेगा, किन्तु लाभ अवश्यम्भावी है। कई दिवस पर्यन्त प्रयोग करते रहें।

कण्ठमाला का अन्तिम प्रयोग

यदि दुर्भाग्यवश कोई औषधि सफल न हो रही हो तो अन्त में इस प्रयोग को व्यवहार में लावें। ईश्वर की कृपा से कदापि निष्फल न जायेगा। इस प्रयोग से कई निराश रोगी भी लाभ उठा चुके हैं।

प्रयोग इस प्रकार है

गाय का खुर तथा सींग जला कर बारीक पीसलें और अलसी के तेल में मिलाकर भली प्रकार घोट लें, ताकि मरहम सा बन जाय और नित्य कंठमाला पर लगाया करें। ईश्वरानुग्रह से न केवल कंठमाला रोग मिट जायेगा, वरन् इस रोग के भविष्य में पुनः होने की आशंका भी जाती रहेगी। अद्‌भुत चमत्कारी प्रयोग है।

सीने तथा फेफड़े के रोग

हृदय जैसे उत्तमांग और शरीर-सम्राट् का पंखा है, जिसके द्वारा हम सांस लेते हैं। यदि केवल फेफड़े अपना काम छोड़ दें तो हम कदापि जीवित नहीं रह सकते। फेफड़े का विस्तार से वर्णन हमने अपनी दूसरी पुस्तक "संन्यासी चिकित्सा शास्त्र" के प्रारम्भ पृष्ठों पर ही अंक परिचय में लिखा है, आपने भी उसे पढ़ा ही होगा; अतः यहां हन उसी को दुहराने के बजाय विविध रोगों का वर्णन करते हुए परम लाभकारी योग भेंट कर रहे हैं। जिनसे आवश्यकता के समय आपका पूरा २ कल्याण होगा।

खांसी (कास-रोग)

प्रायः मुंह में दूषित धुम्रां धूल के कण आदि प्रविष्ट हो जाने, रूखा-सूखा तथा बासी भोजन खाने, मल मूत्र तथा छींक आदि को रोक रखने तथा चिकने पदार्थ और मूली आदि खाकर तत्काल ठण्डा पानी पी लेने इत्यादि कारणों से खांसी रोग उत्पन्न हो जाता है। इससे हृदय की प्राणवायु तथा कण्ठस्थ उदान वायु दोनों दूषित हो जाती हैं। कभी २ फेफड़ों की निर्बलता से भी यह रोग उत्पन्न होता है। मस्तिष्क से जो नजला गले में से होता हुआ फेफड़े पर गिरता है, उसके बिषैले प्रभाव से गला और फेफड़ा दोनों ही दूषित हो जाते हैं। फेफड़ा उसे ऊपर की ओर उछालता है और परिणाम स्वरूप खांसी उत्पन्न हो जाती है। वैद्यक शास्त्रों में कास रोग के ५ भेद बताये गये हैं। —१-वात, २-पित्त, ३-कफ, ४-प्रहार, ५-क्षयी। उन ग्रन्थों में इनका वर्णन बहुत ही विस्तार से लिखा गया है जो कि इस छोटी सी पुस्तक में नहीं लिखा जा सकता। अस्तु, हम यूनानी चिकित्सा ग्रन्थों के अनुसार केवल दो प्रमुख भेद ही मान लेते हैं। पहली सूखी खांसी, दूसरी तर खांसी। सूखी खांसी वह है जिस में गले से खांसी के फूटे बर्तन जैसी आवाज निकलती है, किन्तु कफ नहीं निकलता और तर खांसी वह है जिससे गले से कफ भी निकलता है।

हमारे देश में यह रोग बच्चे, युवा व वृद्ध सभी को घेरे रहता है और बहुत अधिकता से पाया जाता है। बड़े आदमी तो उत्तमोत्तम औषधियां आदि सेवन करके इससे त हो जाते हैं, किन्तु बेचारे निर्धन लोग घोर कष्ट में

फ़ंसे रहते हैं। ऐसे ही भाइयों के कल्याणार्थं हम कुछेक शतप्रतिशत लाभकारी और पूर्ण अनुभूत प्रयोग बड़े परिश्रम से संग्रह करके लिख रहे हैं जो कि बड़ी सरलता से बन जाते हैं और जिनके द्रव्यों में या तो एक दो पैसे व्यय करने पड़ते हैं अथवा कुछेक में वह भी नहीं। केवल ईश्वर की बनाई हुई प्रकृति-रूपी डिस्पैन्सरी से दवा लाने का कष्ट भार उठाना पड़ता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी यह पुस्तक तथा 'सन्यासो चिकित्सा शास्त्र' दोनों ही देश के निर्धन भाईयों का पर्याप्त हित-सम्पादन करने में समर्थ होंगी। यदि आप लोगों की शुभ कामनाएं हमारे साथ रहीं तो हम इसी प्रकार निरन्तर आपकी सेवा करते रहेंगे। अच्छा अब खांसी के उत्तमोत्तम प्रयोग स्वीकार करिये।

खांसी की मधुर पुड़िया

भुनी हुई फिटकड़ी १ तोला, देशी खाँड १० तोला दोनों को सूक्ष्म पीसकर मिलावें, और बराबर २ मात्रा की १४ पुड़ियां बनालें। तर खाँसी वाले रोगियों को गरम पानी के साथ और सूखी खांसी वाले रोगी को गरम दूध के साथ सेवन कराएं। दो सप्ताह के अन्दर २ पुरानी खाँसी भी दूर हो जाती है। देहाती फार्मेसी में प्रायः खाँसी के रोगियों को यही पुड़िया दी जाती है। सैकड़ों रोगियों पर परीक्षित सफल औषधि है।

कासघ्न वटी

ये गोलियाँ भी हर प्रकार की खांसी को २-३ दिन

में ही जड़ से मिटा देती हैं। यह योग उन विशेषातिविशेष योगों में से है, जिसे अधिकतर वैद्य लोग बनाकर सुन्दर पैंकिग में बन्द करके बेचते और सैकड़ों रुपये का लाभ उठाते हैं। चूंकि गुण में अनुपम प्रभावक है, अतः रोगी सहर्ष एक पैसे की दवा के चार आने दे जाते हैं। आप इन गोलियों को विना किसी विशेष परिश्रम अथवा व्यय के स्वयं घर पर ही बना कर अपूर्व लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जब चाहें परीक्षा कर देखें।

योग इस प्रकार है

फिटकरी भुनी हुई ३ माशा, पान के पत्तें ७ नग दोनों के बारीक पीसकर पानी की मदद से जंगली बेर के परिमाण की गोलियां बनालें, और एक गोली से दो गोली तक रोगी की अवस्थानुसार पानी के साथ सेवन करायें। ईश्वर की कृपा से एक दो दिन में ही कष्ट से छुटकारा मिल जायेगा।

कासमर्दन वटी

यह योग क्या है, प्रत्युत प्रकृति का चमत्कार है। स्वयं परीक्षा करने पर ही आप जान सकेंगे कि इस साधारण सी वस्तु में कितने मूल्यवान गुण छिपे हुए हैं। विशेषता यह है कि औषधि बनाने में एक भी पैसा व्यय नहीं होता और खाँसी के लिए अक्सीर तैयार हो जाती है।

योग इस प्रकार है

पीपल के पत्तों को छाया में सुखावें, और बारीक

पीसकर इसमें थोड़ा सा कीकर का गोंद मिलाकर पानी की सहायता से गोलियाँ बना लें और कास-रोगी को दें वह मुंह में रखकर चूसता रहे और उनका रस निगलता रहे । ईश्वर की कृपा से दो दिन तक निरन्तर इन्हीं गोलियों को चूसते रहने से हर प्रकार की खांसी जड़ मूल से जाती रहेगी ।

कास नाशक क्वाथ

देखने में साधारण सा है, किन्तु लाभ में अनुपम अपितु परमात्मा की दयालुता का प्रत्यक्ष प्रमाण है, जिसने हम गरीबों के कल्याणार्थ इन सर्वप्राप्य वृक्षों में ही वन्दनीय गुण और प्रभाव भर दिये हैं ।

कीकर की छाल उतार कर छाया में सुखालें, और आवश्यकता के समय उसमें से १ तो० लेकर पाव भर जल में उबालें । एक छटाँक जल शेष रह जाय, तो उतार कर गरम २ ही रोगी को पिलायें । कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से पुरानी से पुरानी और कठिन से कठिन खाँसी भी दूर हो जाती है ।

कासघ्न अक्सीर गुटी

ये गोलियाँ भी खांसी को दूर करने में अक्सीरी प्रभाव रखती हैं । शतशोनुभूत हैं, लाभ उठावें ।

धतूरे के बीज और पीपली, दोनों को बराबर मात्रा में लेकर अति सूक्ष्म पीस लें तथा गोंद के पानी के साथ

उड़द के दाने बराबर गोलियाँ बनायें और सुखाकर शीशी में रखलें। आवश्यकता के समय २ गोलियाँ प्रात:काल पानी के साथ सेवन करायें। कुछ ही दिनों में खांसी का नाम भी न रह जायेगा।

कफज कास का सर्वोत्तम योग

कफजनित खांसी के लिए यह योग विशेषातिविशेष लाभकारी और अनुभूत है। यह योग हमारे एक मित्र वैद्य महोदय को श्री दीवान बोघाराम जी से प्राप्त हुआ था, जो कि न केवल खांसी, अपितु श्वास तक के लिए संजीवनी सिद्ध हुआ है। मेरे विचार से इतना सरल और ऐसा लाभकारी योग शायद ही दूसरा मिल सके। आवश्यकता के समय परीक्षा करें।

योग इस प्रकार है

अत्युत्तम खांड आवश्यकतानुसार लेकर किसी चीनी के पात्र में डालें, और ऊपर से आक का दूध इतना डालें कि खांड तर हो जावे। इसे किसी कपड़े से ढक कर रखदें, और जब खुश्क हो जावे तो पुन: तर करके सुखायें फिर इसे तवे पर रख कर नीचे आग जलावें। जब जल जाये तो अति सूक्ष्म पीसलें। तथा नित्यप्रति एक समय १ चावल से १ रत्ती तक की मात्रा मक्खन में रख कर रोगी को खिलाया करें ईश्वर की कृपा से वर्षों की खांसी एक सप्ताह में जाती रहेगी यहां तक कि निरन्तर कुछ अधिक दिनों तक सेवन करने से दमा (श्वास) तक को आराम हो जाता है।

सूखी खांसी के लिये विशेष लाभप्रद अति सरल चुटकुले

प्रथम

हल्दी की गांठ को भून कर चूर्ण बनालें और प्रातः समय ३ माशा की मात्रा फंका दिया करें। ईश्वर कृपा २-४ दिन में ही सूखी खाँसी को पर्याप्त लाभ हो जायेगा।

द्वितीय

बीहदाना के साबुत दाने मुंह में डालकर उनका रस चूसते रहें, कुछ ही दिनों में खांसी दूर हो जाएगी।

तृतीय

मकई का तिनका, जो दाने निकालने के बाद रह जाता है जला कर पीसलें और समभाग खांड मिला कर रखें। मात्रा ३-३ माशा, प्रातःसाय ताजा जल के साथ दें हर प्रकार की खांसी के लिये परम लाभप्रद है।

चतुर्थ

इस बात को सभी चिकित्सा पद्धति के लोग एक स्वर से अंगीकार कर चुके हैं कि बांसापत्र कास तथा श्वास रोग के लिए अनुपम गुण रखता है। वैद्यक ग्रंथों में तो यहाँ तक लिखा है कि जिस स्थान में बांसापत्र जैसी अद्वितीय बूटी उत्पन्न होती है, उस स्थान में कास तथा श्वास रोग पैदा ही नहीं हो सकते।

प्रयोग

आवश्यकतानुसार हरे बांसापत्र लेकर भीगे कपड़े में लपेट कर ऊपर से मिट्टी का लेप करदें और भूभल में दबा दें। जब तक मिट्टी लाल हो जाय, तो निकाल कर बांसा-पत्र का रस निचोड़ लें और शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय ६ माशा रस में ६ माशा शहद मिला कर प्रातःसायं रोगी को पिलाया करें। कुछ ही दिनों में हर प्रकार की खांसी दूर हो जायेगी।

दमा (श्वास)

कहावत प्रसिद्ध है कि 'दमा दम के साथ जाता है' यह नितान्त सत्य तो नहीं, हां इतनी सत्यता अवश्य है कि यह रोग बड़ा ही दुस्साध्य है। एक बार जिसे लग जाता है, कठिनता से ही उसका पीछा छोड़ता है। इसमें फेफड़े की सूक्ष्म वायु नलियों में खिचाव उत्पन्न होने से श्वास बड़ी कठिनता से आता है, और रोगी घोर कष्ट अनुभव करता है।

रोगोत्पत्ति के कारण

उष्ण, वातल, भारी, रूखा तथा बासी भोजन खाने मुख में धुवांधूल आदि भर जाने, तेजाब आदि के विषैले धूम्र का प्रवेश, श्रम मार्ग गमन, मल मूत्र रोकने से श्वास रोग हो जाता है अथवा प्रतिश्याय, खांसी व निमोनिया आदि बिगड़ जाने से फेफड़ों में कफ उत्पन्न हो जाने से श्वास रोग हो जाता है। किसी २ रोगी को यह पैतृक सम्पति के रूप में मिला हुआ होता है। श्वास रोग ५

प्रकार का होता है-(१) महाश्वास (२) उर्ध्वश्वास (३) छिन्नश्वास (४) तमकश्वास (५) क्षुद्रश्वास। किन्तु यहां हम केवल दो प्रमुख भेद ही खांसी की भांति मान कर चिकित्सा लिखेंगे। पहिला भेद है-आर्द्र श्वास (तर), और दूसरा—शुष्क (सूखा)।

श्वास के लक्षण

हृदय में पीड़ा, शूल, अफारा, कोष्ठबद्धता, मलमूत्रावरोध, मुख स्वादहीन, थोड़ी खांसी तथा श्वास खिचने की वेदना होती है और श्वास लेने में कष्ट होता है, कनपटियों में पीड़ा होती है। ये श्वास रोग के पूर्व लक्षण हैं।

कुछ दिनों पश्चात् छाती घुट जाती है, सारे शरीर में कफ बढ़कर नसों को रोकता है, वायु का बहाव बन्द होकर श्वास वेग से चलने लगता है, और श्वास लेने में रोगी को घोर कष्ट होता है। श्वेत वर्ण का पतला मूत्र बार २ आने लगता है। रोगी प्रायःबैठा अथवा वस्तु के सहारे खड़ा रहता है। ये ही श्वास रोग के लक्षण हैं।

अशुभ लक्षण

यदि रोगी के नख हरे हो जायं और स्वर पतला हो जाय, तो ऐसे रोगी को असाध्य, प्रत्युत कुछ दिनों का ही मेहमान समझ लेना चाहिए।

श्वासकी सर्वोत्तम चिकित्सा

सभी लोग जानते हैं कि श्वास रोग यदि असाध्य नहीं, तो कष्टसाध्य तो है ही। हर वैद्य इसकी सफल चिकित्सा

नहीं कर सकता। और सभी वैद्य इस बात को भी मानते हैं कि श्वास के रोगियों को संन्यासियों द्वारा खोजे हुए प्रयोग जो चमत्कारी लाभ पहुंचाते हैं, वह आयुर्वेद अथवा यूनानी चिकित्सा के उत्तमोत्तम योग भी नहीं पहुंचाते। कई बार संन्यासियों ने इस कष्टसाध्य रोग को १-२ दिन में ही जड़ से उखाड़ कर दिखाया है, और इसीलिए आज भी उनका यश सर्वत्र व्याप्त है। ऐसे ही के विशेष गुप्त प्रयोग हमने बड़े परिश्रम से खोज २ कर 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में अंकित कर दिए हैं। जो कि दमा के लिए निस्सन्देह सर्वोपरि प्रयोग हैं।

सामान्य जड़ी का चमत्कार

कुछ वर्ष पूर्व हमारे एक मित्र के छोटे भाई साहब श्वास रोग से ग्रसित हो गए। श्वास रोग के कष्ट को तो आप सभी लोग समझते होंगे। बेचारे दिन रात चैन न पाते थे। बहुतेरा इलाज कराया गया, उत्तमोत्तम आयुर्वेदिक योग सेवन कराए गए, क्योंकि हमारे मित्र महोदय स्वयं ही वैद्य हैं, किन्तु लाभ तो क्या ? रोग में किंचित मात्र अभाव भी न हुआ। घर के सभी लोग परेशान थे। संयोग वश एक दिन एक महाशय उनके यहां आए। जब उन्होंने यह सब देखा, तो दयालु होकर उन्होंने अपने हृदय का वह गुप्तातिगुप्त प्रयोग प्रकट कर ही दिया, जो कि उन्हें कई वर्ष पूर्व किसी संन्यासी ने बताया था। परीक्षा करने पर यह प्रयोग अक्सीर सिद्ध हुआ और कुछ ही दिनों में उन मित्र वैद्य के छोटे भाई नितान्त रोग मुक्त हो गए। आज वही अति सरल प्रयोग प्राप्त करके मैं आप लोगों को भेंट कर रहा हूँ परीक्षा करके लाभ उठावें।

प्रयोग इस प्रकार है

भूई फोड़ (एक जड़दार जड़ी है जोकि बहावल पुर के निकटवर्ती क्षेत्र में मिलती है, और प्रत्येक मनुष्य इसको इसी नाम से जानता है) इसको प्राप्त करके उसमें से २–३ माशा लेकर तम्बाकू के बीच में रख कर रोगी को हुक्के में पिलावें। बस उसी दिन से बलगमी दमा से छुटकारा मिल जायेगा। हां यदि रोग पुराना हो, तो निरन्तर २-४ दिन तक इसी प्रकार पिलायें।

एक ही दिन में श्वास का शर्तिया इलाज
श्वास रसायन चूर्ण

एक सज्जन दमा का इलाज शर्त के साथ किया करते थे। उनकी चिकित्सा कभी निष्फल नहीं जाती थी और दूर २ तक उनकी ख्याति फैली हुई थी। बड़े प्रयत्न से हमारे एक परिचित हकीम जी ने उनका प्रयोग प्राप्त कर पाया। आशा है कि परम लाभप्रद, वरन् अचूक रामबाण सिद्ध होगा। किन्तु ध्यान रहे कि इस प्रयोग को हर साधारण व्यक्ति प्रयोग में लाने का साहस न करे। केवल विद्वान् वैद्य, हकीम ही तनिक सावधानी के साथ प्रयोग कराएं। क्योंकि औषधि बहुत तेज है।

प्रयोग इस प्रकार है

इन्द्रायण के पके फल लेकर उनके बीज निकाल दें और गूदे को छाया में सुखालें तथा पीसकर चूर्ण बना लें। बस औषधि तैयार है।

सेवन विधि इस प्रकार है

आवश्यकता के समय शक्तिवान् रोगी को तीन दिन पहिले गेहूं का दलिया आदि नरम भोजन करायें, और फिर इस चूर्ण में से एक तोला मात्रा गरम पानी से दे दें। फिर १-१ घंटे के अन्तर से दो बार और दे दें। अर्थात् दिन में तीन बार दें। इससे खूब खुल कर वमन होगा, और कफ की जमी हुई गांठें निकलेंगी, तथा दस्त भी होंगे। बस एक ही दिन में पूर्णतया लाभ हो जायगा। किन्तु एक सप्ताह तक घी और खांड मिला कर रोगी को खिलायें, रोटी बिलकुल न दें।

विशेष सूचना

यदि रोगी निर्बल हो, तो उसको दवा १-१ तोला के हिसाब से तीन दिन में दें। ऐसे रोगी को एक ही दिन में कदापि सेवन न करायें।

मजिस्ट्रेट साहब का अनुभूत प्रयोग

यह श्रीयुत् हकीम महबूब आलम खां साहब मजिस्ट्रेट ने हमारे एक परम मित्र वैद्य महोदय को प्रदान किया था, जो कि उनका अनेक बार का परीक्षित व साधारण वस्तु से बनने वाला है। जो सज्जन इसकी परीक्षा करेंगे, उन्हें निश्चय ही सफलता मिलेगी।

प्रयोग इस प्रकार है

कड़वी तम्बाकू की बटी हुई रस्सी, जिसे कि गांव वाले

अपनी भाषा में तम्बाकू का बीड़ा कहते हैं, लगभग आधा सेर के परिमाण में लेकर उसे उपलों की आग में जलालें, ताकि भली प्रकार जल जाये। फिर इस राख को अठगुने जल में भिगो कर किसी सुरक्षित स्थान में रखदें और दिन में तीन बार हिला दिया करें। तीसरे दिन ऊपर से निथरा हुआ पानी किसी कड़ाही में डालकर आग पर पकावें। जब पकते २ सारा पानी जल जाए और केवल थोड़ा सा क्षार रह जाय, उतार कर उसे शीशी में सुरक्षित रखलें। आवश्यकता के समय १ रत्ती क्षार को पान के पत्ते में रख कर रोगी को खिलाया करें। ईश्वर कृपा से कुछ दिनों में ही श्वास रोग जड़ मूल से जाता रहेगा। खटाई और तेल की वस्तुओं से परहेज रखना आवश्यक है।

ग्रामीण प्रयोग

हमारे गांव के एक वयोवृद्ध सज्जन ने एक बार किसी श्वास के रोगी को इसी प्रयोग द्वारा कुछ ही दिनों में स्वस्थ कर दिया था। तब से वह दूर २ तक प्रसिद्ध हो गये हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि ऐसा अचूक प्रयोग उन्हें कहां से और किस प्रकार प्राप्त हुआ था, किन्तु निस्सन्देह श्वास जैसे दुस्साध्य रोग के लिए ऐसा सरल और चमत्कारी प्रयोग शायद ही दूसरा मिल सके।

प्रयोग इस प्रकार है

प्रथम बार ही बचचा देने वाली गाय का दूध निकाल कर उसी दम रोगी को पिला दिया करें। बस, ईश्वर कृपा से एक ही बार में पूर्णतया लाभ हो जायगा। इस चिकित्सा

से उक्त सज्जन अनेक रोगियों को छुटकारा दिला चुके हैं। किन्तु यह ध्यान रहे कि कोमल प्रकृति वाले रोगियों को इस प्रयोग से बचे रहना चाहिए।

केवल दस दिन में श्वास को जड़ से मिटाने वाला अद्भुत संन्यासी प्रयोग

यद्यपि यह प्रयोग हम अपने प्रिय पाठकों को 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' नामक पुस्तक में भी भेंट कर चुके हैं, तथापि श्वास की सर्वोत्तम अक्सीर सिद्ध होने के कारण यहां पुनः लिखा जाता है, ताकि अधिक-से-अधिक लोग इससे लाभ प्राप्त कर सकें। यह संन्यासियों का एक विशेषातिविशेष गुप्त रहस्य है, जिसे वह सैकड़ों रुपयों के बदले भी बताने को तैयार नहीं होते।

प्रयोग इस प्रकार है

लगभग १ सेर जंगली प्याज कद्दू कस करके किसी मिट्टी के कोरे कूजे में डालें, और ऊपर से उत्तम प्रकार का नितान्त शुद्ध सिरका लगभग २ सेर डाल कर कूजे के मुख को कपड़मिट्टी करके कूड़े के ढेर में दबा दें, तथा ४० दिवस पर्यन्त दबा रहने दें। तदन्तर निकाल कर कपड़े में छान लें। इस अर्क से दोगुनी देशी खांड मिलाकर मन्द २ आंच पर मिला लें, ताकि चटनी की भांति हो जाये। फिर उतार कर किसी स्वच्छ बर्तन में रख लें और १ तोला की मात्रा नित्य प्रातः काल रोगी को निराहार मुख पिला दिया करें। किन्तु यदि सूखा श्वास हो, तो ऊपर से अर्क गाव-

जवां मिला दिया करें। निश्चय ही केवल ८-१० दिन में श्वास रोग जड़मूल से जाता रहेगा।

पुराने से पुराने श्वास के लिये अक्सीर अद्भुत बूटी

एक बूटी, जिसे वैद्यक भाषा में अपामार्ग बूटी कहते हैं, और साधारण बोलचाल में इसे लटजीरा अथवा कहीं २ चिरचिटा भी बोलते हैं, इसके कांटे भूमि की ओर उल्टे मुड़े हुए होते हैं, श्वास रोग के लिए अक्सीर सिद्ध हुई है। प्रायः नामी वैद्य, जो कि समस्त रोगों की चिकित्सा बूटियों आदि से ही करते हैं, इस बूटी के चमत्कार को भली-भांति जानते हैं, और हजारों रोगियों को इसी से रोग मुक्त करके वे अपूर्व यश प्राप्त कर चुके हैं। सौभाग्यवश एक ऐसे ही प्रख्यात वैद्य महोदय के द्वारा यह प्रयोग हमें प्राप्त हो सका। चूंकि बिना एक भी पैसा व्यय किये इस बूटी से दमे का शर्तिया इलाज किया जा सकता है, अस्तु ऐसे उत्तम प्रयोग को हम अपने देशवासियों व प्रिय पाठकों से छुपा कर नहीं रख सकते। इस पुस्तक में वह अनमोल प्रयोग भी भेंट किये देते हैं। आशा है आपके लिए कल्याणप्रद सिद्ध होगा।

प्रयोग इस प्रकार है

अपामार्ग बूटी १० तोला, सज्जी, तम्बाकू १०-१० तोला, ऊंट का मूत्र ३० तोला।

निर्माण विधि

तीनों औषधियों को भली-भांति बारीक पीस कर ऊंट के मूत्र में मिलावें और पुनः बारीक पीसें । फिर उसे किसी कोरे मृत्तका-पात्र में डाल कर उसके मुंह को कपरौटी करके नम स्थान में सुरक्षित रूप से रख दें । २-३ दिन में श्वेत वर्ण का जौहर पात्र के चारों ओर निकलने लगेगा । उसे ध्यान पूर्वक उतार कर शीशी में सुरक्षित रख लें । बस यही अक्सीर औषधि तैयार है । किन्तु ध्यान रहे कि शीशी के मुंह पर खूब पुष्ट डाट लगा कर रखें, क्योंकि वायु लगने से यह जौहर पानी बन कर बह जाता है ।

इसकी सेवन विधि यह है

१ रत्ती से २ रत्ती तक की मात्रा प्रतिदिन अवगाव-जवां के साथ पिलाया करें और औषधि के सेवनकाल में शक्ति के अनुसार अधिक-से-अधिक गर्म करके पीते रहें । ईश्वर कृपा से कुछ ही दिनों में पुरानी से पुरानी खांसी, काली खांसी तथा श्वास आदि रोग जड़ से मिट जाते हैं । किन्तु अधिक सपथ्य सेवन करनी चाहिये । अचूक औषधि है । कभी परीक्षा कर देखें ।

श्वास मुक्तिदाता लवण

प्रायः श्वास रोगी की छाती के भीतर कफ जमा हो जाता है । रोगी बार २ खांसता है, किन्तु किसी प्रकार कफ नहीं निकलता । उस समय रोगी को बड़ा कष्ट होता है ।

ऐसी दशा में यह योग बड़ा ही प्रभाव दिखाता है। इसकी एक दो मात्राओं से ही सारा कफ निकल कर छाती साफ हो जाती है। रोगी को चैन पड़ जाता है, और कुछ दिन के निरन्तर सेवन से तो श्वास रोग से सदा के लिए मुक्ति मिल जाती है। देहाती फार्मेसी के वैद्य जी भी इस औषधि को बनाकर हर समय अपनी फार्मेसी में रखते हैं और बलगमी श्वास के रोगियों को तथाकथित अवस्था में सेवन कराके तत्काल आराम पहुंचा देते हैं। यही कारण है कि रोगी को उनकी चिकित्सा पर दृढ़ विश्वास जम जाता है।

अत्युत्तम वैद्यक प्रयोग

यह योग भी बड़ा ही प्रभावक है। इससे दीर्घकाल के लिए श्वास का दौरा रुक जाता है, और कई भाग्यवानों का रोग तो सदा के लिए निर्मूल ही हो गया है। इस योग में भी कोई बहुमूल्य द्रव्य सम्मिलित नहीं है। हर व्यक्ति अपने गांव व घर पर ही बना सकता है। हां थोड़ा-सा परिश्रम अवश्य करना पड़ता है।

योग इस प्रकार है

आवश्यकतानुसार फिटकड़ी लेकर किसी बर्तन में डालें, और ऊपर से आक का दूध इतना डालें कि फिटकड़ी भली प्रकार तर हो जाय। अब इस बर्तन को किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। जब दूध सूख जाय तो पुनः डाल दें। इसी प्रकार क्रमशः तीन बार तक करें और सुखायें। तदनन्तर किसी मिट्टी के कूंजे में डाल मुख को सराव-सम्पुट करके ६-७ सेर उपलों को आंच देनी चाहिये। यदि

फिटकड़ी श्वेत (सफेद) वर्ण की हो तो तैयार समझें, अन्यथा पुनः आंच देवें। और फिर बारीक पीस कर शीशी में डाल रखें। और आवश्यकता के समय २ रत्ती से ४ रत्ती तक की मात्रा में रोगी को दिया करें। यदि रोगी को तर श्वास हो अर्थात् कफ निकलता हो, तो औषधि खांड में मिलाकर दें और यदि शुष्क श्वास हो तो मक्खन में मिलाकर दिया करें। ईश्वर कृपा से केवल १५ दिन के निरन्तर सेवन से ही श्वास निर्मूल हो जायेगा। इसके अतिरिक्त हर प्रकार की खांसी के लिए भी यह अपूर्व योग है। यथा समय परीक्षा कर देखें।

तदनुसार

फिटकड़ी का एक और ऐसा ही चमत्कारी प्रयोग आप लोगों को भेंट किया जाता है जो कि अनेक वैद्यों द्वारा परीक्षित है, और प्रायः बड़े २ उत्तम प्रयोगों से भी बढ़कर सिद्ध होता।

डंका कोहर की ताजा लकड़ी में छेद कर उसमें १ तोला फिटकरी डाल दें और मिट्टी से लेप करके २ सेर उपलों की आंच दें। जब ठंडी हो जाय, तो फिटकड़ी को निकालकर अति सूक्ष्म पीस लें। आवश्यकता के समय तनिक-सी औषधि पान में रख कर खाया करें। किन्तु पान पर कत्था या चूना न लगावें। ईश्वर की कृपा से हर प्रकार के श्वास को जड़ मूल से दूर कर देगी।

श्वासहारी वटी

यद्यपि ऊपर हम श्वास रोग के उत्तमोत्तम प्रयोग

आपको भेंट कर चुके हैं, तथापि यह योग भी बड़ा ही गुण-कारी है और शतशोनुभूत है।

योग इस प्रकार है

खिरनी के बीज ६ माशा, काली मिर्च १ तोला। दोनों को अति सूक्ष्म पीस कर गोंद के रस से १-१ रत्ती की गोलियां बना लें और सावधानी से शीशी में रखें। आवश्यकता के समय ३-४ गोलियां दिन भर में पानी के साथ सेवन करा दिया करें। प्रभु कृपा से रोगी शीघ्र ही रोगमुक्त हो जायेगा।

श्वास रोग के लिए दर्प्य चिकित्सा
प्राकृतिक उपचार

एक जंगली कबूतर का पेट चीर कर अन्दर से मल आदि निकालकर स्वच्छ कर दें। तदनन्तर १ छटांक काला लवण लगभग १० तोला आक के दूध के साथ भली भांति घोटें और इसे उस कबूतर के पेट में भर कर गेहूँ के आटे से भली प्रकार बन्द करदें। फिर मिट्टी के कूंजे में डालकर कपरौटी करें। जब शुष्क हो जाय तो १ मन उपलों की आँच दें और ठण्डा होने पर कूंजे को उपलों के बीच में से निकाल लें और जला हुआ आटा आदि अलग करके भली भांति खरल करें और सूक्ष्मतम हो जाने पर शीशी में सुरक्षित रखलें तथा आवश्यकता के समय १ रत्ती से २ रत्ती तक औषधि पानी के साथ सेवन करायें। ईश्वर कृपा से कुछ दिन के निरन्तर सेवन से हर प्रकार का श्वास रोग जड़ मूल से जाता रहेगा।

अति सरल प्रयोग

हमारे एक मित्र वैद्य महोदय ने इस अति सुगम प्रयोग द्वारा ही एक बुढ़िया के १० वर्ष पुराने श्वास रोग को जड़ मूल से दूर कर दिया था। परन्तु इसमें समय कुछ अधिक लगता है। किन्तु यदि एक मास पर्यन्त निरन्तर सेवन किया जाय तो निश्चय ही स्वास्थ्य लाभ हो जाता है। उक्त वैद्य महोदय का कथन है कि यदि रोगी धैर्यपूर्वक इस औषधि को सेवन करता रहे तो कठिन श्वास रोग भी निर्मूल हो सकता है।

प्रयोग इस प्रकार है

१ मुट्ठी भर ईसबगोल साबत ही प्रतिदिन प्रातः काल गाय के दूध के साथ दिया करें। बस निश्चय ही लाभ होगा।

सैकड़ों वर्ष प्राचीन शाही संचिका का प्रशंसनीय प्रयोग

यह प्रयोग एक सैकड़ों वर्ष प्राचीन शाही संचिका से उद्धृत किया गया है। बड़े-बड़े विद्वान वैद्यों ने इसकी परीक्षा करके अत्यधिक प्रभावक और लाभप्रद पाया है विशेषता यह है कि उत्तमोत्तम योगों का समकक्षी होने पर भी नितान्त साधारण द्रव्यों से बनता है, जो की हर गांव में प्राप्त हो सकते हैं।

अति सुगम प्राकृतिक प्रयोग

प्रथम

यह प्रयोग मौलवी निजामुद्दीन साहब ने हमारे एक मित्र वैद्य महोदय को प्रदान किया था, जो कि अनेक बार का परीक्षित है।

२ सेर पीपल की छाल के २ भाग करके १ भाग को ४ सेर पानी में भिगोकर रख दें और दूसरे भाग को ४ सेर पानी में डालकर उबालें। जब २ सेर पानी शेष रह जाय, तो दोनों पात्रों के पानी को मिला दें और किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर मिट्टी धूल आदि से सुरक्षित स्थान में रखें। आवश्यकता के समय १० तोला प्रातः तथा १० तोला सायं निथारा हुआ पानी लेकर श्वास रोगी को प्रतिदिन निरन्तर पिलाते रहें। कई दिन के निरन्तर सेवन से ईश्वर कृपा से श्वास रोग जड़ से चला जायेगा।

द्वितीय

पीपल के फल छाया में सुखा कर रख लें और आवश्यकता के समय एक मुट्ठी भर प्रतिदिन प्रातःकाल पानी के साथ खिलाया करें। ईश्वर कृपा से १४ दिन में रोग निर्मूल हो जाएगा।

केवल ५ मिनट में श्वास का दौरा रोकने वाली चमत्कारी सिगरेट

यही सिगरेटें विदेशों से आकर हमारे यहां बहुत मंहगे

दामों पर विक्रय होती हैं। अब आप यदि चाहें तो इन्हें स्वयं बहुत कम मूल्य पर बनाकर तैयार कर सकते हैं। इस सिगरेट को पीते ही जोर-जोर से खांसी आकर अन्दर से जमा हुआ कफ निकल कर आसानी से सांस आने लगती है और ५ मिनट के अन्दर-अन्दर स्वास का दौरा रुक जाता है। प्रयोग इस प्रकार है—

धतूरे के पत्तों को खरल में डालकर भली-भांति पीसकर लेई सी बना लें और एक कोरे कागज के टुकड़े पर पलस्तर के समान बिछा दें। सूख जाने पर छोटे २ सिगरेट बना लें। तथा आवश्यकता के समय रोगी को कश खिचवाएं। आधी सिगरेट पीते ही खांसी उठेगी, कफ निकल जाएगा और आराम हो जाएगा।

तदनुसार

बिल्कुल उसी प्रकार का यह दूसरा प्रयोग उससे भी बढ़कर है। चाहे दौरे के कारण श्वास रोगी की दशा कैसी ही चिन्ताजनक क्यों न हो रही हो, इसमे केवल २ मिनट में ही दौरा रुक जाता है और रोगी को आराम हो जाता है।

योग इस प्रकार है

धतूरे के पत्ते, भांग के पत्ते, और कलमी शोरा, इन तीनों को सामान भाग में लेकर, कूटकर मोटा-मोटा चूर्ण बना लें। आवश्यकता के समय इस में से एक चुटकी चूर्ण चिलम में रखकर रोगी को कश लगवायें। धुआं अन्दर

जाने के २ मिनट बाद ही खांसी उठकर जमा हुआ कफ बाहर निकल जायेगा और तत्काल दौरा रुक जाएगा।

श्वासहर गुटी

आक के लौंग, छोटी पीपल, सैंधव लवण प्रत्येक २-२ तोले लेकर अत्यन्त सूक्ष्म पीस लें और जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें।

सेवन विधि इस प्रकार है

१-१ गोली नित्य प्रातःकाल गरम पानी के साथ दिया करें। कुछ ही दिनों में श्वास रोग जाता रहेगा।

एक और रामबाण प्रयोग

आक की कली आवश्यकतानुसार लेकर प्रत्येक कली में १-१ काली मिर्च रख कर बन्द कर दें और फिर मिट्टी के कूंजे के नीचे ऊपर नमक रख कर कूंजे के मुंह पर मुड़ा देकर तन्दूर में रख दें और प्रातः निकाल लें। इसे सावधानी से बारीक पीसकर शीशी में रखें यह अवसीर दवा है।

सेवन विधि यह है

४ रत्ती मात्रा पान अथवा अर्क गाजबां के साथ खिलावें। यद्यपि दवा देखने में अति सरल प्रतीत होती है, परन्तु लाभ की दृष्टि से उत्तमोत्तम प्रयोग से बाजी मार ले जाती है। किन्तु यह नए श्वास पर इतना लाभ नहीं पहुंचाती, जितना कि पुराने रोग के लिए लाभप्रद है।

एक और अनुपम योग

आवश्यकतानुसार चोआ सज्जी किसी मिट्टी के कूंजे में रखकर ऊपर से आक का दूध इतना डालें कि सज्जी पर २ अंगुल चढ़ जाये। फिर इसको रख दें। जब वह सम्पूर्ण दूध सूख जाये तो पुनः भर दें। इस प्रकार तीन बार भीगी सूखी करें। तत्पश्चात् कूंजे को कपड़मिट्टी करके ५ सेर उपलों की आग दे और ठंडी होने पर बारीक पीस कर सुरक्षित रखें। यह श्वास रोग की आश्चर्यजनक औषधि है।

इसकी सेवन विधि इस प्रकार है

उपरोक्त औषधि में से १ रत्ती दवा बताशे या पान में रख कर दिया करें। ईश्वर कृपा से कुछ दिनों में ही श्वास रोग जड़ मूल से दूर हो जायेगा।

विशेष सूचना

श्वास के लिये 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में वर्णित प्रयोग अचूक सिद्ध हुए हैं, अतः उनकी परीक्षा भी अवश्य करें।

पार्श्वशूल तथा निमोनिया

सामान्य व्यक्ति पार्श्वशूल और निमोनिया को एक ही रोग समझते हैं, यह उनकी अज्ञानता है। यथार्थतः पार्श्वशूल और निमोनिया में बहुत अन्तर है, निमोनिया फेफड़े की सूजन को कहते हैं और पार्श्वशूल केवल परत

की सूजन को कहते हैं। इन दोनों की पहचान करने के लिए हम निमोनिया के दो विशेष लक्षण यहां लिखते हैं। जिनसे कि हर जनसाधारण भी सही निदान कर सकता है।

निमोनिया के दो विशेष लक्षण

१. निमोनिया के रोगी का जो फेफड़ा सूजा हुआ होगा ठीक उसी ओर की कनपटी भी लालीयुक्त होगी।

२. दूसरा यह कि जिस ओर का फेफड़ा सूजा होगा उसी ओर का नथना भी सांस के साथ फूलता हुआ प्रतीत होगा। ये दोनों निमोनिया के पक्के लक्षण हैं।

निमोनिया के शुभ-अशुभ लक्षण

यदि निमोनिया के रोगी के पांव पर शोथ हो जाए तो यह शुभ लक्षण है, किन्तु यदि उसे दस्त होने लगें तो यह अशुभ लक्षण है। ऐसे रोगी के बचने की आशा कम ही रह जाती है। जब सूजन पक कर फूट जाती है तो सहसा कम्प-ज्वर हो जाता है। पीड़ा का धीरे २ घटते जाना शोथ पक जाने का प्रमाण है।

निमोनिया की सफल चिकित्सा

प्राचीन चिकित्सकों का अनुभव है कि निमोनिया का रोगी आठ दिन के अन्दर ही प्राणोत्सर्ग कर देता है। क्योंकि यह रोग वात के कारण होता है। इस रोग से प्रति-वर्ष सहस्रों प्राणी मर जाया करते हैं। अस्तु, इसकी

चिकित्सा में किञ्चित् मात्र उपेक्षा बड़ी हानिप्रद सिद्ध होती है। यद्यपि इस रोग के निवारणार्थ हमने अपनी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में संन्यासियों के बड़े २ चमत्कारी और गुप्त प्रयोग अत्यन्त परिश्रम से संग्रह करके लिख दिये हैं, जो कि ईश्वर कृपा से ९० प्रतिशत रोगियों को मृत्यु के मुख में जाने से बचा लेते हैं, तथापि इस पुस्तक में जो प्रयोग अंकित किए जा रहे हैं, वे भी अपना जवाब नहीं रखते। आप लोग इन साधारण वस्तुओं से बनने वाले नितान्त सरल प्रयोगों को ऐसा वैसा न समझें, अपितु ये बड़े-बड़े विद्वान् चिकित्सकों के विशेषातिविशेष दर्प्य योग हैं। आवश्यकता के समय इनकी परीक्षा करें और परम लाभ उठावें।

पार्श्वशूल के लिए चमत्कारी लेप

देखने में यह प्रयोग कितना साधारण सा प्रतीत होता है, किन्तु इसका प्रभाव ऐसा विस्मयंकारक होता है कि बड़े २ विद्वान् चिकित्सक भी दंग रह जाते हैं। हमारे एक नामी वैद्य मित्र कहते थे कि पहली बार उसकी परीक्षा करने पर परिणाम देखते हुए मैं स्वयं दंग रह गया था। रोगी पीड़ा के मारे व्याकुल था और ऐसा प्रतीत होता था कि यह रोगी बच न सकेगा। मैंने ईश्वर का नाम लेकर यही प्रयोग अनुभव किया। प्रभु की ऐसी अनुकम्पा कि लेप सूखते २ रोगी को आराम मिल गया और पीड़ा बिल्कुल शान्त हो गई। आज वही चमत्कारी प्रयोग हम अपने प्रिय पाठकों को भेंट कर रहे हैं। आशा है, आप लोग यथासमय प्रयोग करके लाभान्वित होंगे।

प्रयोग इस प्रकार है

चूना कलई उत्तम प्रकार का लेकर शहद में भली-भांति घोटें और पीड़ा-स्थल पर लेप करदें। ईश्वर कृपा से लेप सूखते ही पीड़ा का नाम तक न रह जाएगा।

तदनुसार

ठीक इसी प्रकार का एक और भी प्रयोग है जो कि बड़ा ही फलप्रद सिद्ध हुआ है। उसे भी हम आपको भेंट किए बिना नहीं रह सकते। क्योंकि ऐसे सरल और अति प्रभावक प्रयोग आपको कम ही प्राप्त होते होंगे। यह लेप आवश्यकता के समय कभी २ सैकड़ों रुपये के योगों से बढ़कर सिद्ध होता है और विशेषता यह है कि पार्श्वशूल तथा निमोनिया दोनों के लिए ही परम लाभदायक है। कई बार इस प्रयोग से ऐसे २ रोगी भी स्वस्थ हो गए हैं जिनके बचने की कोई भी आशा नहीं रह गई थी।

प्रयोग इस प्रकार है

लगभग आधी छटांक चिकनी मिट्टी को बारीक पीस कर भेड़ के दूध में मिलावें और पीड़ा वाले स्थान पर लेप करदें। ईश्वर कृपा से लेप सूखने भी न पाएगा कि चीखता चिल्लाता रोगी भी आराम प्राप्त कर लेगा। बड़ा ही प्रभावक और गुणप्रद लेप है। जो सज्जन इसकी परीक्षा करेंगे ईश्वर की कृपा से कभी निराश न होंगे।

पार्श्वशूल तथा निमोनिया दोनों के लिए अपूर्व संजीवनी

हमारे एक मित्र महोदय का यह अति गुप्त दर्प्य योग है। यद्यपि यह योग चिकित्सा ग्रन्थों में प्रायः मिलता है, क्योंकि बड़ा ही जादू असर योग है किन्तु अधिकांश वैद्य लोग इसे साधारण समझकर छोड़ देते हैं और कभी परीक्षा तक नहीं करते। किन्तु जो लोग इसकी परीक्षा करके एक बार इसके गुणों को जान लेते हैं वह इसके अतिरिक्त निमोनिया के लिए अन्य किसी योग को हाथ भी नहीं लगाते। अतः मैं बार २ अपने प्रिय पाठकों से चाहे वे वैद्य हकीम हों, अथवा साधारण पाठक, निवेदन करूंगा कि वे स्वयं इसकी परीक्षा अवश्य करें ईश्वरानुग्रह से कभी असफल न होंगे। बहुत ही लाभकारी प्रयोग है।

बारहसिंगे का सींग लगभग दो तोला के परिमाण में लेकर घीग्वार (घृतकुमारी) की १० तोला लुगदी में रख कर कपरौटी करदें और १५ सेर उपलों की अग्नि दें। ठण्डा होने पर निकालें, सींग श्वेत रंग की भस्म के रूप में आ चुका होगा। इसे अति सूक्ष्म पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें। भस्म बची रह गई हो तो पुनः आग देकर उत्तम भस्म बनालें तथा आवश्यकता के समय १ रत्ती से २ रत्ती तक की मात्रा में अजवाइन के अर्क अथवा थोड़े समोष्ण पानी के साथ दें। दो-तीन बार देने से ही ईश्वर कृपा से पूरा २ आराम हो जाएगा।

पार्श्वशूल तथा निमोनिया के लिए सर्वोत्तम क्वाथ

यह क्वाथ पार्श्वशूल तथा निमोनिया दोनों के लिए बड़ा ही लाभकारी है, और सैकड़ों रोगियों को लाभ पहुंचा चुका है। कई बार तो इसी क्वाथ से मरणासन्न रोगियों ने भी पुनः जीवन प्राप्त किया है। जो सज्जन इसे अपनाएंगे, ईश्वर दया से निराश रोगियों को भी स्वस्थ करके यश तथा गौरव के भागी बनेंगे। आयुर्वेदिक चिकित्सा का दर्प्य योग है।

योग इस प्रकार है

सोंठ ३ माशा, एरण्ड के बीज ७ माशा, दोनों को आधा सेर पानी में औटाएं। जब पानी आधा पाव के लगभग शेष रह जाये, तो मल छानकर थोड़ा गर्म २ पिलाएं। निराशाजनक दशा में भी यह अपना जादुई प्रभाव दिखाकर चकित कर देता है। देखने में बड़ा ही साधारण और बनने में अति सरल योग है, किन्तु ईश्वर कृपा से आज तक कभी निष्फल नहीं गया।

पार्श्वशूल तथा निमोनिया पर अचूक प्राकृतिक उपचार

यह प्रयोग नितान्त अचूक है। इसका प्रभाव देखकर प्रकृति की महिमा के प्रति अगाध श्रद्धा उमड़ आती है। भला देखिए तो सही, जिन रोगों पर बड़ी २ उत्तम औषधियां भी निष्फल हो जाती हैं, प्रकृति की ये साधारण वस्तुएं भी

उन पर ऐसा अचूक प्रभाव दिखाती हैं, निःसन्देह यह बात आश्चर्यजनक ही है। यह योग क्या है, पार्श्वशूल के लिए रामबाण है। अतः पाठकों के कल्याणार्थ अंकित किया जाता है।

योग इस प्रकार है

अलसी तथा राई प्रत्येक ६-६ माशा लेकर दोनों को अति सूक्ष्म पीसें और पीड़ा स्थल पर लेप कर दें, तथा ऊपर से कागज रखकर गर्म ईंट या रुई के फायों से टकोर करें। ईश्वर कृपा से इस उपचार से आधा घण्टे के अन्दर २ तड़पते हुए रोगी को भी नितान्त आराम हो जायेगा। शत-शोनुभूत प्रयोग है।

निमोनिया के लिए अक्सीरी तेल

यद्यपि यह तेल तनिक परिश्रम से बनता है, किन्तु निमोनिया के लिए बड़ा ही लाभप्रद सिद्ध हो चुका है। तेल को अनेक विद्वान् वैद्य व चिकित्सक बनाकर अपने औषधालय में रखते हैं, और रोगियों को प्रायः इसकी मालिश करने के लिए देते हैं। इस तेल की मालिश करते ही रोगी को चैन पड़ जाता है और पीड़ा तत्काल शान्त हो जाती है।

तेल की निर्माण विधि इस प्रकार है

आवश्यकतानुसार आम्बा हल्दी लेकर टुकड़े २ कर मिट्टी के बर्तन में डालें और ऊपर से ऐसी गाय का दूध डालकर तर करें जो कि लगभग १० मास अथवा न्यूनाति-

न्यून ७ मास से दूध दे रही हो। इसी प्रकार सात दिवस पर्यन्त प्रतिदिन प्रातः सायं तर कर दिया करें। तदन्तर शुष्क होने पर पाताल-यन्त्र से तेल निकाल लें और आवश्यकता के समय पीड़ा-स्थल पर मालिश करके ऊपर से गरम १ धतूरा या अरण्ड या आक के पत्ते बांध दें, निश्चय ही लाभ हो जायेगा। किन्तु रोगी को पानी बिल्कुल नहीं पिलाना चाहिए, वरन् अर्क सौंफ अथवा अर्क गावजवां समोष्ण करके पिलाते रहना चाहिये।

नीम का चमत्कार

यह प्रयोग भी बड़ा ही प्रभावक है और बिना पैसों के सर्वत्र प्राप्य नीम वृक्ष से बन जाता है। ऐसा सरल प्रयोग दूसरा शायद ही मिल सके।

प्रयोग इस प्रकार है

नीम की नरम २ कोंपलें लेकर भूभल (गर्म राख) में दबा दें, और गर्म होते ही निकालकर गर्म पानी के साथ पीसकर रोगी को पिलाएं, ईश्वर कृपा से तत्काल पीड़ा शान्त हो जायेगी।

पार्श्वशूल के लिए रामबाण

यदि रोगी पीड़ा के कारण अत्यधिक बेचैन हो तो तनिक इस प्रयोग को अजमाकर देखें। ईश्वरानुकम्पा से तत्काल पीड़ा शान्त होने लगेगी। बड़ा सरल योग है।

आक के पत्तों को कूटकर उनका स्वरस प्राप्त करें और इस रस से ही गेहूं का आटा गूंधकर पीड़ास्थल पर

लेप कर दें तथा ऊपर से रुई के गर्म फायों से टकोर करें। निश्चय ही लाभ हो जायेगा।

तदनुसार

काले तिल आवश्यकतानुसार लेकर अच्छी तरह बारीक पीसें और फिर आक का दूध मिलाकर पुनः खरल करें, ताकि लेप सा बन जाय। फिर थोड़ा-सा गर्म करके पार्श्व पर पीड़ा वाले स्थान पर लेप कर दें। ईश्वर कृपा से शर्तिया आराम होने लगेगा। यह प्रयोग भी उपरोक्त प्रयोग से प्रभाव में कम नहीं, अपितु बढ़ चढ़ कर ही है। हमारे एक परिचित वैद्य महोदय इसकी बड़ी प्रशंसा किया करते हैं।

पीड़ा निवारक अति सरल विधि

यदि कोई औषधि तैयार न कर सकें, और रोगी पीड़ा के मारे व्याकुल हो रहा हो तो इस सरल विधि को प्रयोग में लाइए। उसी समय पीड़ा में कमी हो जाएगी। और फिर बड़े आराम से पूर्वोक्त औषधियों में से कोई भी औषधि बनाकर प्रयोग करें। ईश्वर कृपा से नितान्त लाभ हो जायेगा।

विधि यह है

आक के पत्तों को मीठे तेल से चुपड़ कर तवे पर रख कर गर्म करें और रोगी के पार्श्व के ऊपर रखकर बांध दें। आशा है कि अतिशीघ्र पीड़ा में कमी हो जायेगी। ये सरल उपचार भी कभी-कभी ऐसे प्रभावक सिद्ध होते हैं कि लोग वाह २ कर उठते हैं। एक बार हमारी वृद्धा दादी ने किसी रोगिणी स्त्री को यही विधि बता दी थी, जिससे कि आध

घण्टे के अन्दर ही उसकी पीड़ा शान्त हो गई थी। बस फिर क्या था, वह स्त्री हमारी दादी जी को अच्छे वैद्यों से बढ़कर मानने लगी थी।

उरक्षत (सिल)

यह रोग फेफड़े में क्षत हो जाने से उत्पन्न होता है। प्रायः सिल के रोगी को तपेदिक अवश्य होता है, किन्तु तपेदिक के रोगी को सिल का रोग होना आवश्यक नहीं। सिल के रोगी की खांसी में जो बलगम निकला करता है, उसके साथ पीप भी निकला करती है। प्रायः साधारण लोग सिल और निमोनिया की पहचान ठीक प्रकार से नहीं कर पाते; अतः हम आप लोगों को इसकी परीक्षा का एक अति सरल उपाय बताते हैं, जिससे कि सिल रोग की निश्चयात्मक पहचान की जा सकती है। विधि यह है कि रोगी के बलगम को पानी में डालने से दुर्गन्ध आयेगी। यदि ऐसा हो, तो समझ लीजिये कि उसे सिल रोग है।

सिल की सफल चिकित्सा

अब हम अपने प्रिय पाठकों को सिल रोग के निवारणार्थ दो अति लाभदायक और सरल योग भेंट करते हैं, जो कि ईश्वर कृपा से उत्तमोत्तम योगों से बढ़कर सिद्ध हुए हैं। प्रत्युत उनमें से पहला योग तो संन्यासियों का विशेषातिविशेष गुप्त प्रयोग है। इन प्रयोगों के चमत्कारी प्रभाव से बड़े-बड़े विद्वान् चिकित्सक भी मुग्ध हो गए हैं। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभान्वित हों।

सिल का सर्वोत्तम प्रयोग

(जो कि संन्यासियों के हृदय का गुप्त रहस्य है)

देखने में यह प्रयोग नितान्त साधारण सा दिखाई देता है, किन्तु लाभ में अक्सीर है।

फिटकड़ी को किसी मिट्टी के कूंजे में बन्द करके फूंक लें, और फिर इसे बारीक पीसकर सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय एक सेर गाय का दूध बिना पानी मिलाए गरम करके उसका दही जमा दें। फिर उसे बिना पानी मिलाए ही बिलोकर उसका मक्खन निकालें। फिर इस मक्खन के ७ भाग कर लें और प्रत्येक भाग मक्खन में २ चावल के परिमाण में उपरोक्त औषधि की मात्रा खिलाते जायें। सातों भाग मक्खन उसी समय खिला दें, तथा ऊपर से सारी छाछ पिला दें। इसी विधि से पन्द्रह दिवस पर्यंन्त खिलाते रहें। अवश्य आराम हो जायगा, सिल का यह शर्तिया प्रयोग है।

सिल का दूसरा योग

यह प्रयोग भी उपरोक्त से किसी प्रकार कम नहीं। किन्तु इसे सपथ्य सेवन करने से ही लाभ होता है। पथ्य हम प्रयोग के नीचे लिख देंगे। यदि रोगी पथ्य सहित इसे सेवन करे तो अल्पकाल में ही परम लाभ प्राप्त होता है।

प्रयोग इस प्रकार है

गुलकन्द पावभर, फिटकड़ी भुनी हुई ४ रत्ती, मिला-एक ही दिन में खिलादें और प्रति दिन इसी प्रकार सेवन करते रहें। निश्चय ही आराम हो जायेगा।

पथ्यापथ्य

मसालेदार चीजें, गुड़, खटाई, तेल तथा गन्दे कपड़ों से परहेज रखना परमावश्यक है। भोजन में मूंग की दाल, गेहूं की रोटी, लौकी का शाक आदि पदार्थ खा सकते हैं।

रक्त थूकना

इस रोग में खांसने से बलगम के साथ खून आया करता है और छाती पर खरखराहट सी रहती है। यदि खून का रंग लाल और कफयुक्त हो और बिना कष्ट के आता हो, तो वह रक्त फेफड़े से आया करता है और बड़ा भयंकर होता है। प्रायः इससे सिल रोग हो जाने का डर रहता है। किन्तु यदि रक्त का रंग काला हो तो यह छाती से आया करता है, और यह विशेष भंयकर नहीं होता। इस रोग के अनेक कारण हुआ करते हैं जोकि आयुर्वेदिक ग्रन्थों में विस्तार से वर्णित हैं। यहां स्थानाभाव के कारण हम उन्हें अंकित नहीं कर सकते, हां कुछेक विशेष प्रयोग जो कि हमने बड़े परिश्रम के साथ संग्रह किए हैं, अपने प्रिय पाठकों के कल्याणार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं, आशा है कि आप लोग इनसे पूरा २ लाभ उठा सकेंगे।

सर्वोत्तम चूर्ण

इसके तीन चार दिनों के सेवन से अत्यधिक खून निकलना भी बन्द हो जाता है तथा भविष्य के लिए भी इस रोग से सुरक्षा रहती है।

प्रयोग इस प्रकार है

सेलखड़ी की भस्म और लाल गेरू, दोनों को समान परिमाण में लेकर बारीक पीसलें, बस औषधि तैयार है। इसे संभाल कर शीशी में सुरक्षित रखलें। आवश्यकता के समय रोगी को प्रातःकाल निराहार मुख दो माशा उपरोक्त चूर्ण ठंडे जल के साथ दिया करें। २-३ दिनों में ही रोग जड़मूल से नष्ट हो जावेगा। अद्वितीय प्रयोग है।

एक और अनुपम प्रयोग

कहर बाशतई आवश्यकता के अनुसार लेकर बारीक पीस करके किसी शीशी में भरलें और आवश्यकता के समय प्रतिदिन प्रातःकाल ४ रत्ती से १ माशा तक की मात्रा दूध की पतली लस्सी के साथ दिया करें। ईश्वरानुग्रह से केवल २-३ दिन में ही रोग समूल नष्ट हो जाएगा।

तदनुसार

धनिया बारीक पीस कर चूर्णवत् करलें और आवश्यकता के समय ६ माशा की मात्रा प्रातःकाल ठंडे पानी से दिया करें। ३-४ दिन के सेवन से अत्यन्त लाभ होगा। बड़ा ही सरल तथा अनुपम प्रयोग है।

आश्चर्यजनक पुड़िया

यह पुड़िया भी इस रोग के लिए बड़ा ही आश्चर्य-जनकप्रभाव रखती है। हमारे एक मित्र वैद्य प्रायः इसे प्रयोग में लाते हैं, और ईश्वर कृपा से तीन दिन में ही रोगी को स्वस्थ कर देते हैं। मैं उनका यह विशेष प्रयोग आप लोगों को भेंट करता हूं। आशा है लाभ उठाकर आप शुभ आशीर्वाद से सेवक को स्मरण करेंगे।

प्रयोग इस प्रकार है

भुनी हुई फिटकड़ी ३ माशा, कहरबाशतई ३ माशा दोनों को सूक्ष्म पीसकर समान मात्रा की तीन पुड़िया बनालें और प्रतिदिन एक पुड़िया दूध की लस्सी के साथ दिया करें। ३ दिन में ही पूरा २ लाभ हो जायेगा।

हृदय रोग

हृदय हमारे उत्तमांगों में सर्वश्रेष्ठ अंग है, प्रत्युत शरीर साम्राज्य का राजा हृदय ही है सारे अंगों पर उसका प्रभाव पड़ता है। हम अपनी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' के प्रारम्भिक पृष्ठों पर अंग परिचय लिखते हुए 'हृदय' के महत्त्वपूर्ण पद को भली भांति समझा चुके हैं, सम्भवतः आपने भी पढ़ा ही होगा। इस पुस्तक में हम केवल दो प्रयोग आपको भेंट कर रहे हैं जोकि पूर्ण अनुभूत हैं। किन्तु अपने प्रिय पाठकों के सूचनार्थ हम यह बता देना चाहते हैं कि हमारी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में जैसे उत्तम और बड़े २ संन्यासियों के

गुप्तातिगुप्त प्रयोग आपको मिलेंगे वैसे अन्यत्र शायद ही मिल सकें। हृदय रोग का तो एक दर्प्य योग वर्णित है। अतः यदि आप चाहें तो उक्त पुस्तक मंगाकर लाभ उठा सकते हैं। नचेत् निम्न प्रयोग भी पर्याप्त लाभप्रद है।

हृदय दुर्बलता के लिए परम लाभप्रद शर्बत सेब

यह प्रयोग 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' पुस्तक के द्वितीय भाग में भी वर्णित हैं, चूंकि बड़ा ही लाभप्रद योग है और साधारण वस्तुओं से ही बन जाता है; अतः यहां आपकी सेवा में पुनः प्रस्तुत किया जाता है। जो सज्जन तनिक सा परिश्रम उठा कर इसे बनाने का कष्ट करेंगे वे अद्भुत लाभ प्राप्त करेंगे।

योग इस प्रकार है

सेब का रस आध सेर, गाजर बदामी का रस पाव भर, अर्क वेदमुश्क पाव भर, मिश्री तीन पाव, समस्त द्रव्यों से प्रचलित विधि द्वारा शर्बत बनालें तथा सायं प्रातः २-२ तोला शर्बत पानी मिला कर पिया करें। अति लाभदायक प्रयोग है।

सर्वोत्कृष्ट फौलाद भस्म

हृदय दुर्वलता के लिए यह भस्म अत्युत्तम है। इसका योग 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में रजती फौलाद भस्म के नाम से अंकित है, वहां देखें।

हृत्कम्प (हृदय-धड़कन)

इस रोग में हृदय बड़े जोर २ से धड़कने लगता है और रोगी को ऐसा अनुभव होता है मानों कि हृदय डूबता जा रहा है। आंखों के सामने अंधेरा सा छाया रहता है। प्रायः भय अथवा क्रोध की दशा में अधिकतर धड़कने लगता है। चूंकि नाड़ी की गति भी हृदय के सिकुड़ने अथवा फैलने पर ही आधारित होती है; अतः इस रोग में नाड़ी की गति प्रतिमिनट १५० बार तक हो जाती है। यह रोग पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को अधिक होता है। इसका मूल कारण पट्ठों की दुर्बलता हुआ करती है। जो लोग रक्तार्श (खूनी बवासीर) से ग्रस्त रहते हैं, उनको यह रोग दौरे से हुआ करता है। इसके लिए अत्यधिक लाभप्रद एवं सरल अनुभूत योग आप लोगों को भेंट करता हूं, जोकि ईश्वर कृपा से हृदय को अपूर्व शक्ति प्रदान करने वाले हैं। सतत् यत्नों के पश्चात् मैं इन प्रयोगों को संग्रहीत कर सका हूं।

हृत्कम्प के सर्वोत्तम प्रयोग

जहां तक योगों का प्रश्न है, आपने आयुर्वेदिक तथा यूनानी चिकित्सा के एक से एक उत्तम योग देखे होंगे, किन्तु जैसे सरल और प्रभावक योग मैं आपको इस पुस्तक में भेंट कर रहा हूं, सम्भवतः अन्यत्र एक साथ न मिल सकेंगे। बस यूं समझ लीजिए कि बड़े २ विद्वान् और अनुभवी चिकित्सकों के ज्ञान का निचोड़ हमने इस पुस्तक में भर दिया है। नीचे हृदय कम्प के लिए एक जादू असर प्रयोग लिखता हूं, परीक्षा करके लाभ उठावें और प्रकृति का चमत्कार देखें कि सामान्य वस्तुओं में भी कैसे-कैसे गुण

भरे हुए हैं। यह प्रयोग न केवल हृत्कम्प प्रत्युत हृदय-दुर्बलता, चेतनाशून्यता आदि रोगों के लिये भी परम लाभकारी है।

प्रयोग

आवश्यकतानुसार सूखा आंवला लेकर अति सूक्ष्म पीसलें, और इसके बराबर मिश्री मिलाकर सावधानी से रखलें। आवश्यकता के समय प्रातः समय निराहार मुख ७ माशा प्रतिदिन पानी के साथ खिलाया करें। कुछ दिनों में ही हृदय सम्बन्धी समस्त रोग दूर हो जावेंगे। चमत्कारी प्रयोग है।

तदनुसार

यह प्रयोग भी बड़ा ही प्रभावक है। इसके केवल एक सप्ताह के सेवन से हृदय का ताप, दुर्बलता, धड़कन आदि रोग जड़ मूल से दूर हो जाते हैं।

प्रयोग इस प्रकार है

रेहां के बीज १ तोला, नित्य रात को एक कूंजे में आधा सेर पानी डालकर भिगो दिया करें तथा रात भर बाहर खुली हवा में पड़ा रहने दें। प्रातःकाल थोड़ा सा मीठा मिलाकर सेवन करते रहें, एक सप्ताह मात्र में ईश्वर कृपा से हृदय नितान्त निरोग हो जायेगा।

हृदय तापहारी योग

यह योग हृदय ताप दूर करने के लिए सर्वोत्तम प्रयोग

है। न केवल हृदय ताप, वरन् हृदय सम्बन्धी सभी रोगों की एकमात्र अचूक औषधि है। सहस्रों वैद्यों द्वारा प्रशंसित यह साधारण योग हृदय के लिए बहुमूल्य भस्मों से भी बढ़कर प्रभावक है, इसके एक सप्ताह के निरन्तर सेवन से हृदय समस्त रोग व्याधियों से मुक्त हो जाता है और चित्त हर समय आनन्दित रहता है।

प्रयोग इस प्रकार है

२० तोला तरबूज के बीज रात के समय पानी में भिगो कर रखें और प्रातःकाल भली भांति रगड़ कर थोड़ी खांड मिलालें तथा कपड़े में छान कर पिलाया करें। ईश्वर कृपा से कुछ दिनों में ही वह लाभ प्रकट होगा कि बड़ी २ मूल्यवान औषधियां भी तुच्छ प्रतीत होंगी। स्वयं परीक्षा करके लाभ उठावें।

हृदय-पीड़ा

हृदय की पीड़ा भी बहुत ही भयंकर रोग है। इस की चिकित्सा में तनिक भी आलस्य करने से कभी २ बड़ा ही भयंकर परिणाम होता है। इसके लिए हम अपने प्रिय पाठकों को दो अति सरल किन्तु हृदय पीड़ा पर जादू के समान प्रभाव दिखाने वाले प्रयोग भेंट करते हैं, परमात्मा करे, हमारे प्रिय पाठकगण इनसे पूरा लाभ उठावें।

हृदयपीड़ा-नाशक प्रथम योग

यद्यपि इस प्रयोग के निर्माण में थोड़ा सा परिश्रम अवश्य करना पड़ता है, तथापि जब सेवनकर्ता अथवा चिकित्सक इसके गुण देखता है, मुग्ध होकर सारा परिश्रम भूल

जाता है। आवश्यकता के समय आप भी एक बार परीक्षा अवश्य करें।

प्रयोग इस प्रकार है

हिरण के सींग का भीतरी भाग आवश्यकतानुसार लेकर किसी मिट्टी के कूंजे में बन्द करके आग में भस्म कर लें, और बारीक पीस कर सावधानी से शीशी में सुरक्षित रख लें। आवश्यकता के समय प्रातःकाल १ माशा से २ माशा तक की मात्रा ठण्डे पानी के साथ दिया करें। पीड़ा शीघ्र ही शान्त हो जायगी।

द्वितीय प्रयोग

आवश्यकतानुसार पुष्कर मूल लेकर बारीक करके शीशी में रखें और आवश्यकता के समय ४ रत्ती से १ माशा तक की मात्रा शहद में मिलाकर सेवन करें। इस से भी शीघ्र ही हृदय-पीड़ा शान्त हो जाती है। साथ ही यदि रेबन्दचीनी को पानी में घोलकर दोनों कन्धों के मध्य में लेप कर दिया जाये तो हृदय-पीड़ा तथा हृत्कम्प दोनों को अति शीघ्र आराम हो जाता है। ये प्रयोग श्री वीरेन्द्र कुमार जी जैन के पूर्ण अनुभूत हैं। जैन साहब हमारे विशेष मित्रों में से हैं, अतः मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूं कि यह प्रयोग बड़े ही लाभप्रद सिद्ध होंगे।

विशेष सूचना

चूंकि हृदय उत्तमांगों में श्रेष्ठतम अवयव है, अतः इसके रोगार्त हो जाने पर प्रायः बहुमूल्य औषधियां सेवन

करनी पड़ती हैं। 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में प्राचीन अनुभवी आयुर्वेदाचार्यों के बड़े २ दर्प्य योग अंकित हैं। अस्तु आवश्यकता के समय जो सज्जन उक्त पुस्तक की सहायता से आयुर्वेद व यूनानी चिकित्सा के योग सेवन करेंगे, वे निश्चय ही पूर्ण लाभ उपलब्ध करेंगे।

आमाशय सम्बन्धी रोग

आमाशय हमारे शरीर का अत्यधिक प्रमुख अंग है। यद्यपि 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में अंग परिचय में हम आमाशय का महत्त्व सविस्तार समझा कर लिख चुके हैं, तथापि संक्षेप में हम यहाँ भी थोड़ा सा लिख देना उचित समझते हैं।

आमाशय कद्दू के आकार का एक अवयव है, जो कि हमारे पेट में स्थित है। हमारा खाया हुआ भोजन आमाशय में ही पकता है। सबसे प्रथम भोजन को दांत काट कर टुकड़े २ करते हैं, फिर दाढ़ें उसे पीसकर और बारीक करती हैं। तदनन्तर इस ग्रास को मुख की लार कोमल करके गले के मार्ग से आमाशय तक पहुंचा देती है। आमाशय में स्थित पित्त तथा पाचन-शक्ति मिलकर ३-४ घण्टे में भोजन को पचा कर घोले हुए सत्तुओं जैसा बना देती हैं जिसे 'कैलूस' कहते हैं। फिर इस कैलूस का स्वच्छ व सूक्ष्म भाग यकृत में रक्त बनाने के लिए चला जाता है और गाढ़ा द्रव्य आंतों में होता हुआ मलमार्ग से विष्टा के रूप में निकल जाता है। यह है आमाशय का संक्षिप्त परिचय। अब आप समझ गये होंगे कि आमाशय हमारे शरीर का कितना महत्त्वपूर्ण अव-

यव है। भोजन को रक्त वीर्य तथा शक्ति रूप में परिणत करके हमारे स्वास्थ्य को बढ़ाना आमाशय का ही काम है। इसके विपरीत यदि आमाशय में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न हो जाता है, तो शरीर के अन्य सभी अंग शिथिल और निकम्मे पड़ जाते हैं, और कोष्ठबद्धता, हिक्का, विशूचिका (हैजा) आदि अनेक भयंकरतम रोग उत्पन्न हो जाते हैं। परिणामस्वरूप हमारा स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जाता है। अतः आमाशय को रोगों से सुरक्षित रखने के लिए हमें हर समय प्रयत्नशील रहना चाहिए। प्रत्युत आमाशय सम्बन्धी साधारण से साधारण रोग की भी चिकित्सा में कदापि आलस्य अथवा उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। स्मरण रखिए, कि शुद्ध और ताजा भोजन खाना और बासी सड़ा गला और हानिकारक भोजन न खाना ही आमाशय को सुरक्षित रखने की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा है।

अब मैं आमाशय सम्बन्धी रोग से बचने के लिए कुछ स्मरणीय आदेश लिखता हूं। जो सज्जन इनको ध्यान में रखकर आचरण करेंगे, वे सदैव इन रोगों से बचे रहेंगे।

आमाशय रक्षा के लिए स्वर्णिम आदेश

१—भोजन सदैव पूरी भूख लगने पर ही किया जाय, और कम से कम एक रोटी की भूख शेष रख कर उठ बैठना चाहिए।

२—चित्त आलस्यमय होने पर भोजन कदापि नहीं करना चाहिए और यदि करें भी तो अति सूक्ष्म, क्योंकि

अधिक खाने से आमाशय पर बोझ पड़ेगा, और कोई न कोई बीमारी पैदा हो जाएगी।

३—लैमन, सोडा तथा बर्फ का नित्य सेवन करना आमाशय के लिए बहुत ही हानिकारक सिद्ध होता है, क्योंकि इनसे आमाशय दुर्बल हो जाता है। हाँ कभी २ सेवन कर लेने में कोई हानि नहीं।

४—भोजन के थाल में अनेक प्रकार के भोजन रखकर खाना अमीरी का लक्षण नहीं है, अपितु मेरे विचार से तो यह स्वास्थ्य के शत्रु को निमन्त्रण देना है।

५—भोजन सदैव नियत समय पर नियमित रूप से करना स्वास्थ्य के लिए परम हितकर है। बार-बार थोड़ा-थोड़ा करके खाना स्वास्थ्य के लिए विशेष हानिकारक होना है।

६—भोजन करते समय ग्रास को भलीभांति चबा २ कर खाना चाहिए, किन्तु जहां तक सम्भव हो, शीघ्र-शीघ्र खा लेना उत्तम है। जो लोग भोजन को बिना चबाए ही निगल जाते हैं, या जो चबाते-चबाते बहुत अधिक देर लगाते हैं वे भूल करते हैं। ये दोनों ही आदतें स्वास्थ्य के लिए हानिकर होती हैं।

७—इसी प्रकार पानी को भी गट-गट चढ़ा जाना बुरा है। इससे आमाशय की ऊष्मा बुझने की आशंका रहती है। कम से कम तीन सांस लेकर पानी पीना चाहिए।

८—सुगंधित द्रव्य यथा पोदीना, जीरा, बड़ी इलायची तथा तज आदि आमाशय के लिए विशेष गुणप्रद हैं।

९—रोटी सदैव अनछने आटे की खानी चाहिए, क्योंकि डाक्टरों के मतानुसार आटे की छान में विटामिन रहता है, जो कि आमाशय के लिए अत्यन्त पौष्टिक व लाभप्रद होता है।

१०—आमाशय के लिए औषधियां सदैव दरदरी रखनी चाहियें। अति सूक्ष्म औषधियों की अपेक्षा वे अधिक हितकारी सिद्ध होती हैं। इसके अतिरिक्त लेसदार औषधियां आमाशय के लिए हानिकर सिद्ध होती हैं।

विशेष ज्ञान की बातें

१—चिकित्सकों का कथन है कि दूध भूलोक का अमृत है। इसमें ऐसे २ अनमोल गुण हैं, जोकि बड़ी २ मूल्यवान औषधियों में भी नहीं। यहां तक कि बड़े २ रोग भी, जो कि उत्तमोत्तम औषधियों से नहीं जाते, केवल दुग्धोपचार से नितान्त मिट जाते हैं। किन्तु यदि दूध के साथ अचार आदि खट्टी वस्तुएं सेवन की जायें, तो दूध अमृत से विष बन जाता है। और कुष्ठ आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अतः इस बात को सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि दूध के साथ खट्टी वस्तुओं का प्रयोग कदापि न करें। इसे साधारण बात समझकर ध्यान न देने वाला व्यक्ति भारी हानि उठाता है।

२—ककड़ी, खीरा, तरबूज आदि निराहार मुख अथवा क्षुधातुर अवस्था में भूलकर भी नहीं खाने चाहियें क्योंकि तेज भूख में खा लेने पर ये सब पित्त में परिवर्तित हो जाते हैं। इसी प्रकार भरपेट खाना

भी हानिकर है, क्योंकि इससे अजीर्ण होकर हैजा हो जाने का डर रहता है। हां इन दोनों अवस्थाओं के बीच में सेवन करना चाहिए।

३—तांबे और पीतल के बर्तनों में कलई कराए बिना भोजन करना बड़ा हानिकर होता है, अतः उन पर कलई अवश्य करा लेनी चाहिये।

जो सज्जन उपरोक्त बातों को ध्यान में रखेंगे वे ईश्वर कृपा से आमाशय सम्बन्धी रोगों से सदैव बचे रहेंगे। अब हम अपने प्रिय पाठकों को आमाशय सम्बन्धी विविध बहु प्रचलित रोगों के निवारणार्थ कुछ अति सरल और अति प्रभावक प्राकृतिक प्रयोग भेंट करते हैं। जिनके सेवन करने से आप लोग हर रोग से सरलता पूर्वक छुटकारा पा सकेंगे। ये प्रयोग देखने में अति साधारण हैं, किन्तु लाभ में बड़े २ योगों से बाजी मार ले जाते हैं।

अजीर्ण

प्रातः आमाशय की क्रिया शिथिल पड़ जाने अथवा हानिकर वस्तुओं के सेवन कर लेने से लोगों को अजीर्ण हो जाता है। खट्टे डकार आने लगते हैं, भूख नहीं लगती तथा पाचन-शक्ति कमजोर हो जाती है। यद्यपि यह रोग साधारणसा ही है, किन्तु कभी २ बड़ा भयानक सिद्ध होता है। क्योंकि अजीर्ण होने से ही प्रायः लोग विशूचिका (हैजा) में ग्रस्त हो जाते हैं। अतः अजीर्ण को दूर करने का तत्क्षण उपाय करना चाहिए। यहां अजीर्ण को दूर करने के लिए ऐसे २ उपाय अंकित किये जाते हैं, जिनसे कि केवल साधारण ऋतुओं अथवा प्राकृतिक वस्तुओं से ही आमाशय शुद्ध

हो जाता है। आशा है कि आवश्यकता के समय पाठक गण इनसे लाभान्वित होकर शुभाशीष प्रदान करेंगे।

अजीर्ण नाशक अगद

मूली का क्षार (इसकी निर्माण विधि 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में अंकित है) १ माशा परिमाण में गरम पानी के साथ खिलाने से ईश्वर कृपा से अजीर्ण दूर हो जाता है। अत्युत्तम सरल प्रयोग है और सैकड़ों लोगों ने जिन्होंने 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' पुस्तक का अध्ययन करके इसकी परीक्षा की है, मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। यह प्रयोग इतना प्रभावक है कि न केवल अजीर्ण अपितु पेट शूल को भी दूर कर देता है। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभ उठावें।

अर्क-क्षार

आमाशय सम्बन्धी प्रत्येक रोग विशेषकर अजीर्ण और उदरशूल के लिए 'अर्क-क्षार' अचूक रामबाण सिद्ध हो चुका है। इसकी निर्माण विधि यह है—

आक के पौधों के फूल, फल, पत्ते, टहनी तथा जड़ आदि पंचांग समेत सुखा कर जलाएं और उस राख को १६ गुना पानी में डाल कर ३ दिवस-पर्यन्त रक्खा रहने दें। कालान्तर में प्रति दिन कम से कम तीन बार पानी को हिला दिया करें, तत्पश्चात् ऊपर से पानी निथार कर शेष द्रव्य को फेंक दें और इस पानी को आग पर पकाएं, जब सारा पानी जल जाए और श्वेत वर्ण की औषधि सी शेष

रह जाय, तो उतार लें। बस यही अर्क क्षार है। आवश्यकता के समय इसमें से १ रत्ती अधिकाधिक २ रत्ती क्षार मुंह में डाल कर ऊपर से गरम पानी की घूंट पिलादें। शीघ्र ही खाया हुआ भोजन पचकर अजीर्ण दूर हो जाएगा। यदि उदरशूल का रोगी सेवन करले तो तत्काल शूल बन्द हो जाता है। अत्युत्तम प्रयोग है।

मूली का चमत्कार

हमारे एक मित्र वैद्य जी सुनाया करते थे कि उन के गांव में एक आदमी सेरों मांस पचा जाया करता था। उसे कभी अजीर्ण न होता देखकर सभी लोग बड़े आश्चर्य-चकित थे। अन्त में एक व्यक्ति ने रहस्य मालूम कर ही लिया। वह मांस भक्षण के उपरांत मूलियां खा लिया करता था अस्तु उसने गांव भर की सारी मूलियों को अपने अधिकार में कर लिया और फिर पुरस्कार घोषित करके उस व्यक्ति से मांस खाने को कहा—वह बिना किसी हिच-किचाहट के खा गया। किन्तु जब उसे बाद में खाने के लिए मूलियां सारे गांव में न मिलीं तो बहुत घबराया। काफी खोज के पश्चात् उसे पत्ते मिले वह उन्हें खा गया। लेकिन थोड़े से पत्ते उस मांस को पचाने के लिए अपर्याप्त रहे, फलस्वरूप वह व्यक्ति मर गया। वैद्य जी कहते थे कि जब उस व्यक्ति का पेट चीरा गया तो देखा कि उसके पेट में मांस का गोला बंध गया था, किन्तु जहां मूली के पत्तों का रस पहुंचा, वह वहां मांस को पचाता हुआ उसमें छेद करके पार हो गया। मूली के रस चमत्कार को देखकर सभी लोग दंग रह गए। कहने का अभिप्राय यह है कि

मूली उत्कृष्ट प्रकार की पाचक होती है। इसके सेवन से लोग अजीर्ण से बचे रहते हैं तथा यह भोजन को नितान्त पचाकर अजीर्ण दूर करने में उत्तमोत्तम औषधियों से बढ़कर सिद्ध हुई है।

सर्वोत्तम पाचक चूर्ण

यह चूर्ण भोजन को पचाने व आमाशय को शक्ति प्रदान करने में अपना जवाब नहीं रखता। आवश्यकता के के समय बनाकर लाभ उठावें।

प्रयोग इस प्रकार है

एक उत्तम नींबू की फांक करके धागे में पिरोकर धूप में लटका दें और सूखने के उपरान्त उन्हें पीसकर चौगुनी खांड मिलाकर चूर्ण बना लें। आवश्यकता के समय ३ माशा की मात्रा पानी के साथ सेवन करें। अतिशीघ्र भोजन को पचाकर अजीर्ण दूर कर देगी।

उदर–शूल

अजीर्ण के कारण ही उदर शूल उत्पन्न हो जाता है। पेट के दर्द से रोगी अत्यन्त कष्ट पाता है। यह कष्ट प्रायः ही लोगों को हो जाता है अतः इसके निवारणार्थ हम कुछेक अति सरल प्रयोग आपकी भेंट करते हैं, जिनसे ईश्वर कृपा से मिनटों में आप इस घोर कष्ट से छुटकारा पा सकते हैं।

उदर–शूल को ५ मिनट में रोकने वाली अद्भुत वटी

जब आप इस गोली का प्रयोग पढ़ेंगे तो हंस पड़ेंगे कि भला यह भी कोई दवा है ? किन्तु यदि सेवन करेंगे, तो इसका प्रभाव देखकर दंग रह जायेंगे। यह साधारण गोली कठिन से कठिन उदर-शूल को भी मिनट में दूर कर देती है। इसके सामने वड़े २ उत्तम योग भी तुच्छ जान पड़ते हैं। आवश्यकता के समय परीक्षा कर देखें।

प्रयोग इस प्रकार है

पीपल के दो पत्तों को पीसकर गुड़ में लपेट कर गोली बना लें और उदरशूल से बेचैन रोगी को खिला दें ईश्वर कृपा से तत्काल दर्द बन्द हो जायेगा।

उदर–शूल तथा अफारे के लिए अत्युत्तम स्वादिष्ट चूर्ण

यह चूर्ण अनन्त गुण सम्पन्न है, आमाशय के प्रायः सभी रोगों के लिए यह अनुभूत औषधि है। यदि स्वस्थ व्यक्ति भोजनोपरान्त इसका सेवन करते हैं तो आमाशय सम्बन्धी समस्त रोगों से बचे रहते हैं। बनाकर लाभ उठावें।

प्रयोग इस प्रकार है

अनारदाना १ तोला, पुदीना के पत्ते सूखे हुए ६

माशा तथा स्वाद के लिए लाहौरी अथवा काला नमक तीनों को बारीक पीसकर किसी शीशी में सुरक्षित रखें और आवश्यकता के समय १ माशा से २ माशा तक दोनों समय भोजनोपरान्त सेवन करें। कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से परम लाभ होगा। भोजन भलीभांति पचेगा, अजीर्ण, उदरशूल आदि कदापि न होगा, तथा भूख खुलकर लगने लगेगी। अद्‌भुत लाभकारी चूर्ण है।

देहाती फार्मेसी की दर्प्य औषधि
पाचक वटी

देहाती फार्मेसी, मुकाम पोस्ट कासन, जिला गुड़गांवा (हरियाणा) में यह गोलियां हर समय तैयार मिलती हैं, जो कि आमाशय रोगों के लिए संजीवनी से कम नहीं। अनेक व्यक्तियों ने इनसे लाभान्वित होकर मुझसे प्रशंसा की है। उनका कथन है कि ये गोलियां अजीर्ण, उदरशूल, खट्टे डकार आना आदि रोगों पर केवल ५ मिनट में जादुई प्रभाव दिखाती हैं, चूंकि देहाती फार्मेसी के वैद्य जी हमारे सुपरिचित हैं अतः मैंने यह योग उनसे पूछ लिया। योग इतना सरल है कि हर व्यक्ति अपने घर पर ही बना सकता है। इस प्रकार की गोलियां आप किसी विश्वस्त फार्मेसी से, जो इन गोलियों को बनाती हो, प्राप्त कर इस योग का महत्व अनुभव कर सकते हैं।

प्रयोग इस प्रकार है

आक के ताजा लौंग ६ माशा, काली मिर्च २ माशा

और अमचूर १ तोला, तीनों को अति सूक्ष्म पीसकर पानी की सहायता से मटर के दाने के बराबर गोलियां बना लें, और छाया में सुखाकर शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय एक से दो गोली तक थोड़े गर्म पानी के साथ रोगी को सेवन कराएं। ईश्वर कृपा से तत्काल प्रभाव प्रकट होगा। आमाशय सम्बन्धी समस्त रोगों के लिए पूर्ण अनुभूत, अचूक गोलियां हैं।

उदरशूलहर अद्भुत प्रयोग

लगभग पौन तोला घृत आग पर पकाकर उसमें १ साबत लाल मिर्च डाल दें, और जब मिर्च जलकर काली हो जाय, तो उसको निचोड़कर फेंक दें, तथा घी को पीलें। ईश्वर कृपा से तत्क्षण पेट का दर्द रुक जायेगा। बड़ा ही चमत्कारी चुटकुला है।

कोड़ी की पीड़ा

यह बड़ी ही कष्टप्रद प्रकार की पीड़ा है। इसमें रोगी दर्द के मारे लोट पोट हो जाता है और पल भर को भी चैन से नहीं बैठ पाता। इसकी पीड़ा का अनुमान तो वही व्यक्ति लगा सकता है, जो कभी इस रोग में फंस चुका हो। साधारणतया यह रोग वादी चीजों के अत्यधिक सेवन करने से हो जाता है।

हमने इस भयंकर पीड़ा के निवारणार्थ कुछेक रामबाण की भांति अचूक और सरल प्रयोग बड़े परिश्रम से संग्रह किए हैं, जो कि यहां अंकित किए जाते हैं। आशा

है, पाठकगण लाभ उठाकर इस पुस्तक का अधिकाधिक प्रचार करेंगे, ताकि हमारे व आपके अधिकांश भाई लाभ उठा सकें, और हमारा परिश्रम सफल हो जाय।

आश्चर्यजनक प्रयोग

उत्तम हीरा हींग १ रत्ती बीज रहित मुनक्का में लपेट कर रोगी को खिला दें। ईश्वर कृपा से दूसरी मात्रा न देने पड़ेगी और पीड़ा नितान्त शान्त हो जाएगी।

चाय का चमत्कार

थोड़ी सी चाय की पत्ती चिलम में तम्बाकू की भांति रखकर रोगी को पिलाएं। प्रभु कृपा से २-४ कश लगाने से ही पीड़ा शान्त होने लगेगी और थोड़ी देर में नितान्त शान्त हो जायेगी। इस प्रयोग का मैं स्वयं कई रोगियों पर अनुभव कर चुका हूं, सदैव सफल सिद्ध हुआ है।

तदनुसार

एक बार हमारे एक पंजाबी पड़ोसी का लड़का कोड़ी की पीड़ा में ग्रसित हो गया। पीड़ाधिक्य से बालक बुरी तरह छटपटा रहा था। संयोगवश मैं उधर से निकला। मैंने भी उसका कष्ट देखा। तत्काल मैंने जेब से 'गोल्ड-फ्लेक्स' सिगरेट का पैकेट निकालकर उसे एक सिगरेट पीने को दी। बालक पहिले तो घबराकर डर के मारे अपने मां बाप की ओर देखने लगा, फिर उनके कहने पर उसने सिगरेट को पीना शुरू कर दिया। ईश्वर की ऐसी कृपा

कि आधी सिगरेट समाप्त होते २ उसकी पीड़ा बिल्कुल शान्त हो गई और बालक प्रसन्न होकर हंसने खेलने लगा। सभी लोग मेरी इस अद्‌भुत चिकित्सा से दंग रह गए, और वाह २ करने लगे। कहने का अभिप्राय यह है कि सिगरेट पीने से भी कभी २ पीड़ा शान्त हो जाती है।

उबकाइयां तथा वमन

कभी २ आमाशय के विकृत हो जाने से जी मिचलाने लगता है, खाली उबकाइयां आती हैं, तथा कई बार वमन भी होती हैं। उन्हें शान्त करने के लिए कुछेक सरल प्रयोग अंकित किए जाते हैं। जरूरत के समय बनाकर लाभ उठावें।

स्मरणीय आदेश

चिकित्सकों का कथन है कि वमन रोकने में शीघ्रता कदापि नहीं करनी चाहिए क्योंकि आमाशय में से दूषित द्रव्य का निकल जाना ही उत्तम है। यदि वह दूषित द्रव्य अन्दर ही रुका रहेगा, तो बहुत से विकार उत्पन्न हो जायेंगे। उचित तो यह है कि दूषित द्रव्य को निकालने में सहायता करें। हां जब समझ लें कि आमाशय नितान्त साफ हो चुका है, तो फिर वमनाधिक्य को रोकने का प्रयत्न करना चाहिये।

आश्चर्यजनक चमत्कार

देहली के वैद्य-सम्मेलन के उत्सव पर एक विद्वान् वैद्य ने इस चमत्कारी प्रयोग को प्रकट किया था जोकि अन्यान्य वैद्यों द्वारा परीक्षा करने पर आश्चर्यजनक सिद्ध हुआ है।

आवश्यकता के समय आप भी परीक्षा करें। आशा है, सफलता मिलेगी।

संन्यासियाना प्रयोग

मक्खी स्वयं तो वमन का कारण है, किन्तु उसकी बीट वमन को रोकने के लिए अक्सीर है। आवश्यकतानुसार मक्खी की बीट इकट्ठी करके खरल करें और पानी की सहायता से १-१ रत्ती की गोलियाँ बना लें। आवश्यकता के समय १ गोली पानी के साथ रोगी को सेवन करायें। ईश्वर कृपा से गोली अन्दर पहुंचते ही वमन रुक जाएगी।

अद्भुत टोटका

चूल्हे की भटोर (लाल मिट्टी) को अति सूक्ष्म पीस कर रखें और आवश्यकता के समय १ माशा मात्रा पानी के साथ दें। तत्क्षण वमन बन्द हो जायेगी। यह प्रयोग कई बार का अनुभूत है।

सर्वोत्तम औषधि

१ रत्ती भुनी हुई फिटकड़ी बताशे में डालकर रोगी को खिला दें। तत्काल वमन रुक जायेगी।

अनौषधि उपचार

१—जिस रोगी को वमन हो रही हो उसके बाजू कस कर बांध दें। बिना औषधि के वमन रुक जायेगी।

२—रोगी को घूंट-घूंट करके पानी पिलाएं। इस विधि से भी प्रायः बिना औषधि के ही वमन रुक जाती है।

हिचकी (हिक्का)

कभी-कभी हिचकी आना इस प्रकार आरम्भ हो जाता है कि हटने का नाम ही नहीं लेती। उस समय बड़ी परेशानी अनुभव होती है। यहां हिचकी रोकने के लिए कुछ विशेषातिविशेष प्रयोग अंकित किये जाते हैं, जिनसे कि आवश्यकता के समय पाठकगण अपूर्व लाभ उपलब्ध करेंगे।

प्रथम योग

देखने में व्यर्थ सा प्रयोग है, किन्तु हिचकी रोकने के लिए विशेष प्रभावक है : परीक्षा कर देखें।

प्रयोग इस प्रकार है

पीपल की छाल को जलाकर कोयला बना लें और आवश्यकतानुसार पानी में बुझा लें। इस पानी को घूंट २ करके पिलावें। हिचकी तत्काल बन्द हो जायेंगी।

द्वितीय प्रयोग

मूंज की रस्सी को चिलम में तम्बाकू के स्थान पर रखकर रोगी को पिलायें अथवा मूंज की सिगरेट बनाकर रोगी को पिलायें। शीघ्र ही हिचकी रुक जायेगी।

तृतीय प्रयोग

रीठे को पानी में घिसकर ग्रीवा पर लेप कर दें। ईश्वर कृपा से तत्काल हिचकी रुक जायेगी। अनेक बार का परीक्षित प्रयोग है।

चतुर्थ प्रयोग

कीकर के २ तोला कांटे आधा सेर पानी में उबालें। जब केवल आधा पानी शेष रह जाय, तो उतार कर छान लें और उचित परिमाण में उत्तम मधु मिलाकर रोगी को पिला दें। इससे थोड़ी देर में ही हिचकी को निश्चय आराम हो जाता है।

पंचम प्रयोग

२ तोला आम के सूखे पत्ते हुक्के की चिलम में रखकर रोगी को तम्बाकू की तरह पीना चाहिए। बस तत्काल हिचकी बन्द हो जायेगी।

छठा प्रयोग

प्रयोग क्या है ?–चमत्कार है !

रोगी को स्त्री के दूध की नस्य दें, हिचकी रुक जायेगी।

विशूचिका (हैजा)

इस भयंकर रोग से भला कौन परिचित न होगा? प्रतिवर्ष हजारों नहीं लाखों प्राणी इस रोग की भेंट जाते हैं। यह संक्रामक रोग महामारी की भांति वायुविकृति से फैलता है। इस रोग से रेचन और वमन की अधिकता के कारण रोगी अत्यन्त दुर्बल होकर परलोक गामी हो जाता है। प्राचीन वैद्यों के मताअनुसार इस रोग के कारण वायु

तथा जल की विकृति, बहुत अधिक पेट भरकर खाना, सड़े-गले अथवा बासी भोजन का खा लेना आदि होते हैं। किन्तु अर्वाचीन चिकित्सकों के मतानुसार इस रोग का कारण बहुत ही छोटा टेढ़ा वानस्पतिक कीड़ा है, जिसे अंग्रेजी में 'कालरा-बेलेजिस' कहते हैं। यह रोग कदाचित् मनुष्य के अतिरिक्त और किसी जीव को नहीं होता।

विशूचिका के लक्षण

मुख्यतः वमन व रेचन की अधिकता ही हैजे की पहचान है, किन्तु यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक वमन तथा रेचन विशूचिका से ही आते हैं। प्रायः अनाड़ी चिकित्सक वमन तथा दस्त होते देखकर ही बिना सोचे-विचारे कह देते हैं कि अजी इसे तो विशूचिका हो गया है। बेचारा रोगी विशूचिका का नाम सुनते ही अधमरा-सा हो जाता है तथा रहा-सहा घर की स्त्रियाँ मार देती हैं। उसके बचने की यदि कुछ आशा शेष भी होती है, तो भी वह मौत की गोद में जा गिरता है। अतः चिकित्सकों को तथा रोगी के घर वालों को भी यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि यदि रोगी को सचमुच भी ऐसा ही रोग हो, फिर भी उसे बताना नहीं चाहिए, अपितु यदि उसके हृदय में शंका उत्पन्न हो जाये, तो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिये, ताकि वह साहस के साथ रोग का सामना कर सके। यही चिकित्सा का सर्वप्रथम सिद्धान्त है। यदि रोग रोगी पर प्रभाव जमा लेता है, तो रोगी मर जाता है, और यदि रोगी अदम्य साहस के साथ रोग के ऊपर सवार हो जाता है तो रोग नष्ट हो जाता है। इस बात को ध्यान में रखने से प्रायः

बिना औषधि सेवन के ही रोगी का आधा रोग दूर हो जाता है।

लीजिये, अब हम आपको विशूचिका के मुख्य-मुख्य लक्षण बताते हैं, जिनसे हर व्यक्ति सरलता पूर्वक विशूचिका अथवा साधारण वमन व रेचन का अन्तर समझ सकता है। विशूचिका के मुख्य-मुख्य पाँच लक्षण हैं—

१. रोगी को मिनट-मिनट पर दस्त आते हैं।
२. इसी प्रकार वमन भी बहुत अधिक होती है।
३. सारा शरीर ठंडा पड़ जाता है।
४. पाँव तथा पिंडलियों में खिचावट उत्पन्न हो जाती है, जिसे साधारण बोल-चाल में कड़ल पड़ना कहते हैं।
५. रोगी का मूत्र रुक जाता है।

विशूचिकाग्रस्त रोगी की अवस्थाएं

आयुर्वेदिक तथा यूनानी चिकित्सकों के मतानुसार विशूचिका ग्रस्त रोगी की चार अवस्थायें होती हैं। इन अवस्थाओं की पहचान करने के लिए हम इनके पृथक्-पृथक लक्षण अंकित करते हैं। पहले हर चिकित्सक को ध्यान पूर्वक यह देखना चाहिए कि रोगी किस अवस्था में है, फिर उसके अनुसार ही चिकित्सा प्रारम्भ करनी चाहिए।

विशूचिका के रोगी की प्रथम अवस्था

अधिकतर यह रोग प्रातः काल ४ बजे प्रारम्भ होता है, किन्तु कई बार इसके पूर्व ही सुस्ती-सी अनुभव हो कर रोगी को दस्त होने लगते हैं। दस्तों के पहले तो विष्ठा निकलती है, तथा बाद में चावलों की पीच्छ की भांति दस्त होने लगते हैं। यद्यपि दस्त आने के समय पेट में गड़बड़

होती है, किन्तु पेट में पीड़ा या मरोड़ भी नहीं होती। दस्त हो जाने के उपरान्त रोगी को अत्यधिक दुलबंता हो जाती है और दस्तों की संख्या शनैः-शनैः बढ़ती ही जाती है। आमतौर पर दस्तों के एक घण्टा पश्चात् वमन होने लगती है। वमन में पहले तो खाया हुआ भोजन निकलता है, तदनन्तर पीले रंग का पानी-सा निकलने लगता है और अन्त में वही चावलों की पीच्छ की भांति वमन भी होने लगती है। किन्तु वमन में भी किसी प्रकार की पीड़ा अथवा कष्ट नहीं होता। रोगी की जीभ सूखने लगती है और जिह्वा का रंग श्वेत हो जाता है, भूख रुक जाती है, किन्तु प्यास बढ़ जाती है। आमाशय स्थल को दवाने से पीड़ा होती है। शरीर में खिचावट इसी अवस्था में प्रारम्भ हो जाती है। यह रोग की पहली अवस्था होती है, जो कि केवल ६-७ घंटे रहने के उपरान्त समाप्त हो जाती है, और दूसरी अवस्था प्रारम्भ हो जाती है।

द्वितीयावस्था

द्वितीयावस्था में रोगी को वमन तथा दस्त बहुत अधिक होने लगते हैं। हाथ-पाँवों में तीव्र गति से खिचावट उत्पन्न हो जाती है, पेट तथा सिर में पीड़ा होने लगती है, प्यास बहुत अधिक बढ़ जाती है, तथा घबराहट और बेचैनी भी असीम रूप से बढ़ जाती है। इस अवस्था में रोगी को जल, अर्क अथवा औषधि जो कुछ भी पिलाया जाता है, तत्क्षण वमन द्वारा निकल जाता है। इसके पश्चात् रोगी तीसरी अवस्था को प्राप्त होता है।

तृतीयावस्था

तृतीयावस्था में रोगी का शरीर नितान्त ठण्डा हो जाता

है और खाल सिकुड़ने लगती है। हाथ, पाँव, नाक तथा मुंह सिकुड़ कर नीले पड़ जाते हैं, आंखें ज्योतिहीन-सी होकर गढ़ों में धंस जाती हैं। बगल की उष्णता का तापमान (Temperature) ४° से ५° साधारण फारनहाइट की सामान्य डिग्री से भी न्यून हो जाता है अर्थात् ९४° या ९५° सेन्टीग्रेड रह जाता है, प्रत्युत मुख में इससे भी न्यून हो जाता है। किन्तु स्त्री की गुप्त योनि तथा गुदा में इतना बढ़ता है कि १०४° या १०५° सें० अथवा कभी-कभी इससे भी ऊपर चढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त नाड़ी की गति दुर्बल धागे की भांति अत्यधिक क्षीण हो जाती है, जो कि बड़ी कठिनता से प्रतीत होती है, और नाड़ी की गति प्रति मिनट ९० से १०० तक हो जाती है। साँस की गति तीव्र हो जाती है। अत्यन्त छोटे-छोटे साँस एक मिनट में ३५ से ४० तक आने लगते हैं, जो कि अत्यन्त ठंडे होते हैं। बेचैनी तथा घबराहट अत्यधिक बढ़ जाती है, और रोगी बेचैन होकर इधर-उधर हाथ पाँव पटकने लगता है। इस अवस्था में रोगी का स्वर इतना क्षीण हो जाता है, मानो वह कानाफूंसी कर रहा हो। प्रायः स्वर बिल्कुल ही नहीं निकलता। रोगी बोलने की चेष्टा करता है, किन्तु केवल होंठ ही हिलकर रह जाते हैं। इसी अवस्था में रोगी का मूत्र रुक जाता है, और किसी-किसी रोगी के दस्त तथा वमन भी रुक जाते हैं, कुछ रोगियों को दस्त-वमन आते रहते हैं। अधिकतर रोगी इसी अवस्था में प्राणोत्सर्ग कर जाते हैं, किन्तु यदि तीसरी अवस्था कुशलता-पूर्वक पार करके रोगी चौथी अवस्था में पहुँच जाता है, तो उसके जीवित रहने की आशा हो जाती है।

चतुर्थावस्था

इस अवस्था में रोगी के स्वस्थ हो जाने की आशा हो

जाती है, क्योंकि शनैः-शनैः रोग घटना प्रारम्भ हो जाता है। वमन तथा दस्त रुक जते हैं, प्यास भी कम होने लगती है, नाड़ी की गति भी तीव्र हो जाती है। शरीर गर्म होने लगता है, अपितु किसी-किसी व्यक्ति को तो ज्वर भी हो जाता है। रोगी के मुख पर रमणीकता आकर स्वास्थ्य लाभ के चिह्न प्रकट होने लगते हैं और कुछ ही दिनों में रोगी पूर्णतया रोगमुक्त हो जाता है।

विशूचिका से बचने के नियम

विशूचिका के दिनों में यदि निम्नांकित शिक्षाओं पर सतर्कतापूर्वक आचरण किया जाए तो मनुष्य इस भयंकर और प्राणघातक रोग से बचा रह सकता है—

१. सर्वप्रथम यह बात ध्यान में रखें कि विशूचिका रोग गन्दगी तथा मलिनता के कारण ही उत्पन्न होता है; अतः शरीर, वस्त्र तथा घर को हर समय स्वच्छ रखें। घर को मक्खियों आदि से बचाने के लिए कभी-कभी दीवारों पर फिनायल छिड़कना उत्तम है।

२. अपने मन में रोग का भय कदापि उत्पन्न न होने दें, क्योंकि यह रोग डरपोक और कायर स्वभाव के व्यक्तियों को बहुत जल्द हो जाता है। आपको मन में सदैव यह दृढ़ विश्वास जमाए रखना चाहिए कि आपके पास यह रोग फटक भी नहीं सकता है।

३. विशूचिका के दिनों में पानी को कम से कम १० मिनट तक उबालें और तब ठण्डा करके छानकर पीना चाहिए। कुओं में पोटाशियम परमेंगनेट (लाल दवा) अवश्य डालें, इससे पानी स्वच्छ हो जाता है।

४. समस्त खाद्य पदार्थों को कपड़े अथवा जाली से ढक कर रखना चाहिए, ताकि उन पर मक्खियां न बैठ सकें। भोजन बनाते समय भी सफाई का पूरा-पूरा ध्यान रखें।

५. विशूचिका के दिनों में अत्यधिक पेट भरकर कभी नहीं खाना चाहिए, वरन् २-४ ग्रास की भूख शेष रखकर उठ जाना चाहिए। साथ ही यह भी ध्यान रहे कि अधिक भूखा भी नहीं रहना चाहिए। आमाशय का रिक्त रहना उन दिनों में विशेष हानिकारक होता है। जो लोग खाली पेट बाहर चले जाते हैं, प्रायः वही इस रोग में ग्रसित हो जाते हैं।

६. विशूचिका के दिनों में पूड़ी, कचौड़ी, विकृत शाक भाजियां, बासी भोजन तथा सड़े-गले फल आदि भूल-कर भी नहीं खाने चाहिएं। इसके अतिरिक्त बाजार की मिठाइयों आदि पर मक्खियां बैठकर उनको गंदा कर देती हैं, अतः बाजार की मिठाइयों से विशेष पर-हेज़ रखें। कई लोग केवल इसीलिए विशूचिका ग्रस्त हो जाते हैं, क्योंकि वे बाजार की गंदी मिठाइयां खाया करते हैं।

७. विशूचिका के दिनों में रेचन लेना बड़ा हानिकारक है।

८. रोगी के दस्त तथा वमन को तत्काल कलई और राख से दबा देना चाहिये, क्योंकि इससे कीटाणु फैलते हैं। तथा परिचायक को भी अत्यन्त सतर्कता और सफाई के साथ परिचर्या करनी चाहिये।

९. विशूचिका के दिनों में प्याज अवश्य सेवन करना चाहिये। नींबू का सेवन भी विशेष लाभप्रद होता है।

विशूचिका की शर्तिया चिकित्सा

हमारी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में विशूचिका के लिए संन्यासियों का एक विशेषातिविशेष प्रयोग ऐसा लिखा हुआ है, जिससे कि ९९ प्रतिशत रोगियों की प्राण रक्षा निश्चय ही हो जाती है। यह वह प्रयोग है, जिसे प्राप्त करने के लिए सैंकड़ों वैद्य, हकीम और डाक्टर तक लालायित थे। हमने बड़े परिश्रम से उसे खोज निकाला है और सर्व साधारण के हितार्थ 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में ज्यों का त्यों अंकित कर दिया है। उस प्रयोग का जान लेना मानो विशूचिका का सफल चिकित्सक वन जाना है, इच्छुक सज्जन लाभ उठावें।

अक्सीरे हैज़ा

यह अति सरल प्रयोग हैजा के लिए अक्सीर सिद्ध हो चुका है, और बड़ी-बड़ी औषधियाँ इसके सामने मात हैं। अधिकांश वैद्य आजकल अपने रोगियों पर इसी प्रयोग को व्यवहार में ला रहे हैं। शतशः अनुभूत और पूर्ण विश्वास योग्य प्रयोग है, यथासमय लाभ उठायें।

प्रयोग इस प्रकार है—

२॥ तोला प्याज और ७ नग काली मिर्च दोनों को कूंडी में डाल कर इतना अधिक घोटें की छानने कि जरूरत न रहे। फिर उसमें से जितना रोगी पी सके पिला दें। पानी पेट में पहुँचते ही प्यास व घबराहट तत्काल दूर हो जाती है, वमन तथा दस्त रुक जाते हैं और रोगी स्वस्थ होने लगता है।

विशूचिका का अत्युत्तम प्रयोग

प्रयोग तो अत्यन्त साधारण-सा है, किन्तु गुणों में सर्वोपरि है। विशूचिका के दिनों में यदि स्वस्थ व्यक्ति नित्यप्रति सेवन करता रहे तो वह सदैव विशूचिका से बचा रहता है। यहाँ तक कि रोगी की प्रारम्भिक अवस्था में इसके एक-दो बार के सेवन से ही रोग शान्त हो जाता है। मैं बार-बार आपसे अनुरोध करूंगा कि हैजे के दिनों में आप अपने घर के सभी लोगों को इसका प्रयोग कराएं।

प्रयोग इस प्रकार है—

एक नींबू प्रातःकाल के समय प्रतिदिन एक गिलास पानी में निचोड़ कर यथावश्यक मिश्री मिला कर सिकंजबीन बनाकर पिलाया करें। जो लोग नित्य नियमित इसका सेवन करेंगे, मेरा दावा है कि वे भगवतानुकम्पा से सदैव हैजे से बचे रहेंगे।

पीपल पत्र का चमत्कार

एक और प्रमाण आपके सम्मुख है जिससे आप समझ सकते हैं कि परम कृपालु जगदीश्वर ने इन साधारण पेड़-पौधों में कैसे अनमोल गुण भर दिये हैं। भला सोचिये तो सही कि हैजा जैसे भयंकर रोग को मार भगाने की क्षमता पीपल जैसे सर्वत्र प्राप्य वृक्ष के पत्तों में छुपी हुई है, यह ईश्वरीय चमत्कार नहीं तो क्या है? निम्न प्रयोग हैजे के लिये अचूक रामवाण है।

प्रयोग इस प्रकार है—

पीपल के पत्ते २ नग, लौंग ८ नग, दोनों को पानी में

घोंट कर कपड़े से छान लें और रोगी को १५-२० मिनट के अन्तर से २-३ घूंट पिलाते रहें। इसके सेवन से रोगी शीघ्र ही पानी को हजम करने लगता है और विशूचिका सम्वन्धी सभी विकार दूर हो जाते हैं।

हैजे के लिए रामबाण गोलियाँ

प्रकृति का एक और चमत्कार देखिये—इन गोलियों का प्रभाव देखते हुए इन्हें रामवाण कह देना किंचिन्मात्र अतिशयोक्ति नहीं। इसके गुण तो आपको तभी विदित होंगे जबकि आप परीक्षा करके स्वयं अपनी आँखों से देख लेंगे। सारांश यह है कि मैंने ऐसी प्रभावक और इतनी सरल औषधि अन्य नहीं देखी।

प्रयोग यह है—

आक की जड़ की छाल छाल २ भाग, काली मिर्च आधा भाग, काला नमक आधा भाग, तीनों को वारीक पीसकर अदरक के रस में निरन्तर २-३ घंटे तक खरल करें और चने के परिमाण की गोलियां बना लें। जब रोगी के वचने की कोई आशा शेष न रह गई हो तो १-१ घंटे के अन्तर से १-१ गोली उचित अनुपात के साथ दें। ईश्वरकृपा से शीघ्र ही आराम हो जायेगा। हमारा स्वयं का अनुभूत प्रयोग है। इसी प्रयोग से मैं तीन रोगियों को स्वस्थ कर चुका हूं। पाठकों को यह भी वता दूं कि मैं कोई वैद्य-हकीम तो नहीं हूं, किन्तु चिकित्सा ग्रंथों की सहायता से औषधियाँ वनाने का वहुत चाव है।

हैजे की अत्युत्तम वटी

फिटकड़ी भुनी हुई १ माशा, आक के लौंग २ माशा,

हल्दी २ माशा, लाल मिर्च के बीज एक माशा सबको सूक्ष्म पीसकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें तथा आवश्यकता के समय १-१ गोली 'पीपल पत्र का चमत्कार' शीर्षक के पूर्वोक्त प्रयोग के अनुपान से दें। ईश्वरकृपा से अति वमन और दस्त रुक जायेंगे, तथा रोगी को स्वास्थ्य लाभ हो जायेगा ।

विशूचिका के लिए अमृत

यह औषधि निस्सन्देह ही विशूचिका के लिए अमृतवत सिद्ध हुई है। परीक्षा करके लाभ उठायें ।

छोटी इलायची के छिलके एकत्रित करके सुरक्षित रखें और आवश्यकता के समय ४ तोला छिलके १ सेर पानी में पकायें। जब पकते-पकते पावभर पानी शेष रह जाय तो उतार कर ठंडा कर लें। और रोगी को २-२ तोला पिलाते रहें। विशूचिका की प्रत्येक अवस्था में यह औषधि तत्काल प्रभाव दिखाती है ।

एक बूटी का चमत्कार

अपामार्ग एक सुप्रसिद्ध बूटी है। इसकी जड़ ६ माशा लेकर सौंफ के अर्क अथवा पानी में घोट कर पिलाएँ। विशूचिका के रोगी के लिये रसायनवत् है ।

शीतल औषधि

श्वेत चंदन की लकड़ी को थोड़े से जल में घिसकर एक-एक चम्मच रोगी को थोड़े-थोड़े अन्तर से कई बार पिलाएँ। अति शीघ्र प्यास, वमन आदि शान्त होकर रोगी को पूर्ण शान्ति व शीतलता प्राप्त होगी । बड़ी ही सुखदायक औषधि है ।

हैजे की अन्तिम औषधि

जब कोई भी औषधि लाभप्रद सिद्ध न हो तो ऐसे रोगी के लिए यह हैजे की अन्तिम औषधि है, जो कि ईश्वर कृपा से कभी निष्फल नहीं जाती, आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभ उठायें।

३ माशा लौंग को ३ सेर पानी में उबालें। जब आधा पानी जल जाय, तो उतार कर ठंडा कर लें और घूंट-घूंट करके रोगी को पिलाते रहें। एक दिन पिलाते रहने से ही वमन, तृषा, बेचैनी आदि दूर होकर रोगी को आराम मिल जाता है, और स्वास्थ्य लाभ होने लगता है।

अत्युत्तम सरल प्रयोग

प्रथम

पपीता अकेला ही विशूचिका के लिये रसायन है। आवश्यकता के समय २ माशा अथवा न्यूनाधिक अर्क गुलाब २ तोला में घिसकर रोगी को पिलायें। शीघ्र ही लाभ प्रकट हो जायेगा।

द्वितीय

फिटकड़ी को पानी में घोलकर रोगी को घूंट-घूंट करके पिलायें, परम लाभप्रद है।

तृतीय

स्वर्णक्षीरी जड़ की छाल २ तोला, काली मिर्च २० नग, दोनों को पाव भर पानी में घोट कर थोड़ा-थोड़ा कर के रोगी को पिलाते रहें। ईश्वरानुग्रह से सम्पूर्ण लाभ हो जायेगा।

यकृत तथा प्लीहा रोग

यकृत और प्लीहा हमारे शरीर के विशेष महत्त्वपूर्ण अंग हैं। इसके विषय में पर्याप्त विवरण 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में हम लिख चुके हैं। आपने भी पढ़ा ही होगा। स्थानाभाव के कारण हम यहां पुनरुक्ति नहीं करना चाहते, अपितु यकृत और प्लीहा के विशेष रोगों के उत्तम प्रयोग लिखकर पाठकों की भलाई करना श्रेयस्कर समझते हैं। नीचे जो प्रयोग वर्णित हैं, वे शतशोनुभूत और प्रशंसित हैं, परीक्षा करके लाभ उठायें।

यकृत की दुर्बलता

यकृत की चार शक्तियों में से किसी एक के बिगड़ जाने से यकृत दुर्बल हो जाता है। इसमें रोगी का शरीर दुर्बल हो जाता है। रंग फीका पड़ जाता है, भूख मारी जाती है, यकृत में कैलूस पहुँचते ही मन्द-मन्द पीड़ा होने लगती है, मल अत्यल्प मात्रा में और मांस के धोवन के रंग का आता है। यदि ध्यानपूर्वक इसकी चिकित्सा न की जाय तो पांडु तथा यकृतोदर आदि भयंकर रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

यकृत पौष्टिक चूर्ण

यह रोग यकृत की दुर्बलता को दूर करने में लाजवाव है। एक दो नहीं प्रत्युत सैंकड़ों रोगी इससे लाभ उठा चुके हैं। यकृत दुर्बलता के निवारणार्थ यही सर्वोत्तम औषधि है, जो कि सर्वथा अचूक सिद्ध होती है। यथासमय लाभ उठायें।

प्रयोग इस प्रकार है—

बालछड़ तथा नागरमोथा (दोनों ही वस्तुएँ पंसारी के यहां सरलता से मिल जाती हैं) बराबर-बराबर मात्रा में लें समय और बारीक पीसकर शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के इसमें से १-१ माशा की मात्रा प्रातः, दोपहर और सांय-काल ठंडे पानी के साथ सेवन करायें। ईश्वर कृपा से कुछ ही दिनों के निरंतर सेवन से पूरा लाभ हो जायेगा। यकृत पुष्ट होकर भली प्रकार रक्त निर्माण करने लग जायेगा और भूख खुलकर लगेगी। जो रोगी सेवन करेगा इसके गुणों को देख-कर रोगी मुग्ध हो जायेगा।

अति सुगम उपचार

यकृत की दुर्बलता को दूर करने के लिए इससे अधिक सुगम प्रयोग मिलना कठिन है। देखने में साधारण-सा है, किन्तु गुण इसके भी पूर्वोक्त से कुछ कम नहीं, यदि रोगी निरन्तर नियमित सेवन करे।

प्रयोग इस प्रकार है—

१ छटाँक सावत चने उबालें, फिर घी में भूनकर थोड़ा सा नमक मिलाकर रोगी को प्रतिदिन प्रातः काल खिलाया करें किन्तु मिर्च कदापि न डालें। और यदि घी में न भूने जायें, वरन् केवल उबले हुए खाये जायें, तो और भी गुण-कारी सिद्ध हों। इसी प्रकार २० दिन के निरन्तर सेवन से शर्तिया लाभ हो जायेगा।

अद्भुत टोटका

लोहे के टुकड़े को आग में तपाकर पानी में बुझा लें और

फिर उसमें उचित परिमाण में गाय की छाछ व खाँड मिलाकर रोगी को प्रतिदिन प्रातःकाल निराहार मुख पिलाया करें । कुछेक दिनों में ही यकृत की दुर्बलता जड़ से दूर हो जायेगी ।

यकृत शोथ

यह वड़ा ही दुस्साध्य रोग है । इसमें रोगी के यकृत में सूजन उत्पन्न हो जाती है, हर समय हल्का ज्वर बना रहता है, तथा रोगी को सीधा लेटने में घोर कष्ट होता है । भूख रुक जाती है, थोड़ा चलने-फिरने से ही सांस फूल जाता है, तथा यकृत के स्थान को दबाने से पीड़ा होती है । इस रोग की पहचान करने के लिए सबसे विशेष लक्षण यह है कि दायीं करवट नहीं लेट सकता । इस रोग पर बड़ी-बड़ी उत्तम औषधियां भी कई वार निष्फल हो जाती हैं, किन्तु हमने इस पुस्तक में वड़े-बड़े विद्वान् वैद्यों और हकीमों के वे रामबाण प्रयोग संग्रह किये हैं जो कि कभी निष्फल नहीं जाते । सैंकड़ों वैद्यों द्वारा परीक्षित हैं ।

यकृत शोथहर वटी

ये गोलियाँ ऐसी प्रभावक हैं कि उन्हें अन्य योगों में सर्वप्रथम स्थान देना ही उचित है । विशेषता यह है कि नितान्त साधारण सर्वत्र प्राप्त वस्तुओं से बनती हैं और जादू के समान प्रभाव दर्शाती हैं ।

प्रयोग इस प्रकार है—

आक के पीले पत्ते और हल्दी बराबर-बराबर लेकर

बारीक पीसें और १-१ रत्ती की गोलियाँ बना लें और आवश्यकता के समय निम्न विधि से सेवन करायें।

सेवन विधि—

प्रथम दिवस सौंफ, कासनी, मकोय, घी ग्वार का गूदा प्रत्येक १-१ तोला लेकर पावभर पानी में पकाएं। जब तीन छटाँक पानी रह जाय, तो उतार कर छान लें। बस इसी क्वाथ के साथ पहले दिन ५ गोलियाँ, दूसरे दिन ६ गोलियां, इसी प्रकार १-१ गोली प्रतिदिन बढ़ाते हुए १२ तक ले जायें। तदनन्तर १-१ गोली क्रमशः घटाते हुए पुनः पाँच तक ले आयें। ईश्वर कृपा से इसी कालान्तर में रोग का नाम भी न रहेगा। यह प्रयोग न केवल यकृत शोथ, वरन् जलोदर के लिए भी परम लाभकारी है। परीक्षा करके लाभ उठायें।

यकृत शोध के लिए आयुर्वैदिक चिकित्सा का अचूक दर्प्य योग

यकृत शोथ चाहे जिस कारण से भी क्यों न हो, यह दर्प्य योग सर्वथा अचूक सिद्धि होता है। न केवल यकृत शोथ, अपितु यकृत के सुद्दे दूर करने के लिए भी यह औषधि विशेष गुणकारी है। जो लोग इसे बनाकर सेवन करेंगे, निश्चय ही लाभान्वित होंगे। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभ उठायें।

प्रयोग इस प्रकार है—

मुलहठी तथा नौशादर, दोनों को समान मात्रा में

बारीक पीसकर शीशी में सुरक्षित रख लें, और आवश्यकता के समय दिन में तीन वार १-१ माशा औषधि ठंडे पानी के साथ सेवन करायें। ईश्वर कृपा से अत्यल्पकाल में ही पूर्ण लाभ हो जायेगा। विश्वस्त प्रयोग है।

प्रशंसित दुग्ध चिकित्सा

दिन में कम से कम चार बार रोगी के यकृत स्थान पर दूध की टकोर कराएँ। किन्तु हर बार कम से कम डेढ़ घंटे टकोर होनी चाहिए। दो एक दिन में ही शोथ दूर होकर नितान्त आराम हो जायेगा। दूध से टकोर करने की विधि गत पृष्ठों में लिखी जा चुकी है। साथ ही यदि रोगी को अर्क मकोय पिलाया जाय, तो अति शीघ्र लाभ हो जाता है। कई बार का अनुभूत सफल प्रयोग है।

पाण्डु रोग (पीलिया)

जनसाधारण की भाषा में इस रोग का नाम पीलिया है। यह बड़ा ही कष्टसाध्य रोग है। इसमें पहले रोगी की आंखें और फिर नाक तथा मुख पीले हो जाते हैं। यहाँ तक कि उसे संसार की प्रत्येक वस्तु पीली ही दिखाई पड़ती है। इसके दो भेद होते हैं—(१) पीला (२) श्याम। प्रायः यह रोग गर्म पदार्थों के सेवनाधिक्य से यकृत में पित अधिक उत्पन्न होकर रक्त को पीला कर देता है। इसी प्रकार बात की अधिकता के कारण रक्त काला होकर श्याम पाण्डु रोग उत्पन्न होता है।

पाण्डु रोग के लक्षण

यद्यपि 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में इस रोग के लक्षण

सविस्तार लिखे गये हैं, तथापि बहुप्रचलित रोग होने के कारण हम संक्षेप में यहाँ भी लिख देते हैं, ताकि आवश्यकता के समय पाठकों को उक्त् पुस्तक की अनुपस्थिति न खले। फिर भी पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए उस पुस्तक का अध्ययन करना आवश्यक है।

इसके प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं—

पीले पाण्डु रोग में पहले रोगी का मूत्र पीला तथा श्याम पाण्डु रोग में मूत्र श्याम वर्ण का आने लगता है। तत्पश्चात् यह रंग आंखों, फिर नखों और मुख पर, तथा अन्त में समस्त शरीर पर प्रकट हो जाता है। रोगी का पेट सदैव भरा सा रहता है, भूख नितान्त कम हो जाती है, चिकने पदार्थों के प्रति अरुचि हो जाती है, टट्टी मैली दुर्गन्धयुक्त होती है और शरीर भर में खुजली सी होने लगती है। कई रोगियों को हर वस्तु रोग भेद के अनुसार पीली अथवा काली सी दिखाई देने लगती है।

पाण्डु रोग के अशुभ लक्षण

यदि दीर्घकाल तक रोग दूर न होकर पुराना हो जाए और रोगी अत्यधिक दुर्बल होकर प्रलाप करने लगे अथवा शरीर में खिचावट सी प्रतीत होने लगे, तो उस रोगी के स्वस्थ होने की आशा नहीं रह जाती। अतः प्रारम्भिक अवस्था में ही रोग की समुचित चिकित्सा करने में उपेक्षा कदापि न करें।

पाण्डु रोग की सफल चिकित्सा

हम दावे के साथ कह सकते हैं कि हमारी पूर्व प्रकाशित 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' नामक पुस्तक में पाण्डु

रोग के लिए बड़े-बड़े संन्यासियों के गुप्तातिगुप्त विशेष योग जैसे प्रभावक हैं, वैसे आयुर्वेद के बड़े-बड़े ग्रन्थों में भी आप को कम ही मिलेंगे। इन्हीं प्रयोगों से कभी-कभी संन्यासियों ने चमत्कार दिखाकर लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया है, बड़े ही आश्चर्यजनक सफल प्रयोग अंकित हैं, कभी आप भी अवश्य परीक्षा करें।

संन्यासियों के रहस्यमय प्रयोग खोजने के उपरान्त हम ने आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा के वे प्रशंसनीय योग खोजने प्रारम्भ कर दिये जो कि विना एक भी पैसा व्यय किए प्राकृतिक जड़ी बूटियों और पेड़ पौधों आदि से बनते हैं, अथवा अत्यल्प मूल्य में निर्मित होकर प्रभाव में बड़े-बडे मूल्यवान योगों से बाजी मार ले जाते हैं। अथक परिश्रम के बाद ढूँढ़-ढूँढ़ कर हमने ऐसे प्रयोग संग्रह कर ही लिये, और आज इस पुस्तक में आपको भेंट कर रहे हैं। आशा है, पाठकगण लाभ उठाकर शुभाशीष द्वारा सेवक को कृतार्थ करेंगे।

पाण्डु रोग का सर्वोत्तम प्रयोग

यह प्रयोग निस्सन्देह अक्सीर है जो सज्जन इसे प्रयोग में लायेंगे, प्राप्त करके मुग्ध हो उठेंगे।

आक की जड़ की छाल ६ रत्ती, काली मिर्च १२ नग, पानी में घोट छानकर दिन में दो बार रोगी को पिलायें और गरम व स्निग्ध वस्तुओं से परहेज करायें। ईश्वरकृपा से अति शीघ्र रोग निर्मूल हो जायेगा।

अति सरल प्रयोग

कच्ची फिटकरी १॥ तोला को अति सूक्ष्म पीसकर

२१ पुड़िया बराबर-बराबर मात्रा की बना लें और प्रतिदिन प्रातःकाल एक पुड़िया गाय के मक्खन में मिला कर दें। कुछ ही दिनों में पुराने से पुराना पाण्डु रोग दूर हो जायेगा। इस प्रयोग को साधारण न समझें, अनेक बार उत्तमोत्तम योगों से बढ़-चढ़कर सिद्ध हो चुका है।

तदनुसार

उत्कृष्ट प्रकार की फिटकड़ी को भून लें। आवश्यकता के समय एक चुटकी मात्रा खिलाकर ऊपर से एक प्याला दही पिला दें। इसी प्रकार दूसरे दिन दो चुटकी, तीसरे दिन तीन चुटकी, फिर चार दिन तक लगातार ३-३ चुटकी सेवन कराते रहें। यदि एक मास पुराना रोग भी होगा, तो केवल एक सप्ताह में जड़मूल से जाता रहेगा। पीत-श्याम दोनों प्रकार के पाण्डु पर लाभदायक है।

चमत्कारी जड़ी

इटसिट की जड़ के छोटे-छोटे टुकड़े करके प्रत्येक टुकड़े को ८-९ तारों के कच्चे सूत के धागे में गांठ लगाकर बाँधते जायें, यहाँ तक कि २१ टुकड़े बंध जायें। फिर इस की माला बनाकर रोगी को पहना दें। दो एक दिन में ही अद्भुत चमत्कार प्रकट होगा। माला दिन प्रतिदिन बढ़ती जायेगी और पाण्डु रोग घटता चला जायेगा। यदि लोगों पर अपना प्रभाव जमाना चाहें तो माला की गांठें लगाते हुए कुछ ऊट-पटांग सा मन्त्र पढ़ते जायें। जैसा कि एक महात्मा जी किया करते थे। आप विश्वास न करेंगे, आस-पास के सैंकड़ों गाँवों के लोग इसे महात्मा जी के मन्त्र की करामात समझ कर उन्हें देवता की भांति पूजने लगे थे।

प्राकृतिक औषधि

कसौंधी के पत्ते ८, काली मिर्च ४ नग, दोनों को १० तोला पानी में पीसकर रोगी को पिलाया करें। ईश्वरकृपा से गिनती के दिनों में पाण्डु रोग दूर हो जायेगा।

एक और प्रशंसित प्रयोग

प्रत्यक्ष में तो यह प्रयोग नितांत साधारण सा है, किंतु हमारे परम मित्र श्री वीरेन्द्र कुमार जी जैन प्रोप्राइटर जनरल फार्मेसी तथा वीरामृत औषधालय इटावा, का अनेक बार का परीक्षित है। श्री जैन साहब इसकी बड़ी प्रशंसा किया करते हैं।

प्रयोग इस प्रकार है—

३ माशा रेबन्दचीनी बकरी के दूध में घिस कर रोगी को चटाया करें। आशा ही नहीं, वरन् पूरा विश्वास है कि एक सप्ताह में रोग का नाम भी न रहेगा।

पाण्डु रोग के लिए अक्सीर तुल्य संन्यासियाना प्रयोग

यद्यपि यह प्रयोग हम अपने प्रिय पाठकों को 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में भी भेंट कर चुके हैं तथापि अति सुगम और विद्युत के समान प्रभावक होने के कारण हम यहाँ भी अंकित कर रहे हैं, ताकि अधिकाधिक भाई लाभान्वित हो सकें। यह प्रयोग हमारे एक घनिष्ठ मित्र वैद्य को श्री दुर्गा प्रसाद जी वैद्य, बड़ौदा से प्राप्त हुआ। चाहे रोगी के नेत्र, नख, मूत्र, त्वचा आदि सभी पीले पड़ गए हों, इस दवा के

कंठ से उतरते ही रोग दूर होना प्रारम्भ हो जाता है, और रोगी को तत्काल शान्ति व शीतलता प्राप्त हो जाती है।

प्रयोग इस प्रकार है—

मूली के हरे पत्ते कूटकर रस निचोड़ लें और उचित मात्रा में दानेदार चीनी मिलाकर छान कर रोगी को पिलाया करें। जवान रोगी के लिए प्रतिदिन आधा सेर पर्याप्त है, पीते ही रोगी को ठंडक पड़ जायेगी, भूख खुल कर लगेगी, कुछेक दस्त भी आया करेंगे, और ,रोग दिन दिन घटते हुए एक सप्ताह में नितांत मिट जायेगा।

कीकर का चमत्कार

हमारे एक परिचित वैद्य जी ने यह प्रयोग एक बार ऐसे रोगी पर अनुभव किया, जिसके स्वस्थ होने की आशा न रह गई थी किन्तु ईश्वरकृपा से इस प्रयोग ने वह चमत्कार दिखाया कि उन्हें चकित रह जाना पड़ा। सप्ताह भर में रोग का नाम भी न रहा।

प्रयोग इस प्रकार है—

छाया में सुखाई हुई कीकर (बबूल) की फलियां १ तोला लगभग लाधा सेर पानी में ठंडाई की भांति घोट और छान कर और तीन तोला मिश्री मिला कर रोगी को नित्य प्रातः पिलाया करें। निरन्तर सेवन से एक सप्ताह में रोग समूल नष्ट हो जायेगा।

तदनुसार

कीकर के फूल छाया में सुखा कर खरल करें, और समान मात्रा में मिश्री मिला कर सुरक्षित रखें। आवश्यकता

के समय ६ माशा से १ तोला तक प्रातःकाल पानी के साथ खिला दिया करें। उपर्युक्त प्रयोग के समान ही गुणकारी है।

पाण्डु की अनुभूत औषधि

हमारे एक मित्र चचेरे भाई युवावस्था में पाण्डु रोग के शिकार हो गए। उन्होंने एक प्रसिद्ध वैद्य महोदय से कोई ऐसी औषधि पूछी जोकि उनके गांव में ही मिल सके और चूँकि बेचारे निर्धन व्यक्ति थे, अतः उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति भी उन्हें स्पष्ट बता दी। वैद्य महोदय ने सकृपा निम्न प्रयोग सेवन करने के लिए कहा जो ईश्वर कृपा से अत्यन्त सफल सिद्ध हुआ।

पीपल तथा लसूड़ी, दोनों के ७-७ पत्ते ठंडाई की भांति घोट छानकर रोगी को पिलाया करें। किन्तु स्मरण रहे कि उसमें मिश्री अथवा चीनी न मिला कर नमक मिलाया करें। दस दिन के निरन्तर सेवन से शर्तिया लाभ हो जायेगा।

तदनुसार

चाहे पाण्डु रोग अपनी अन्तिम अवस्था में ही क्यों न पहुँच गया हो, शरीर का रंग हल्दी के समान ही पीला क्यौं न हो गया हो, किन्तु यह प्रयोग उस दशा में भी निष्फल नहीं जाता। मेरा तो अनुमान है कि इससे उत्तम प्रयोग पाण्डु रोग के लिए दूसरा न होगा। स्वयं परीक्षा कर देखें।

पीपल की ऊपर की छाल को उतार कर फेंक दें और अन्दर की कोमल छाल ४ तोला लेकर टुकड़े-टुकड़े करके

रात्रि को कोरे कूजे में लगभग १।। पाव जल में भिगो कर रख दें। प्रातःकाल पानी निथारकर छान लें, और बिना मिश्री मिलाए रोगी को पिला दें। इसी प्रकार निरन्तरदो सप्ताह तक सेवन कराते रहें। सेवन काल में दही अथवा दही की लस्सी अवश्य सेवन कराते रहें, निश्चय ही रोग दूर हो जायेगा। किन्तु शरद ऋतु में समोष्ण करके पिलाना चाहिए। यदि सम्भव हो तो गेहूं की रोटी और चनेकी दाल के पानी के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से परहेज रखें। दो सप्ताह के सपथ्य से सेवन पुराना पाण्डु रोग भी नितान्त नष्ट हो जाता है।

सूचना—यदि किसी रोगी को इससे भी लाभ न हो, तो उसके लिए अन्तिम चिकित्सा वही संन्यासी प्रयोग है, जो 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में लिखा हुआ है।

प्लीहा वृद्धि

प्लीहा वाईं ओर की पसलियों के नीचे स्थित एक छोटा सा अंग है, जो कि यकृत से वात को सुखा कर आमाशय पर टपकता है, जिससे हमें भूख लगती है। प्लीहा जितनी ही छोटी होगी, शरीर उतना ही मोटा और पुष्ट होगा, तथा प्लीहा जितनी ही बड़ी होगी, शरीर उतना ही दुर्बल और कृशकाय होगा। प्रायः लोगों की प्लीहा (तिल्ली) बढ़ जाती है, जिससे उन्हें घोर कष्ट उठाना पड़ता है, और शरीर दिन प्रतिदिन क्षीण होता चला जाता है। प्लीहा-वृद्धि का रोगी न भली-भांति खा-ही सकता है, न चल फिर सकता है।

प्लीहा रोग के कारण

प्रायः विषम ज्वर में ग्रसित रहने के पश्चात् अथवा

ज्वर दशा में ठंडा पानी पी लेने से यह रोग उत्पन्न हो जाता है। कफजनक तथा वातजनक पदार्थों के सेवन से भी यह रोग अधिकतर हो जाता है। यही कारण है कि बंगाल आदि प्रान्तों में चावल अधिक खाने वाले अधिकांश व्यक्ति इस रोग में ग्रस्त रहते हैं।

प्लीहा वृद्धि के लक्षण

रोगी की बाईं ओर की पसलियों के नीचे टटोलने से एक टुकड़ा सा प्रतीत होता है। कई बार यह टुकड़ा बढ़ते-बढ़ते रोगी का सारा पेट ही घेर लेता है। उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, शरीर की रंगत फीकी पड़ जाती है। थोड़ा सा चलने फिरने से ही श्वास फूल जाता है, तथा प्लीहा के स्थान पर ठोकने से ठोस ध्वनि निकलती है। स्वस्थ व्यक्ति के टटोलने से बिल्कुल प्रतीत नहीं होती।

प्लीहानाशक सरल प्रयोग

उत्तम प्रकार की एक मूली लेकर लम्बाई में उसकी चार फाँकें करके चीनी की तश्तरी में रखकर उस पर पिसा हुआ नौशादर ६ माशा ऊपर से डालकर रात भर रखा रहने दें, और प्रातःकाल रोगी को प्रथम वह पानी जो तश्तरी में मूली से निकलकर भर गया हो, पिला दें, तथा ऊपर से चारों फाँकें खिला दें। इसी प्रकार नित्यप्रति सेवन कराते रहें। ईश्वर कृपा से दिन प्रतिदिन प्लीहा-वृद्धि घटती जायेगी और कुछ ही दिनों में अपनी असली अवस्था में आ जायेगी।

प्लीहा की दुग्ध चिकित्सा

हम पहले भी लिख चुके हैं, कि दूध ऐसा अनुपम गुण-युक्त पदार्थ है, जिससे अनेक कष्टसाध्य रोगों की सफल

चिकित्सा की जा सकती है। हम आपको दूसरा रुल तिब्बा का एक ऐसा ही प्रयोग भेंट करते हैं, जो कि प्लीहा के लिए अत्यधिक लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

गाय का १ सेर दूध लेकर पकायें। जब दो तीन उबाल आ चुकें, तो उबलते हुए दूध में ४ तोला कलमी शोरा डाल दें और तत्क्षण चूल्हे पर से उतार लें। जब दूध फट जाए तो उसका पानी कपड़े में छान लें और तीन दिन निरन्तर रोगी को पिलाएँ, तथा रोगी को आदेश कर दें कि इसे पीने के वाद बाईं करवट लेट जाया करे। भोजन में खिचड़ी, मूँग की दाल आदि खूब घी डालकर खिलाएँ। यदि तीन दिन में पूरा-पूरा लाभ न हो तो फिर निरन्तर सात दिन तक सेवन करायें। ईश्वर कृपा से निश्चय ही प्लीहा असली दशा में आ जायेगी। यह प्रयोग सैकड़ों बार का परीक्षित है, अस्तु लाभ होने में सन्देह के लिए कोई स्थान नहीं।

प्लीहानाशक सर्वोत्तम औषधि

यह औषधि प्रत्यक्ष में जितनी साधारण सी प्रतीत होती है, गुणों में उतनी ही बढ़ चढ़कर है। एक बार स्वयं मैंने भी इसकी परीक्षा की। सच तो यह है कि पहले मुझे भी इस पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब रोगी पर इसका अद्भुत प्रभाव अपनी आँखों से देखा, तो अत्यधिक आनन्द प्राप्त हुआ। निस्सन्देह आशा से अधिक लाभकारी प्रयोग है—

नींबू का अर्क १ तोला और प्याज का अर्क ६ माशा; दोनों को मिला कर प्रतिदिन पिला दिया करें। कुछेक दिन में ही प्लीहा की शोथ मिटकर पूर्वावस्था में आ जायगी। नींबू का अचार भी प्लीहा रोगी के लिए परम लाभप्रद है।

अन्य प्रयोग

रीठे का छिलका १० तोला, पीली हरड़ का वक्कल २० तोला, दोनों को अति सूक्ष्म पीसकर शहद में मिला लें और प्रतिदिन ३ माशा की मात्रा में रोगी को चटाया करें। जलोदर तथा पाण्डु रोग के लिये अक्सीर है।

अन्तड़ियों के रोग

अंतड़ियों के विषय में हम 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' के प्रारम्भिक पृष्ठों पर अंग परिचय में विस्तृत विवरण लिख चुके हैं। यहाँ हम केवल अंतड़ियों के प्रमुख रोगों का हाल लिखेंगे, और साथ ही उनके ऐसे १-२ उत्तम प्रयोग भी, जैसे कि आपने पहले देखे तो क्या सुने भी न होंगे। जब आप इस पुस्तक की सहायता से बिना पैसों के ही बड़े-बड़े रोगों को जड़ मूल से उड़ा देने में सफल हो सकेंगे, तभी यह अनुभव करेंगे कि इस पुस्तक का जितना मूल्य आपने चुकाया है, वह व्यर्थ नहीं गया, अपितु कहीं अधिक लाभ उठाया है।

प्रवाहिका (मरोड़)

जन साधारण की भाषा में इस रोग का नाम मरोड़ है। यह बड़ा ही दुःखदायी रोग है, जो कि बड़ी आँतों में तीक्ष्ण मल रुक जाने से उत्पन्न हो जाता है। प्रायः यह रोग बासी तथा सड़ा हुआ भोजन खाने या कच्चा दूध अधिक पीने से होता है। कभी-कभी तीव्र रेचन लेने अथवा कोष्ठबद्धता से हो जाया करता है।

इसके दो भेद हैं, जो कि हम 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र'

में सविस्तार लिख चुके हैं। वहीं देखने का कष्ट करें। उस पुस्तक में दोनों भेदों की अलग-अलग पहिचान भी लिख दी गई है, और उत्तमोत्तम संन्यासी चुटकुले भी।

हर प्रकार की मरोड़ के लिए अक्सीरवत् संन्यासी प्रयोग

प्रयोग क्या है ? चमत्कार है। यह प्रयोग हमने अपनी उपरोक्त पुस्तक में भी दिया है, और मेरा अनुमान है कि इसके साधारण द्रव्यों व अक्सीरी प्रभाव को देखते हुए इससे बढ़कर दूसरा योग न होगा। चाहे रोगी पेट की मरोड़ के कारण छटपटा रहा हो, और चारपाई से उठने की भी शक्ति न रह गई हो, इसकी कुछेक मात्राओं से ही नितांत कष्ट-मुक्त हो जाता है। संन्यासियों का विशेष रहस्यमय हृदयांगत योग है।

योग

शीशम के पत्ते ६ माशा, हरा पोदीना १ तोला अथवा सूखा हुआ ६ माशा आवश्यकतानुसार मिश्री मिला कर ठंडाई के समान पानी में घोट छान लें और प्रातः सायं पिलाया करें। निश्चय लाभ होगा।

चमत्कारी चुटकी

जब कोई रोगी मरोड़ की पीड़ा से बेचैन हो, तो तनिक इस औषधि को बना कर निम्न विधि से एक चुटकी रोगी को दें और फिर उसका चमत्कारी प्रभाव देखें।

योग इस प्रकार है—

नीम वृक्ष की अन्तर छाल अर्थात् छाल का भीतरी

कोमल भाग लोहे के तवे पर रख कर जला लें और उसकी राख को बारीक पीस कर रोगी को १ चुटकी दही में मिला कर पिला दें। ईश्वर कृपा से एक चुटकी में ही नितान्त आराम हो जायगा। यदि एक मात्रा में पूरा लाभ न हो तो एक और दे दें।

तत्क्षण प्रभावक योग

प्याज का रस ६ माशा, अफीम आधी रत्ती, दोनों को मिला कर रोगी को पिला दें। उसी समय लाभ हो जायेगा। नचेत् दिन भर में २ से ३ बार तक पिलाएँ। ईश्वर कृपा से मरोड़ का नाम भी न रह जायेगा। इसके अतिरिक्त यह औषधि अतिसार के लिए भी परम लाभदायक है।

प्रवाहिका नाशक चूर्ण

यथावश्यक जंगीर हरड़ लेकर गाय के घी से चिकनी करके तवे पर भून लें, और बारीक पीस कर सम भाग खांड में मिलाकर रख छोड़ें। आवश्यकता के समय प्रातःकाल ६ माशा की मात्रा पानी के साथ दिया करें। ईश्वर कृपा से एक दो मात्राओं से ही स्वास्थ्य लाभ हो जायेगा। शतशोनुभूत प्रयोग है।

सुगम प्रयोगावली

१. पीपल की छाल का कोयला २ माशे फंका कर ऊपर से मिश्री का शर्बत पिलाया करें। मरोड़ व दस्तों के लिए लाभकारी है।

२. केले की एक फली खांड लगा कर खिलाएँ। प्रवाहिका के लिए जादू असर दवा सिद्ध होगी।

३. छोटी दूधी नामक बूटी १ तोला, काली मिर्च ७ दाने मिलाकर घोट छान कर रोगी को पिलाएँ। ईश्वर कृपा सेएक ही दिन में नितान्त आराम हो जाएगा। नचेत् एक दो दिन और पिलाएँ। प्रवाहिका की शर्तिया दवा है।

संग्रहणी

संग्रहणी उस रोग को कहते हैं जिसमें प्रतिदिन दो चार दस्त मटियाले से रंग के आकर रोगी को स्वतः ही कोष्ठ-बद्धता हो जाती है और फिर पूर्ववत् दस्त आने लगते हैं। इस रोग में रोगी दिन प्रतिदिन दुर्बल होकर परलोकगामी हो जाता है। इस पुस्तक में हम आप लोगों को ऐसे प्रयोग भेंट कर रहे हैं, जो कि सैंकड़ों रोगियों पर परीक्षित होकर अचूक रामबाण सिद्ध हो चुके हैं। १-१ प्रयोग हजारों रुपयों से बढ़कर है। इनके गुण आप को तभी विदित होंगे, जब कि आवश्यकता के समय आप इनकी परीक्षा करके स्वयं लाभ उठायेंगे।

संग्रहणी के लिए संन्यासी प्रयोग

यह बात तो सर्व विदित है कि संन्यासियों के प्रयोग ऐसे अचूक होते हैं कि उनके सामने आयुर्वेद के अच्छे-अच्छे योग भी पानी भरते हैं। जिन सज्जनों को इस बात में अब भी सन्देह हो, वे तनिक हमारी पूर्वलिखित पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' का अध्ययन करें और उसके प्रयोगों की तनिक परीक्षा कर देखें। ईश्वर कृपा से उनकी शंका मिट जायेगी। इसी प्रकार का एक अत्युत्तम संन्यासी प्रयोग हम आपको यहाँ भी भेंट करते हैं, जो कि संग्रहणी के लिए सर्वोत्तम प्रयोग सिद्ध हो चुका है।

प्रयोग इस प्रकार है—

वकायन के ताजा फल आवश्यकतानुसार लेकर खट्टी छाछ में भिगो दें, और सुरक्षित स्थान में रख दें। जब फल बिल्कुल गल जाये, तो अच्छी तरह मलकर गुठलियां निकाल कर छाया में सुखा लें। पूरी तरह सूख जाने पर भली भाँति पीस कर चूर्ण बना लें। आवश्यकता के समय प्रतिदिन ६ माशा चूर्ण १ तोला मक्खन में मिला कर खिलाया करें। आठ-दस दिन में संग्रहणी रोग जड़मूल से जाता रहेगा।

सर्वोत्तम संग्रहणी नाशक चूर्ण

जनाब हकीम मुहम्मद अब्दुलगनी साहब का कथन है कि यह संग्रहणी की अन्तिम दवा है। इससे बढ़कर दूसरा योग शायद ही कोई हो। सैंकड़ों निराश रोगियों पर अनुभव करके सफल पाया है।

योग इस प्रकार है

इन्द्र जौ ५ तोला, कद्दू की मिंगी, रूमी मस्तंगी, वंशलोचन प्रत्येक १-१ तोला, भुनी हुई भांग १ तोला, धाय पुष्प १ तोला, पोस्त समाक ६ माशा, भुनी हुई सौंफ १ तोला, शुद्ध अफीम ३ माशा, शुद्ध कुचला ६ माशा, फौलाद भस्म १ तोला, सबको अति सूक्ष्म पीसकर चूर्ण बना लें और १ माशा दही अथवा छाछ के साथ दिया करें। भोजन में उत्तम वासुमति चावल दही अथवा छाछ के साथ दें। अन्य सब वस्तुओं से परहेज रखना आवश्यक है। कुछेक दिनों में दोनों समय निरन्तर सेवन करने से पूर्णतया लाभ हो जायगा। अचूक औषधि है।

अक्सीरे संग्रहणी

चार तोला कुड़ा छाल पीस कर सात पुड़िया बना लें और रोगी को प्रतिदिन १ पुड़िया दही या छाछ से खिलाया करें। भूख लगने पर दही और चावल खूब खिलाएँ। ईश्वर कृपा से एक सप्ताह में ही रोग जड़मूल से जाता रहेगा।

कोष्ठबद्धता

जन साधारण इसे अपनी भाषा में 'कब्ज' के नाम से पुकारते हैं। यह बड़ा ही भयानक रोग है। प्राचीन चिकित्सकों ने इसे सैंकड़ों रोगों की जननी बताया है। प्रत्यक्षत: साधारण सा रोग होने कारण अधिकतर लोग इसकी चिकित्सा की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देते, इसी कारण शिर पीड़ा, प्रतिश्याय, दृष्टिमांद्य, बेचैनी, भूखअल्पता, पेटशूल, अर्श आदि भाँति-भाँति के रोग आ घेरते हैं। अतः इस रोग को साधारण न समझ कर तत्काल कोष्ठबद्धता नाशक औषधियाँ सेवन करनी चाहिएँ। इसके कारण, लक्षण आदि 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में सविस्तर लिख चुके हैं। यहां केवल उत्तमोत्तम प्रयोग भेंट किए जाते हैं।

कोष्ठबद्धता निवारक सरल उपाय

१. गेहूं के मोटे और अनछने आटे की रोटी पौष्टिक, पाचक तथा कोष्ठबद्धता निवारक होती है; अतः नैत्यिक कोष्ठबद्धता के रोगियों के लिए भी परम लाभप्रद है।

२. अधिकतर लोगों को खाना खाने के पश्चात् पानी न पीने के कारण ही कोष्ठबद्धता हुआ करती है, अतः भोजन के बाद पानी अवश्य पीना चाहिए। किन्तु अधिक पानी भी हानिकारक है।

३. प्रातःकाल उठते ही ठंडा पानी पीना कोष्ठबद्धता दूर करने की सर्वोत्तम विधि है। किन्तु नैत्यिक स्वभाव डालना आमाशय के लिए हानिकर हैं।

४. कभी-कभी खाद्य पदार्थों में घी मक्खन आदि स्निग्ध द्रव्यों के अभाव से भी कोष्ठबद्धता हो जाती है, अतः घी मक्खन आदि का उपयोग करना आवश्यक हैं।

५. प्रातः सायं स्वच्छ वायु में टहलना कोष्ठबद्धता की अत्युत्तम प्राकृतिक चिकित्सा है।

कोष्ठबद्धता नाशक प्रयोग

आवश्यकतानुसार अजवायन लेकर उसके चावल निकाल लें और ३ दिन तक आक के दूध में तर रखें। तत्पश्चात् छाया में सुखाकर २ दिन तक थूहर के दूध में तर करें, और छाया में सुखाकर शीशी में रख लें। आवश्यकता पड़ने पर १० से २० दाने तक रात को समोष्ण जल के साथ दें। प्रातः खुलकर दस्त आएगा और कोष्ठबद्धता दूर होकर चित्त प्रसन्न हो जायगा।

अति सुगम प्रयोग

पीली हरड़ की छाल आवश्यकतानुसार लेकर रख लें और रात के समय ६ माशा से एक तोला तक गर्म दूध या गर्म पानी के साथ लें। ईश्वर कृपा से कोष्ठबद्धता का नाम भी न रह जाएगा। मेरा स्वयं का अनुभूत प्रयोग है।

दुग्ध का चमत्कार

अधिकतर लोगों को रात को सोते समय गरम-गरम दूध पी लेने से प्रातःकाल खुलकर टट्टी आ जाती है, और

कोष्ठबद्धता दूर हो जाती है। किन्तु कई रोगियों को और भी अधिक कोष्ठबद्धता हो जाया करती है। ऐसे रोगियों को चाहिए कि वे ऊँटनी अथवा भेड़ का दूध पियें, अथवा साधारण गाय भैंस के दूध में थोड़ा बादाम रोगन मिलाकर पियें। प्रातःकाल निश्चय ही खुलकर टट्टी आयेगी और कोष्ठबद्धता नितान्त दूर हो जायगी।

कब्ज दूर करने वाला चुटकुला

सभी वैद्य हकीम इस बात को भली-भांति जानते हैं कि शहद एक उत्तम प्रकार का मृदु विरेचन भी है, अतः कोष्ठबद्धता दूर करना इसका प्रथम काम है।

प्रयोग इस प्रकार है—

कोष्ठबद्धता के रोगी को रात के समय दो चम्मच शहद गर्म दूध में घोलकर पिला दें, प्रातःकाल खुलकर टट्टी आ जायेगी। जब चाहें परीक्षा कर देखें।

सर्वोत्तम वटी

देखने में तो ये गोलियां साधारण हैं, किन्तु गुण में सर्वोपरि हैं और कई बार की अनुभूत भी हैं।

पीपल के पत्ते छाया में सुखाकर बारीक पीस लें, और थोड़ा अर्क सौंफ अथवा गुलकन्द मिलाकर गुड़ द्वारा जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। रात को सोते समय एक या दो गोली दूध के साथ दें। प्रातःकाल खुलकर टट्टी हो जायेगी और कोष्ठबद्धता दूर हो जायेगी।

अतिसार

यदि पेट में मरोड़ होकर कष्ट के साथ थोड़ी-थोड़ी टट्टी

आती है, तो प्रवाहिका कहलाती है, और यदि बिना किसी कष्ट के बार-बार दस्त आते हैं, तो अतिसार कहलाता है। विस्तृत विवरण 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में देखलें। यहां केवल विशेषातिविशेष लाभकारी और अति सरल प्रयोग अंकित किए जाते हैं। आशा है कि आवश्यकता के समय पाठक गण अपूर्व लाभ उपलब्ध करेंगे।

अतिसार नाशक ठंडाई

यह अति सुगम प्रयोग अतिसार, विशेषकर रक्तातिसार रोकने के लिए अत्यन्त गुणप्रद है। जो सज्जन यथासमय अनुभव करेंगे, वे इसके गुण देखकर मुग्ध हो उठेंगे।

प्रयोग इस प्रकार है—

१ तोला कीकर के पत्ते स्वच्छ पानी के साथ घोटकर बिना मीठा मिलाये रोगी को पिलाया करें। एक दो दिन में ही निश्चय लाभ हो जाता है।

द्वितीय प्रयोग

एक नींबू लगभग डेढ़ पाव पानी में निचोड़ कर रोगी को पिलायें और इसी प्रकार दिन में ५-७ बार पिलायें, चाहे कितने ही उग्र अतिसार क्यों न हो रहे हों, ईश्वर कृपा से एक ही दिन में शांत हो जाते हैं।

आश्चर्यजनक प्रयोग

दही की लस्सी में ३ बार किसी स्वच्छ लोहे के टुकड़े को तपाकर बुझायें। फिर वही लस्सी रोगी को पिलायें। ईश्वरानुग्रह से दो तीन बार पिलाने से ही दस्त बन्द हो जाते हैं। मेरा अपना कई बार का अनुभूत प्रयोग है, शर्तिया लाभ हो जाता है।

अनुपम औषधि

१ तोला तालमखाना दही में मिलाकर रोगी को दिन भर में तीन बार पिलायें। ईश्वरकृपा से प्रथम दिवस ही अन्यथा दूसरे दिन हर प्रकार के अतिसार निश्चय ही रुक जाते हैं।

तदनुसार

१ तोला छोटी इलायची के बीज निकालकर बारीक पीस लें, और एक बार में ही ठंडे पानी के साथ खिलादें। ईश्वर ने चाहा तो एक ही मात्रा में दस्त बिल्कुल बन्द हो जायेंगे। अत्यन्त सरल और विशेष लाभप्रद प्रयोग है।

अतिसार की बाह्य चिकित्सा

यह चिकित्सा पद्धति हर प्रकार के अतिसार को निश्चय ही रोक देती है। कभी परीक्षा कर देखें।

१० तोला सूखे आँवले बारीक पीस लें। फिर घी तथा पानी से उन्हें भली प्रकार गूँथलें, यहाँ तक कि हलुवे के समान हो जायं। अब रोगी को चित लिटाकर उसकी नाभि के चारों ओर इस लुगदी का मण्डल सा बनाकर बीच में अदरक का रस भर दें, और रोगी को कम से कम दो घण्टे चित लेटा रहने के लिए आदेश कर दें। इस क्रिया से हर प्रकार के दस्त निश्चय ही रुक जाते हैं। हमारे एक परिचित वैद्य महोदय इसी क्रिया से अनेक रोगियों को ठीक कर चुके हैं और अपनी चिकित्सा का दर्प्य प्रयोग बताते हैं।

आँवलों का चमत्कार

शुष्क आंवला १ तोला, जंगी हरड़ ६ माशा दोनों को वारीक पीसकर १-१ माशा की मात्रा में दोनों समय पानी के साथ फँकायें। हर प्रकार के अतिसार के लिए अचूक औषधि है।

अतिसार की दर्प्य चिकित्सा

लायलपुर निवासी डा० सरदार अली खां सा० की यह दर्प्य चिकित्सा पद्धति है, जो कि हर चिकित्सा के अतिसारों पर अचूक सिद्ध होती है। इसी के कारण उन्होंने अपूर्व यश प्राप्त किया है।

विधि यह है—

रोगी के पेट पर कच्चे दूध की टकोर करें और दोनों समय दूध से वस्ती क्रिया करायें। ईश्वरकृपा से प्रथम दिवस ही दस्तों का आना रुक जाता है, और रोगी नितान्त स्वास्थ्य लाभ कर लेता है। उक्त डाक्टर साहब ने कई बार तो निराश रोगियों को भी इसी क्रिया से नितान्त रोगमुक्त कर दिया है। लाभ उठायें।

वृक्क तथा मूत्राशय के रोग

वृक्कों की आकृति—अर्धवृत्ताकार।

स्थिति—पिछली ओर कमर में ग्यारहवीं पसली के नीचे।

कार्य—यकृत से मुक्त भोजन लेकर उसे शुष्क करके अपना भाग प्राप्त कर लेना और स्वच्छ जल को मूत्राशय में एकत्रित करते रहना।

वृक्कों के रोग

वृक्कशूल, रेत या पथरी, अर्श (बवासीर) आदि प्रमुख हैं।

मूत्राशय के रोग

रेत या पथरी, मूत्रावरोध, तथा मूत्रकृच्छ्र आदि वर्णनीय हैं।

अब हम क्रमशः वृक्कों तथा मूत्राशय के उपर्युक्त प्रमुख रोगों का वर्णन लिखते हुए ऐसे-ऐसे उत्तम और सरल प्रयोग लिखेंगे, जिनके सामने बड़े-बड़े दर्प्य योग भी तुच्छ प्रमाणित हो जाते हैं। इन छोटे-छोटे प्राकृतिक प्रयोगों से ही आप पुराने से पुराने रोगों को जड़मूल से दूर करने में सफल होंगे।

वृक्कशूल

यह रोग अधिक बर्फ, ठण्डाई अथवा चावल आदि के सेवनाधिक्य के कारण वृक्कों में खिचावट उत्पन्न होकर कष्टप्रद पीड़ा के रूप में हो जाता है। इसमें वृक्कों से पीड़ा टीसें ऊठकर पीठ तक जाती हैं, बार-बार मूत्र त्याग की इच्छा होती है, किन्तु मूत्र बूंद-बूंद करके आता है। यदि पीड़ा पथरी के कारण होती है तो साथ में रक्त भी आता है और कभी-कभी रोगी को वमन भी हुआ करती है। प्रकट रूप में कोलंज तथा वृक्क शूल मिलते-जुलते रोग हैं किन्तु यथार्थ में दोनों पृथक् हैं। इनका भेद जानने के लिए एक अत्युत्तम विधि 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में बताई गई है, वहाँ देखने का कष्ट करें।

वृक्कशूलहर धूम्रपान

चाहे वृक्कशूल से रोगी कितना ही बेचैन क्यों न हो, यह प्रयोग तत्काल आराम पहुँचाता है।

प्रयोग इस प्रकार है—

आवश्यकता के समय १० बूंद पीपल के दूध में यथावश्यक पोदीने के पत्ते मिलाकर तम्बाकू की भाँति टिक्की बना लें और चिलम में रखकर रोगी को धूम्रपान करायें। ईश्वरकृपा से पीड़ा दूर होने में १० मिनट भी नहीं लगेंगे। अनुभूत प्रयोग है।

मूली का चमत्कार

कई बार अनुभव करने से यह प्रमाणित हो चुका है, कि वृक्कशूल के लिए मूली का रस भी एक ही वस्तु है। इसकी सेवन विधि इस प्रकार है—

मूली का ताजा रस १० तोले में उत्तम मिश्री उचित परिमाण में मिलाकर रोगी को प्रातःकाल पिलाया करें। एक दो दिन में ही पीड़ा जाती रहेगी। इसके अतिरिक्त पथरी के लिए भी लाभदायक है।

वृक्कशूलहर उत्तम वटी

१ तो० कलमी शोरा को खरल में डाल कर ऐसा खरल करें कि उसमें १२ तो० मूली का रस शोषण हो जाये, और गोलियाँ बंधने योग्य हो जाये। तब जंगली बेर के परिमाण की गोलियाँ बनालें तथा आवश्यकता के समय १-१ गोली नित्य

प्रातःकाल गरम पानी के साथ खिलायें। ईश्वरकृपा से निश्चय ही आराम हो जाएगा। यदि १-१ घंटे के अन्तर से मूली क्षार १-१ माशा की मात्रा में साथ ही खिलाया जाय तो अति शीघ्र लाभ हो जाता है।

वृक्कशूल के लिए अक्सीर

भुनी हुई फिटकड़ी ३ माशा, कलमी शोरा ७ मा० दोनों को अति सूक्ष्म पीसकर ७ पुड़ियाँ वनालें, और एक पुड़िया गाय के ताजा दूध के साथ सेवन करायें। इसी प्रकार नित्य प्रातः सायं सेवन कराने से २-३ दिन में वृक्कशूल मूल से नष्ट हो जाता है।

आक्सीरी क्वाथ

मेहंदी के पत्ते ६ माशा लेकर लगभग आधा सेर पानी में उबालें। जब ३ छटांक पानी शेष रह जाये, तो उतार कर गर्म-गर्म ही रोगी को पिलायें। कुछ दिनों के सेवन से ही हर प्रकार का वृक्कशूल निर्मूल हो जायेगा। मेरा स्वय का अनुभूत और सफल प्रयोग है।

वृक्कशूलहर संजीवनी

यह औषधि न केवल वृक्कशूल, अपितु पथरी व मूत्रावरोध के लिए भी संजीवनी ही है। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभ उठायें।

प्रयोग इस प्रकार है—

दूव घास की हरी-हरी पत्तियाँ १ छटाँक और कलमी शोरा १ तो०, दोनों को १ सेर पानी में किसी मिट्टी के बर्तन में पकायें। बर्तन का मुंह बन्द रखें। जब आधा पानी रह

जाये तो उतार कर भली प्रकार मलकर छानलें। इस छने हुए पानी को कलईदार देगची में डालकर पुनः पकाएँ, यहाँ तक कि सारा पानी जल कर नीचे क्षारमात्र शेष रह जाये। इसे वारीक पीस कर सुरक्षित रखलें और रोगी को दो रत्ती औषधि एक छटाँक अर्क सौंफ के साथ दें। तीन-चार दिन में वृक्क तथा मूत्राशय के सभी रोग जड़-मूल से नष्ट हो जायेंगे। किन्तु यदि रोगी को कोष्ठबद्धता हो तो प्रथम कोष्ठबद्धता-नाशक औषधि देकर उसे दूर करलें। आयुर्वेदिक चिकित्सा का यह एक दर्प्य योग है, जो कि रामबाण की भांति अचूक है।

रेत अथवा पथरी

वृक्कों अथवा मूत्राशय में पथरी या रेत पैदा हो जाना बड़ा ही कष्टप्रद और घातक रोग है। जब रोगी के मूत्राशय में पथरी चुभती है तो वहीं पीड़ा के मारे लोट-पोट हो जाता है। प्रारम्भ में यह मूंग या चने के बराबर होती है। किन्तु जब वृक्कों से निकलकर मूत्राशय में आ जाती है तो उस पर मूत्र की गाढ़ी तहें जम कर बड़ी पथरी बना देती है। वृक्कों और मूत्राशय की पथरी के पृथक्-पृथक् लक्षण 'देहाती अनुभूत योगसंग्रह' द्वितीय भाग में वर्णित हैं, पाठकगण चाहें तो उसमें देखलें। किन्तु यहाँ हम वह उत्तम विधि अंकित करते हैं जिससे कि आप इस बात को सहज ही जान सकते हैं कि पथरी वृक्कों में है, अथवा मूत्राशय में।

अत्युत्तम निदान विधि

संध्या समय कांच के वर्तन में रोगी से पेशाब करायें, और उसे ढककर रखदें। प्रातःकाल ध्यानपूर्वक देखें। यदि

पेशाब में रेत के कण लाल रंग के हों, तो पथरी वृक्कों में है, यदि श्वेत रंग के हों तो मूत्राशय में समझें।

पथरी तोड़ चूर्ण

उत्तम यवक्षार सूक्ष्म पीस लें और २ माशा प्रति दिन मिश्री के शर्बत के साथ सेवन कराएँ। ईश्वरकृपा से २-४ दिन में ही पथरी रेत बनकर मूत्र द्वारा निकल जायेगी और पूर्णतया आराम हो जायेगा।

पथरी की अनुपम औषधि

दो-दो माशा भुनी हुई फिटकड़ी प्रातः सायं पानी के साथ रोगी को दें। पथरी चूर-चूर होकर निकल जायेगी, और एक दो दिन में ही पूर्णतया आराम हो जायेगा। यदि कष्ट अधिक हो तो प्रतिदिन तीन-तीन बार सेवन कराएँ। सर्वोत्तम औषधि है।

अनमोल प्रयोग

यूनानी चिकित्सा का यह माननीय सिद्धांत है कि जो वस्तु मूत्र अधिक लाने वाली होगी, वह पथरी व रेत के लिए सर्वथा लाभकारी होती है। चूंकि तरबूज पेशाब को खुलकर लाने वाला है; अतः पथरी को निकालने के लिए भी अत्युत्तम वस्तु है। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभान्वित हों।

इसकी सेवन विधि इस प्रकार है—

तरबूज के बीजों की गिरी १ तोला आधा सेर जल में घोट कर मिश्री मिलाकर पिलाएँ। ईश्वर कृपा से पथरी टुकड़े-टुकड़े होकर मूत्र मार्ग से निकल जायेगी।

मूत्राशय की पथरी निकालने के लिए अनमोल विधि

रोगी को चित्त लिटाकर दोनों पांव ऊपर को उठायें। और पेड़ू की हड्डी पर गरम-गरम पानी डालें तथा नीचे से ऊपर को मलें। ईश्वर कृपा से पेशाब खुलकर आ जायेगा, और पथरी निकल जायेगी।

अर्श (बवासीर)

यह रोग आजकल भारतवर्ष में बहुत होता है और वड़ा ही कष्टप्रद रोग है। साथ ही कष्ट-साध्य भी है। हर साधारण चिकित्सक इसकी सफल चिकित्सा नहीं कर सकता। हम आपको प्राचीन अनुभवी वैद्यों के ऐसे-ऐसे गुप्त और अचूक प्रयोग भेंट कर रहे हैं, जिनसे कुछ ही दिनों में पुराने से पुराना अर्श जड़ मूल से मिट जाता है। हमारा दावा है कि यह पुस्तक आपको अर्श रोग, प्रत्युत सभी प्रमुख रोगों का सफल चिकित्सक बना देगी।

अर्श के भेद

यद्यपि चिकित्सा ग्रन्थों में तो अर्श अनेकानेक भेद वर्णित हैं, किन्तु आजकल प्रायः दो प्रकार का अर्श रोग ही अधिक पाया जाता है। पहला रक्तार्श अर्थात् खूनी बवासीर और दूसरा वातार्श अर्थात् वादी बवासीर। यहाँ हम इन्हीं दो प्रकार के अर्श का वर्णन करेंगे, ताकि आप रोग का भली प्रकार निदान करके तदनुसार चिकित्सा द्वारा सफलता पा सकें।

रक्तार्श के लक्षण

रक्तार्श में रोगी को अजीर्ण तथा कोष्ठबद्धता की हर समय शिकायत रहती है। टट्टी के समय बड़े कष्ट के साथ थोड़ी-थोड़ी टट्टी आती है, और रक्त वर्ण का पानी-सा कभी टट्टी के साथ मिलकर और कभी अकेला ही बूंद-बूंद करके मस्सों से निकलता रहता है। इस रक्त की मात्रा रोगी की प्रकृति के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है, अर्थात् किसी को कुछ बूंदें, किसी को कुछ तोले और कभी-कभी पाव भर से लेकर सेर भर तक रक्त निकल जाया करता है। जब यह रोग पुराना हो जाता है, तो बैठे हुए अथवा मूत्र त्याग करते समय स्वतः ही रक्त निकलने लगता है, मस्सों में तीव्र वेदना होती है, गुदा पर सूजन आ जाती है, और रोगी घोर कष्ट अनुभव करता है।

वातार्श के लक्षण

यद्यपि वातार्श में रक्त आदि तो कुछ नहीं निकलता किन्तु इसकी वेदना रक्तार्श से किसी प्रकार कम नहीं होती है। रोगी की गुदा पर खुजली सी होती रहती है, वात पेट में फिरती है, कठिन कोष्ठबद्धता हो जाती है। रोगी का सारा ही बदन टूटता रहता है। कमर और जाँघों में तीव्र पीड़ा रहती है, पाचन शक्ति को बिगड़ कर भूख अत्यल्प हो जाती है, और मुख तथा शरीर की रंगत फीकी पड़ जाती है।

अर्श की सर्वोत्तम चिकित्सा

हमने अपनी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में अर्श के लिए दावे के साथ कुछ ऐसे गुप्तातिगुप्त संन्यासी प्रयोग संग्रह करके लिखे हैं जो कि पुराने से पुराने अर्श रोग

को भी अल्प काल में ही जड़मूल से मिटा कर रख देते मैं हैं। उस बात को यहाँ दोहराता हूं कि वैसे प्रयोग कम से कम अर्श रोग के लिए आपको अन्यत्र नहीं मिल सकते। अर्श के लिए एक धूनी तो ऐसी आश्चर्यजनक प्रभावकारी है कि बस, प्रशंसा नहीं की जा सकती। परीक्षा करने से स्वत: ही जानी जा सकती है। तथापि इस पुस्तक में लिखित निम्न प्रयोग भी अपना जवाब नहीं रखते, क्योंकि सर्वत्र प्राप्य पेड़ पौधों और बूटियों से ही बनते हैं, और सैंकड़ों रुपये के योगों से बढ़कर लाभप्रद हैं।

अर्श के लिएअर्क रसायन

असंख्य रोगियों पर परीक्षा करने से यह अर्क बवासीर के लिए अक्सीर सिद्ध हो चुका है। बड़ा ही सरल प्रयोग है, यथा समय परीक्षा करके लाभ उठावें।

प्रयोग इस प्रकार है—

एक बड़ा सा उत्तम तरबूज लेकर ऊपर से एक टुकड़ा चाकू या छुरी आदि से काटलें और उस तरबूज में १० तो० मजीठ और १० तो० उत्तम मिश्री बारीक पीस कर भरदें, तथा काट कर अलग किया हुआ टुकड़ा पुन: यथास्थान लगा कर तरबूज को अनाज में दबादें। १५ दिन निरन्तर दबा रहने के उपरान्त निकालें और तरबूज में से जो अर्क निकले उसे मलमल के टुकड़े में छान कर अर्श-रोगी को सात दिन में सारा ही पिला दें। ईश्वरानुकम्पा से इसी कालान्तर में रोगी नितान्त रोग-मुक्त हो जायेगा। किन्तु गरम वस्तुओं यथा मिर्च, लहसुन, गुड़, शक्कर तथा वैंगन आदि से परहेज आवश्यक है। मूंग की दाल, फुलका दूध, घी आदि खाने को दें।

अर्श के लिए अगद वटी

निस्सन्देह ये गोलियाँ भी अर्श के लिए अगद हैं। जब चाहें परीक्षा करें, निश्चय लाभ प्रतीत होगा।

नीम के पके हुए फलों की गिरि ५ तो०, अति सूक्ष्म पीसलें और उसमें २ तो० पुराना गुड़ मिला कर दो-दो माशे की गोलियाँ बनालें। आवश्यकता के समय रोगी को प्रातः सायं ताजा पानी से एक-एक गोली खिलाया करें। कुछ दिनों के सेवन से ही हर प्रकार की बवासीर मिट जायेगी।

रक्तार्श रसायन

२॥ तोले प्याज को बारीक पीस कर आधा सेर पानी में मिलालें और फिर उसमें १ छटाँक मिश्री मिला दें। रोगी को एक या दो बार प्रतिदिन पिलायें। रक्तार्श के लिए अक्सीरवत् लाभकारी है।

वातार्श अगद

प्याज के बारीक टुकड़े धूप में सुखा कर घी में भून लें और प्रतिदिन १ तो० प्याज १ माशा सफेद तिली और २ तो० मिश्री मिलाकर गौ के दुग्ध के साथ सेवन करायें। वातार्श के लिए असीम लाभकारी है।

अति सरल प्रयोग

केवल रीठे का छिलका बारीक पीस कर तनिक-सा दूध मिला कर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनालें और प्रतिदिन १ गोली प्रातःकाल ताजा जल से निगल लिया करें। यदि गर्मी प्रतीत हो, तो दही के पानी के साथ निगलना उचित है। रक्तार्श के लिए बड़ा ही लाभकारी योग है। यदि

साथ में निम्नांकित लेप भी बाह्यरूप से मस्सों पर लगाते रहें तो मस्सें झड़ कर गिनती के दिनों में रोग निर्मूल हो जाता है।

मस्सेहारी लेप

रीठे का छिलका बारीक पीसकर पानी के साथ लेप सा बनालें और प्रातः सायं शौचादि से निवृत्त होकर प्रतिदिन मस्सों पर लगाया करें। अतिशीघ्र लाभ होगा।

प्राकृतिक रस

आम और जामुन के पत्तों को पृथक्-पृथक् कुचल कर सवा दो तोला रस निकालें और एक पाव दूध में दोनों को डाल कर चीनी से मीठा करके रोगी को पिलाया करें। एक सप्ताह के निरंतर सेवन से रोग निर्मूल हो जायेगा।

तदनुसार

आम की छाल और पत्ते तथा जामुन के पत्ते सम परि-माण में लेकर आधा सेर पानी में उबालें और इसी क्वाथ से गुदा को प्रतिदिन प्रातः सायं धोया करें। कुछ दिनों तक यही क्रिया जारी रखने से अर्श का नाम तक मिट जायेगा। अनेक वार का अनुभूत है।

हर प्रकार की बवासीर के लिए अक्सीर

वट-दुग्ध

प्रयोग क्या है? ईश्वरीय चमत्कार है। बरगद का दूध ववासोर के लिए अचूक रामबाण सिद्ध हुआ है। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभ उठायें।

प्रयोग विधि निम्न प्रकार है—

गांवों के लोग प्राय: ही गांव से वाहर शौचादि के लिए जाया करते हैं। जाते हुए साथ में ३ माशा देशी खांड ले जाया करें और पहले दिन उस खांड पर दस बूंद बरगद का दूध टपका कर खालें। फिर प्रति दिन १-१ बूंद बढ़ाते हुए २५ बूंद तक ले जायें। तदनन्तर उसी क्रम से १-१ बूंद घटाते हुए फिर १ बूंद तक ले आयें। ईश्वर कृपा से इसी कालान्तर में रोग नितान्त जाता रहेगा।

मस्से दूर करने के लिए अद्भुत प्रयोग

बरगद की लकड़ी को जलाकर कोयला करलें और उसे खूब वारीक पीस कर १०० बार धुले हुए मक्खन में भली-भांति घोटकर मलहम सा बनालें। इस मलहम को प्रातः शौचादि से निवृत्त होने के उपरान्त मस्सों पर लगाया करें। ईश्वर कृपा से कुछ दिन के प्रयोग से ही अर्श के मस्से झड़ जायेंगे। वड़ा ही चमत्कारी मलहम है।

अर्शारिगुटी

आवश्यकतानुसार हल्दी लेकर वारीक पीसलें और उसे आक के दूध से तर करके सुखालें। दूसरे दिन पुन: आक के दूध से तर करें और सुखायें। इसी प्रकार सात बार तर करें और फिर लम्बी-लम्बी गोलियां बनालें। आवश्यकता के समय प्रतिदिन प्रात: सायं शौचादि से निबट कर उपरोक्त गोली को अपने थूक अथवा ताजा पानी से घिसकर मस्सों पर लेप किया करें। कुछ ही दिनों में मस्से सूख कर झड़ जायेंगे और पूर्ण लाभ हो जायेगा। अति सरल प्रयोग है, बनाकर लाभ उठायें।

मूत्राशय की रेत व पथरी

जो प्रयोग गत पृष्ठों पर वृक्कों की पथरी के लिए लिखे जा चुके हैं, वही मूत्राशय की पथरी व रेत के लिए भी परम लाभकारी हैं। यथासमय लाभ उठायें।

मूत्रावरोध

कभी-कभी मूत्रेच्छा को अधिक देर तक रोके रखने अथवा मूत्राशय के ढीला हो जाने से मूत्रावरोध रोग हो जाता है। किन्तु उन वृद्धों का, जिन्हें कभी मूत्रकृच्छ्र रोग हो चुका हो, अचानक मूत्रावरोध हो जाना चिकित्सासाध्य नहीं होता है। शेष कारणों से हुए मूत्रावरोध के लिए निम्न प्रयोग जादू के समान प्रभावक हैं, स्वयं परीक्षा कर देखें।

मूत्रावरोध निवारक शर्बत

जब किसी रोगी का पेशाब बन्द हो जाय, तो तत्काल पानी में प्याज घोट कर और छटाँक भर मिश्री मिलाकर शर्बत बनालें और और रोगी को पिला दें। तत्काल मूत्र खुल कर आ जायेगा। यदि इसमें थोड़ा सा कलमी शोरा अथवा यवक्षार भी मिला लिया जाय तो और भी अधिक गुणकारी सिद्ध होगा।

अत्युत्तम प्रयोग

खरबूजे का छिलका पेशाब जारी करने के लिए सर्वोत्तम वस्तु है। इसके विषय में एक सत्य घटना इस प्रकार है कि प्राचीन काल में सुविख्यात हकीम मसीह उल्ला खाँ साहब ने सेठ दौलतराम नाम के एक धनिक व्यक्ति से दो बार बन्द

पेशाब खोलने के लिए २०००) रुपये लिये थे, और औषधि के रूप में केवल खरबूजे का छिलका सेवन कराया था। अब आप अनुमान लगा लीजिए कि प्रयोग कितना अमूल्य है? यथासमय परीक्षा कर देखें।

प्रयोग इस प्रकार है—

ग्रीष्म ऋतु में जब किसी रोगी का पेशाब बन्द हो जाय, तो खरबूजे के छिलके ठंडे पानी में घोट कर मिश्री मिला कर रोगी को पिलादें। तत्काल पेशाब खुल कर आयेगा। किन्तु शीतकाल में ये तनिक गर्म करके पिलाने चाहिएँ। यदि शीतकाल में ठण्डे ही पिला दिए गए तो लाभ के वजाय हानि ही होती है।

तत्काल प्रभावक योग

कागज़ी नींबू काट कर उसके बीज निकाल दें, और उनमें कलमी शोरा भर कर कोयलों की आँच पर रख दें। जब उबाल आने लगें, तो नीचे उतार कर, समोष्ण हालत में ही नाभि के चारों ओर मल दें। बन्द पेशाब तत्काल जारी हो जाता है। अनुभूत प्रयोग है।

मूत्रकृच्छ्र (सुज़ाक)

यह बड़ा ही दुखदायी रोग है, आज भारतवर्ष का प्रत्येक व्यक्ति इस रोग के नाम से अवश्य परिचित है। इसका रोगी मूत्र त्याग करते समय प्राणान्तक वेदना सहन करता है, प्रत्युत कभी-कभी तो रोगी आत्म-घात करने को तत्पर हो जाता है। यह रोग यौवन की सारी उमंगों को मिटा देता है, पुरुषत्व शक्ति नष्ट हो जाती है, और प्रमेह,

शीघ्रपतन तथा नपुंसकता आदि रोग जड़ें जमा लेते हैं, रोगी जीवित ही मुर्दे के समान हो जाता है।

मूत्रकृच्छ्र के कारण

अधिकतर यह रोग वेश्या-प्रसंग से होता है। कभी-कभी गर्भाशय स्राव की रोगिणी ऋतुमती स्त्री से भी हो जाया करता है। कुछ लोगों को मद्य तथा मांस के सेवनाधिक्य के कारण भी मूत्रकृच्छ्र रोग हो जाता है। चूंकि यह रोग संक्रामक होता है, अतः इसका रोगी जब अपनी पतिव्रता पत्नी के साथ विलास करता है, तो उसे भी ले डूबता है और स्त्री भी इस रोग में फँसकर नरक तुल्य जीवन भोगने लगती है। इतना ही नहीं, यदि माता-पिता रोगग्रस्त हो जाते हैं, तो उनकी संतान भी इस रोग से नहीं बच पाती। यही कारण है कि कई लोगों को यह पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त होता है। आधुनिक विशेषज्ञों के मतानुसार इस रोग का कारण एक कीटाणु होता है जो कि अणुवीक्षण यंत्र द्वारा देखा जा सकता है। डाक्टरी भाषा में इस कीटाणु को गोनोकाक्स कहते हैं। यह कीटाणु रोगी के पीप में पाया जाता है। कभी-कभी कीटाणु रक्त में समाविष्ट होकर समस्त रक्त को दूषित करके फोड़े-फुन्सी, गठिया आदि रोग उत्पन्न कर देते हैं।

मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

सम्भोग के पश्चात् तत्काल अथवा दूसरे-तीसरे प्रत्युत कभी-कभी पाँचवें-सातवें दिन मूत्र-नली का छेद कुछ-कुछ लाल शोथयुक्त होता है, जिसमें जलन तथा खुजली-सी प्रतीत होती है। फिर नीलपन लिए हुए पीप निकलने

लगती है। कुछ दिन तक ऐसी स्थिति रहने के उपरांत पीड़ा और जलन वढ़ जाती है, तथा पीप गाढ़ी हो जाती है। जननेन्द्रिय वहुत ही सूज जाती है। कभी-कभी सूजन इतनी बढ़ जाती है कि मूत्र वंद हो जाता है अथवा रुधिर आने लगता है। दो तीन सप्ताह यही स्थिति रह कर फिर कुछ घटी हुई सी प्रतीत होती है। विधिवत् चिकित्सा न होने पर यह कुष्ठ बन जाता है, और तब इसका निवारण करना दुस्साध्य हो जाता है।

मूत्रकृच्छ्र की सर्वोत्तम चिकित्सा

इस रोग के लिए संन्यासियों के चुटकुले जैसे प्रभावक सिद्ध हुए हैं, वैसे आयुर्वेदिक अथवा यूनानी चिकित्सा के उत्तमोत्तम और मूल्यवान् योग भी नहीं। प्रमाण आपके सामने हैं। हमारी पूर्व प्रकाशित पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में खोज-खोज कर संग्रह किए गए संन्यासियों के गुप्तातिगुप्त प्रयोगों की आज हर वैद्य, हकीम यहाँ तक कि डाक्टर भी प्रशंसा कर रहे हैं। आप में से भी बहुतों ने उस पुस्तक के प्रयोगों की परीक्षा करके लाभ उठाया होगा। किंतु इस पुस्तक में जो प्रयोग अंकित किए जाते हैं वे भी लाजवाब हैं क्योंकि इनमें न तो बड़ी-बड़ी औषधियों की आवश्यकता पड़ती है और न अधिक परिश्रम की ही। वरन् प्राकृतिक पेड़-पौधों से ही बनने वाले नितान्त सरल प्रयोग हैं। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभ उठावें।

एक पैसे की औषधि (जो कि पुराने से पुराने मूत्रकृच्छ्र को जड़ से उड़ा देती है)

मूत्रकृच्छ्र के लिए आपने बड़े-बड़े उत्तम योग देखें और

अनुभव किये होंगे, किन्तु ऐसा सरल प्रयोग शायद ही कभी हाथ आया हो। निस्सन्देह अनुपम प्रयोग है और लाभ में अक्सीर सिद्ध हुआ है।

प्रयोग इस प्रकार है—

१ माशा हरा तूतिया खरल में डाल कर नीम के पत्तों के रस में घोटें। जब सारा पानी सूख जाए तो दवा को एक कौड़ी में भर दें और नीम के पत्तों की लुगदी से कौड़ी का मुंह बन्द करदें और दहकते हुए कोयलों पर रख दें। जब विदित हो कि कौड़ी भली-भाँति जल चुकी है, तो निकाल कर कौड़ो समेत बारीक पीसलें। बस दवा तैयार है। आवश्यकता के समय प्रातःकाल २ रत्ती दवा गाय के दूध की लस्सी के साथ सेवन कराएँ, ईश्वरकृपा से कुछ ही दिनों के सेवन से पुराने से पुराना मूत्रकृच्छ्र भी नितान्त दूर हो जायेगा।

तदनुसार

यह प्रयोग हमारे एक मित्र वैद्य ने वर्षों किसी साधु की सेवा करके बड़े प्ररिश्रम से प्राप्त किया था। चूंकि मूत्रकृच्छ्र के लिए यह अक्सीर सिद्ध हुआ है, अतः मैं अपने प्रिय पाठकों को भी वह प्रयोग बताए देता हूं। यथासमय दु.खी भाइयों का कल्याण करें।

नीम की हरी छाल ४ तोला, मिट्टी की कोरी हांडी में २-२॥ सेर पानी डालकर पकाएं। जब छाल बिल्कुल गल जाए और पानी भी सूख जाए, तो १० तोला पिसे हुए कलमी शोरे की चुटकी देते जायें, और नीम की लकड़ी से चलाते जायें। जब सब कुछ जल कर राख हो जाये, तो उतार कर

कपड़े से छान लें और २ रत्ती मात्रा प्रतिदिन प्रातः दूध की लस्सी के साथ सेवन कराएँ। सात दिन के अन्दर ही पुराने से पुराना रोग भी जड़ से मिट जाता है और पीड़ा व जलन तो १-२ दिन में ही दूर हो जाती है। जब आवश्यकता पड़े, परीक्षा करके लाभ उठायें।

अनुभूत चिकित्सा

१ रत्ती पोस्तरीठा १ तो० खांड में मिलाकर शर्बत बजूरी अथवा दूध की लस्सी के साथ सेवन कराएँ। किन्तु प्रातःकाल व दोपहर उपर्युक्त मात्रा ३ माशे और ३ मा० बड़ी इलायची के दाने मिला कर दूध की लस्सी के साथ दिया करें। यह प्रयोग बड़ा ही लाभकारी है। एक अनुभवी वैद्य का कथन है कि इस प्रयोग से हर प्रकार का मूत्र-कृच्छ्र, चाहे वह कितना ही पुराना क्यों न हो, जड़मूल से मिट जाता है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

मूत्रकृच्छ्र का अति सरल प्रयोग

यदि आवश्यकता के समय कोई वस्तु प्राप्त न हो, तो तनिक गाँव-गाँव में पाये जाने वाले इस वृक्ष का चमत्कार देखें। एक भी पैसा व्यय न होगा और ईश्वरकृपा से अति शीघ्र लाभ हो जायेगा। परीक्षा करने पर ही आप इसके गुणों से भली-भांति परिचित हो सकेंगे।

प्रयोग इस प्रकार है —

बरगद के पत्ते नरम-नरम २ तोला लेकर भली प्रकार कुचलें और रात को आधा सेर पानी में मिलाकर रखदें। प्रातःकाल छानकर उसमें उचित परिमाण में मिश्री मिलाकर

रोगी को पिलाएँ। इसी प्रकार प्रातः भिगो कर शाम को पिलाया करें। ईश्वरानुग्रह से नया मूत्रकृच्छ्र अल्पकाल में ही मिट जाएगा। विशेषकर पेशाव की जलन तो तत्काल ही मिट जाती है।

तदनुसार

कीकर (बबूल) के फूल २ तोला, मिट्टी के कोरे कूजे में डालकर पाव भर पानी में भिगो दें और प्रातःकाल मसल कर छान लें तथा २ तोला मिश्री मिलाकर रोगी को पिलाया करें। प्रयोग क्या है? चमत्कार है। उस प्रभु की बलिहार जाइए, जिसने इन सर्वत्र प्राप्य पेड़-पौधों में कैसे-कैसे सराहनीय गुण भर दिये हैं। ईश्वरकृपा से इस प्रयोग के निरन्तर सेवन से सप्ताह भर में ही रोग निर्मूल हो जायेगा। जो जो सज्जन परीक्षा करेंगे, मुग्ध हो जायेंगे।

ऐसा ही एक और प्रयोग

प्रकृति की गोद ऐसे अनमोल रत्नों से भरी पड़ी है। उपरोक्त दोनों प्रयोगों के समान ही एक और वृक्ष का चमत्कारी गुण देखें और लाभान्वित होकर दुआ दें। पीपल की अन्दरूनी कोमल छाल ३ तोला लेकर मिट्टी के कोरे कूजे में रात के समय पानी में भिगो दें और प्रात.काल इसका निथरा हुआ पानी छान कर रोगी को पिलायें। पहले दिन ही कष्ट में न्यूनता हो जायेगी और कुछ दिन के निरन्तर सेवन से पूरा-पूरा लाभ हो जाएगा। अद्भुत प्रयोग है।

अद्भुत आश्चर्य

विद्वान् वैद्यों का कथन है कि यदि मूत्र-कृच्छ्र के रोगी को बिना बताये घोड़ी का दूध समभाग पानी मिलाकर और

सन्दल के शर्बत से मीठा करके निरन्तर २१ दिन पर्यन्त प्रातः सायं पिलाया जाए तो पुराने से पुराना सुजाक भी शर्तिया मिट जाता है। किन्तु गर्म वस्तुओं से परहेज आवश्यक है। यथासमय परीक्षा करके लाभ उठायें।

तदनुसार

बकरी के ताजा दूध में द्विगुण परिमाण में शीतल जल मिलाकर तथा मिश्री या खांड से मीठा करके रोगी को पिलाएँ। मूत्रदाह तो एक दिन में ही दूर हो जाता है, यहाँ तक कि कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से मूत्र-कृच्छ्र भी निर्मूल हो जाता है।

विशेष सूचना

'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में एक ऐसा ही आश्चर्य-जनक प्रयोग अंकित है, जो कि देखने में नितान्त साधारण प्रतीत होता है, किन्तु अपने अनुपम गुणों के कारण आज तक के समस्त आविष्कृत योगों में शिरोमणि प्रमाणित हो चुका है। वह एक बहुत बड़े महात्मा के हृदय का विशेष गुप्त प्रयोग है जो बड़ी कठिनता से प्राप्त हो सका था। जो सज्जन चाहें, देखकर लाभ उठायें।

अद्भुत रहस्य

एक बार हमारे एक मित्र वैद्य महोदय ने बड़ा ही अद्भुत रहस्य प्रकट किया। उन्होंने बताया कि एक बार युवावस्था में वे सुजाक से ग्रसित हो गये, पेशाब करने बैठते तो मानो प्राण ही निकल जाते। बहुतेरा इलाज कराया, किन्तु कोई लाभ न हुआ। संयोगवश मुझे किसी रोगी को देखने के लिए दूर गाँव में जाना पड़ा। रास्ते में मुझे तीव्र प्यास लगी। किन्तु मार्ग ऐसा था कि एक तालाब के सिवा और कोई

साधन न मिला। तालाब के पास पहुँचा तो देखा कि पानी बड़ा गन्दा-सा है, किन्तु प्यास भी जोर की लग रही थी, अतः मैंने फिटकड़ी की डली पानी में घोलकर पहले उसे साफ कर लिया और फिर पी लिया। कुछ देर पश्चात् मुझे पेशाब लगी। मैं बड़ा घबराया, और डरते-डरते किसी भांति पेशाब करने को वैठ गया। किन्तु उस समय मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब मैंने देखा कि मुझे पेशाब विना किसी कष्ट के आसानी से उतर गया। बहुत सोचने के उपरांत मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि यह सब फिटकड़ी का ही चमत्कार है। फिर तो मैंने वहां कई बार फिटकड़ी घोल-घोल कर पानी पिया, और ईश्वरकृपा से तीन दिन में पीप आना, पीड़ा व जलन होना आदि सभी कष्ट निवारण होकर रोग नितान्त निर्मूल हो गया। फिर भी मुझे विश्वास न हुआ और मैंने इसकी परीक्षा मूत्र-कृच्छ् के अनेक रोगियों पर की। प्रभु की ऐसी महिमा कि जिस रोगी पर भी अनुभव किया, वही रोगी रोगमुक्त हो गया।

इस कथा से अनुमान लगा सकते हैं कि मूत्र-कृच्छ् के निवारणार्थ अकेली फिटकड़ी ही कितनी उत्तम और लाभप्रद औषधि है। जो सज्जन आवश्यकता के समय इसका अनुभव करेंगे वे अद्भुत लाभ उपलब्ध करेंगे। और उस समय प्रसन्न होकर आपका हृदय स्वयं ही कह उठेगा कि इस पुस्तक का जितना मूल्य आपने चुकाया है उससे कई गुना वसूल हो गया।

हर प्रकार के मूत्रकृच्छ् के लिए अक्सीरवत् सुगन्धित शर्बत

ऐसे प्रयोग कम ही प्राप्त होते हैं। जो अक्सीरी औषधि भी हों और स्वादिष्ट खाद्य अथवा पेय भी। निम्न प्रयोग

में दोनों ही गुण हैं, परीक्षा कर देखें।

गुलाब के २ तोला पत्ते रात को एक पाव पानी में भिगोदें और रात भर बाहर खुले में पड़े रहने दें। प्रातः काल मलकर छानलें और थोड़ी-सी मिश्री मिलाकर रोगी को पिलाया करें। ईश्वरकृपा से एक सप्ताह मात्र के सेवन से वर्षों पुराना रोग भी समूल नष्ट हो जाता है। अभी कुछ ही दिनों पूर्व मुझे यह रोग लग गया था। मैंने रोग की प्रारम्भिक अवस्था में ही इसका सेवन किया और ईश्वरकृपा से केवल दो दिन में ही रोगमुक्त हो गया। मैं अपने प्रिय पाठकों से अनुरोध करूंगा कि यदि कभी उन्हें यह रोग लग जाये तो फौरन ही इसे सेवन करें। अतिशीघ्र लाभ हो जायेगा। अन्यथा अन्य प्रयोग जो कि ऊपर लिखे जा चुके हैं, सेवन करें।

सन्धियों के रोग

हमारे शरीर में छोटे-बड़े लगभग १८० जोड़ हैं, जिनका पूरा वर्णन विस्तारभय के कारण यहां नहीं किया जा सकता। हां, जोड़ों के कुछ प्रमुख रोगों तथा गठिया, लंगड़ी की पीड़ा आदि का संक्षिप्त वर्णन किया जा रहा है। चूंकि ये रोग प्रायः ही लोगों को हो जाते हैं; अतः उनके निवारणार्थ हम आपको कुछेक सरलातिसरल अक्सीरी प्रयोग भेंट कर रहे हैं, जिनसे आवश्यकता के समय आप अपना तथा दूसरों का हित-सम्पादन कर सकेंगे।

आमवात (गठिया)

यह बड़ा ही कष्टदायक रोग है, और जब पुराना हो जाता है, तो बड़ी कठिनता से जाता है। बड़े जोड़ों की

पीड़ा आमवात कहलाती है, और अंगुली, टखने आदि छोटे जोड़ों की पीड़ा सन्धिवात कहलाती है। प्रायः यह रोग चार दोषों से उत्पन्न होता है; अतः ऐसे प्रयोग बहुत कम ही मिलते हैं जो कि सब प्रकृतियों के अनुकूल सिद्ध हों। और जो हैं भी वे बड़े ही मूल्यवान् तथा दुष्प्राप्य पदार्थों से बनते हैं। किन्तु हमें तो अपने प्रिय भाइयों की भलाई और उनके कष्टों का पर्याप्त ध्यान है, अतः चिकित्सा सम्बन्धी उत्तमोत्तम पुस्तकों के अध्ययन अथवा बड़े-बड़े विद्वान् वैद्य हकीमों की सहायता से जो प्रयोग संग्रह कर सका वे आपकी सेवा में अर्पित किए जाते हैं। आशा है कि आवश्यकता के समय यथेष्ट लाभप्रद सिद्ध होंगे।

हर दोष से उत्पन्न आमवात के लिए अचूक संन्यासियाना गुप्त प्रयोग

यह प्रयोग भी कितना आश्चर्यजनक है। इसके प्रभाव को देखकर संन्यासियों की अनुपम खोज की सराहना करनी ही पड़ती है। इसकी पहली मात्रा ही पर्याप्त लाभ दिखाती है और कुछेक मात्राओं से रोग का मूलोच्छेदन ही हो जाता है। विशेषता यह है कि नितांत सामान्य बूटियों से बन कर भी इतना प्रभावोत्पादक है। यथासमय अनुभव करके लाभान्वित हों।

प्रयोग इस प्रकार है—

भटकटाई १ सेर, हरमल के पत्ते १ सेर, सोहांजने के पत्ते आधा सेर, सोहांजने को जड़ पाव भर। सबको मिट्टी के एक बड़े घड़े में डाल कर १२ सेर पानी भरदें, और आधा पाव देशी अजवायन की ढीली-सी पोटली बांध कर घड़े में छोड़ दें। तदनन्तर घड़े के मुंह को आटे से भली-भांति बन्द

करके आग पर चढ़ायें, और उस समय तक आग जलाते रहें, जब तक कि अनुमानतः दो सेर पानी रह जाए। फिर अजवायन की पोटली निकालकर किसी बर्तन में फैलाकर छाया में सुखालें। अथवा अच्छा हो यदि भली-भांति बारीक पीस कर जंगली बेर के परिमाण की गोलियाँ बनालें तथा रोगी को दो-दो गोलियाँ प्रातः सायं गर्म दूध से सेवन कराएं। सब प्रकार की पीड़ाओं के लिए अक्सीरवत् है।

आमवात का सर्वोत्तम तेल

उपरोक्त औषधि बनाते समय जो दो सेर पानी घड़े में रह गया था उसमें आधा सेर मीठा तेल मिला कर एक कलईदार देगची में पकायें। जब पानी जल कर तेल-मात्र शेष रहे, तो उतार कर शीशी में भरलें। उपरोक्त गोलियों के सेवन के साथ ही यदि इस तेल की मालिश जोड़ों पर करें, तो कठिन-से-कठिन गठिया की पीड़ा भी मिट जाती है।

एक और मर्दनीय तेल

यह तेल उपरोक्त तेल से भी बढ़कर गुणकारी है। यदि बिना किसी औषधि को सेवन किए भी केवल इस तेल की मालिश की जाए तो महीनों का पीड़ित रोगी भी अति शीघ्र स्वस्थ हो जाता है। परीक्षा कर देखें।

प्रयोग

यथावश्यक आक के पत्ते मिट्टी के बर्तन में बन्द करके भट्टी में पकायें। जब पत्ते साग की भांति कोमल हो जाएं, तो उन्हें निचोड़ कर पानी निकालें। अब इस पानी में आधा भाग मीठा तेल मिला कर कलईदार देगची में पुनः पकायें।

जब सारा पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे, तो उतार कर शीशी में भरलें। रात के समय निर्वात स्थान पर रोगी के जोड़ों पर भली-भाँति इस तेल की मालिश करें। कम-से-कम आधा घंटे मालिश अवश्य होनी चाहिए। मालिश के लगभग ३ घंटे उपरान्त तक रोगी को पानी पीने के लिए न दें। महीनों के जुड़ेही रोगी भी एक-दो दिन में ही खुल जाते हैं। हर प्रकार की गठियाशूल के लिए परम लाभकारी तेल है। स्वयं अनुभव करें।

गठियानाशक रसायन वटी

फिटकड़ी भुनी हुई, धतूरे के कोमल पत्ते, लाल अरण्ड के पत्ते, आक की कोंपलें। सब वस्तुओं को अति सूक्ष्म पीस कर चने के बराबर गोलियां बनालें और आवश्यकता के समय रोगी को एक गोली गरम पानी, चाय अथवा गर्म दूध के साथ खिलाएं। गिनती के दिनों में पुराने-से-पुराना गठिया रोग यहाँ तक कि रींघनवाय भी जड़मूल से नष्ट हो जाता है।

सरलातिसरल प्रयोगावली

नीचे हम ऐसे प्रयोग लिखते हैं जो कि अत्यन्त ही सरल हैं और ईश्वर की कृपा से गठिया रोग पर चमत्कारी लाभ दिखाते हैं। ये प्रयोग हमें बड़े ही परिश्रम से प्राप्त हो सके हैं, किन्तु इन्हें भी हम छुपा कर नहीं रख सकते। जन कल्याणार्थ अंकित किए देते हैं। लाभ उठाकर शुभाशीष से स्मरण करें।

प्रयोग

देशी तम्बाकू के हरे पत्तों की कोमल कोंपलें, लाल अरण्ड के पत्ते, धतूरे के कोमल पत्ते तथा आक की कोंपलें।

सबको बराबर-बराबर लेकर बारीक पीस लें और चने के बराबर की गोलियाँ बना लें। एक-एक गोली प्रतिदिन प्रातः सांय रोगी को गरम दूध के साथ खिलाएँ। गिनती के दिनों में ही रोग निर्मूल हो जायगा।

द्वितीय

यह प्रयोग उपरोक्त प्रयोग से भी सरल है और कमाल यह है कि केवल एक बूटी ही गठिया जैसे भयंकर दुस्साध्य रोग को जड़ से मिटा देती है।

आकसन बूटी की जड़ छाया में सुखाकर बारीक पीस लें और समभाग खांड मिला कर रखलें। ६ माशा से एक तोला तक की मात्रा में रोगी को गरम दूध से दोनों समय खिलाया करें। खाट पर पड़ा हुआ रोगी भी २, ४ दिनों में ही रोगमुक्त हो जायगा।

रींघनवाय (लंगड़ी की पीड़ा)

यह बड़ी ही भयंकर प्रकार की पीड़ा है जो कि कूल्हे से लेकर टखने तक जाती है। यद्यपि यह भी गठिया के प्रकार को होती है और पीड़ोत्पत्ति के कारण भी वही होते हैं जो कि गठिया के। तथापि कभी-कभी वात अथवा कफ़ का अंश उस रग के अन्दर ही ठहर कर रींघनवाय का कारण बन जाता है।

रींघनवाय की चिकित्सा

इसकी चिकित्सा भी उसी प्रकार की जाती है जिस प्रकार गठिया की। अतः गत पृष्ठों पर जितनी औषधियां अथवा मर्दनीय तेल गठिया के लिए लिखे गये हैं वे सब

रींघनवाय के लिए भी लाभप्रद हैं। हाँ 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में भी हमने इन दोनों रोगों के लिए एक अति विशेष और चमत्कारी प्रयोग लिख दिया है, जिससे बढ़ कर दूसरा प्रयोग आपको शायद ही मिल सके। उक्त पुस्तक में देखकर उस प्रयोग से अवश्य लाभ उठायें। एक अत्युत्तम प्रयोग यहां भी भेंट किया जाता है, जोकि अचूक है।

रींघनवाय नाशक बूटी

हुलहुल बूटी, जिसे पंजाब प्रान्त में बकरा बूटी भी कहते हैं, रींघनवाय के लिए अचूक रामबाण है। जिस टांग में पीड़ा हो, उस टांग की पिण्डली पर ठीक उस रग के ऊपर, जिसमें पीड़ा होती हो, उक्त बूटी को घोट कर और टिकिया बनाकर बांध दें। टिकिया अधिकाधिक रुपये के बराबद चाहिए। ८-९ घंटे पश्चात् पट्टी खोल दें, स्थान लाल हो गया होगा। कुछ देर पश्चात् वहाँ छाला पड़ जाएगा। छाले को फोड़कर पानी निकाल दें और धुला हुआ मक्खन लगा दें। घाव भी ठीक हो जाएगा और रींघनवाय की पीड़ा तो छाले का पानी निकलते ही दूर हो जाएगी। बड़ा ही चमत्कारी प्रयोग है।

द्वितीय प्रयोग

गठिया के लिए रसायन वटी नाम से जो प्रयोग पीछे लिखा जा चुका है, वह भी रींघनवाय के लिए विशेष लाभकारी है। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभ उठाएँ। निश्चय ही सफलता मिलेगी।

त्वचा रोग

चिकित्सा ग्रंथों में त्वचा सम्बन्धी रोग तो इतने लिखे गये हैं कि जिनका स्मरण रखना बड़ा ही कठिन है। त्वचा के रोग दो प्रकार के होते हैं—एक तो वे जो कि त्वचा के वाह्य भाग पर होते हैं, जिनमें से दाद, चंबल, खाज, फोड़े-फुन्सी उपदंश, तथा कुष्ठ आदि रोग बहु प्रचलित व विशेष-रूप से उल्लेखनीय हैं, दूसरे वे जो त्वचा के अभ्यन्तरीय भाग से सम्बन्ध रखते हैं,यथा ज्वर आदि। यहाँ हम क्रमशः पहले बाह्य भाग के रोगों और फिर ज्वरों का वर्णन करेंगे। किन्तु सर्वप्रथम हम आपको यह बता देना चाहते हैं कि त्वचा के बाह्य रोगों का एकमात्र कारण रक्त विकार होता है, अतः उनके निवारणार्थ औषधि सेवन से पूर्व कोई रेचन (जुलाब) लेकर रक्त शोधक औषधि सेवन करके रक्त विष दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। इससे कुछ रोग तो रक्त शुद्ध होने पर स्वतः ही मिट जाते हैं। यदि फिर भी रोग दूर न हो, तो अन्यान्य औषधियां सेवन करनी चाहिएँ। कुछेक रक्त शोधक आदि औषधियों के सरलातिसरल प्रयोग आपको भेंट किये जाते हैं जिनसे अतिशीघ्र रक्त शुद्ध होकर काया निर्मल हो जाती है। स्वयं परीक्षा करके लाभ उठायें।

सर्वोत्तम रक्त-शोधक वटी

ये गोलियाँ रक्त विकारों को दूर करने में अपना जवाब नहीं रखतीं। यहाँ तक कि इसके निरन्तर सेवन से उप-दंश जैसा रोग भी निर्मूल हो जाता है। यद्यपि इस रहस्य का उद्घाटन देने से सम्भवतः वैद्य जी मुझ से रुष्ट हो जायं किन्तु पाठकों के इस प्रयोग की सत्यता और लाभकारिता

का विश्वास दिलाने के लिए हमें ऐसा करना ही पड़ा।

प्रयोग इस प्रकार है—

रीठे के छिलकों को अति सूक्ष्म पीसकर कपड़-छान करलें और यथावश्यक शहद मिलाकर चने के बराबर गोलियां बनालें। आवश्यकता के समय १ गोली प्रातः अध-बिलोए दही के साथ रोगी को दिया करें और सायंकाल केवल पानी के साथ १ गोली निगलवा दिया करें। गिनती के दिनों में रक्त नितान्त शुद्ध हो जायेगा। यहां तक कि दद्रु, कण्डु चम्बल, तथा उपदंश को भी लाभ होगा।

अत्युत्तम रक्तशोधक जड़ी

जलनीम की जड़ी जो कि प्रायः नहरों के किनारे पाई जाती है, ६ माशा लेकर सात नग काली मिर्चों के साथ घोट छान कर रोगी को पिलाया करें। अत्युत्तम रक्तशोधक है। अनुभव करके लाभ उठायें।

तृतीय प्रयोग

नीम के पत्ते और छाल यदि मिल सकें तो (फल तथा फूल भी) सबको कूटकर रात भर पानी में भिगो रखें। प्रातःकाल भवके द्वारा अर्क खींच लें। और ५ तोला अर्क शहद मिलाकर प्रतिदिन पिलाया करें। समस्त रक्त विकार जड़ मूल से दूर हो जायेंगे। किन्तु सेवन काल में घी व बेसनी रोटी के अलावा अन्य चीजों से परहेज करें।

विशेष संन्यासियाना प्रयोग

ह्रिरणखुरी अथवा ब्रह्मदण्डी दोनों बूटियां रक्त शुद्ध

करने के लिए सब संन्यासियों की मानी हुई हैं, क्योंकि इनसे कुष्ट तक को लाभ हो जाता है।

सेवन विधि इस प्रकार है—

हिरणखुरी १ तोला, ब्रह्मदण्डी १ तोला, काली मिर्च नग ७, पाव भर पानी में घोटकर पिलायें। कुछ दिनों में ही रक्त नितान्त शुद्ध हो जायेगा।

चम्बल, दाद, खाज आदि के लिए विशेषोत्तम प्रयोग

ये रोग आजकल हमारे देश में अत्यधिक फैलने लगे हैं; अतः इनसे वच्चा-बच्चा भली-भांति परिचित है। इसलिए हम इन रोगों का विशेष विवरण यहां न लिखकर केवल अत्युत्तम सरल प्रयोग लिखते हैं, जिनमें से अधिकांशतः केवल प्राकृतिक वनस्पतियों के ही चमत्कारी प्रयोग हैं। आवश्यकता के समय जो सज्जन परीक्षा करेंगे, वे अपूर्व लाभ प्राप्त करेंगे।

दाद का अनुपम प्रयोग

इस दवा के बनाने से आपका एक पैसा भी व्यय न होगा और ईश्वर कृपा से कुछ दिनों में ही दाद रोग समूल नष्ट हो जायेगा। ऐसे सुगम चुटकुले प्रायः वैद्य लोग किसी को वताया नहीं करते, अपितु स्वय दवा बनाकर दिया करते हैं और मनमाने पैसे लेते हैं। निर्धन भाइयों के कल्याणार्थ हम इस प्रयोग को भेंट कर रहे हैं, लाभ उठाकर शुभाशीष दें।

आक का दूध और शुद्ध मधु (शहद) वराबर-बरावर मिलाकर दाद के ऊपर मला करें। कुछ दिनों के निरन्तर

अभ्यंग से दाद का नामो-निशान भी मिट जायेगा। अनुपम प्रयोग है।

दाद का शर्तिया इलाज

वन्दूक में भरने वाला बारूद कहीं से लेलें और उसको नींवू के अर्क में भली प्रकार बारीक पीसें तथा दाद के ऊपर लेप करें। चाहे कैसा ही और कितना ही पुराना दाद क्यों न हो, एक दो दिन में बिल्कुल उड़ जाता है। दाद की शर्तिया दवा है।

दद्रु नाशक मलहम

यथावश्यक फिटकड़ी लेकर उसे सिरके अथवा गाय के मूत्र में वारीक पीसकर मलहम सी बनालें और प्रातः सायं दाद के स्थान पर लेप किया करें। न केवल दाद अपितु चम्बल के लिए सर्वोत्तम मलहम है। कुछ ही दिनों में रोग का नामोनिशान तक मिटा देता है। स्वयं परीक्षा कर देखें।

अन्यान्य दद्रु नाशक लेप

खरबूजा के बीजों की मिंगी पानी में इतनी घोटें कि मक्खन जैसी कोमल हो जाये। इसको नित्य प्रातः सायं दाद पर लगाने से कुछ ही दिनों में त्वचा निर्मल हो जाती है।

द्वितीय

चोक एक प्रसिद्ध जड़ी है, जो कि पंसारियों के यहां सर्वत्र मिल सकती है। उसे थूक में घिसकर दाद पर लेप कर दें। आशा है कि एक बार के लेप करने से ही दाद बिल्कुल मिट जाएगा। बहुत कम ही रोगियों को दुबारा लगाना पड़ता है।

कण्डू (खुजली)

खुजली दो प्रकार की होती है, एक वह जिसमें खुजलाने से पानी-सा निकलता है, दूसरी वह जिसमें पानी आदि नही निकलता । नीचे दोनों प्रकार की कण्डू के लिए विशेष लाभकारी प्रयोग लिखे जाते हैं। आवश्यकता के समय बना कर लाभ उठायें ।

कण्डू के लिए रामबाण

१ छटाँक सरसों का तेल आग पर पकायें। जब लाल हो जाये, तो धीरे-धीरे एक तोला आक का दूध उसमें छोड़ दें । और जब दूध जलकर काला-सा हो जाये, तो छान कर तेल को सुरक्षित रखें और रोगी के शरीर पर दिन में दो दो बार मालिश कराया करें। मालिश के कम-से-कम ३ घण्टे पश्चात् रोगी को स्नान करायें । ईश्वरेच्छा से गिनती के दिनों में ही कंडू रोग नाम तक न रहेगा ।

तदनुसार

मिट्टी के एक कोरे कूजे में आक का दूध डालकर छाया में रखकर सुखायें । जब दूध सूख जाए तो कूजे को तोड़ कर जमे हुए दूध को सावधानी से निकालकर शीशी में रखलें । आवश्यकता के समय एक तोला मात्रा ५ तोला गाय के मक्खन में मिलाकर मलहम सा बना लें । मक्खन १०१ बार का धुला होना चाहिए । इस मलहम को शरीर पर भली-भांति मलें और ठन्डा पानी शरीर पर न लगने दें । ईश्वर कृपा से बुरी-से-बुरी खाज भी निरन्तर दूर हो जाएगी ।

रूक्ष कण्डू का अपूर्व प्रयोग

यह प्रयोग सूखी खुजली के लिए असीम लाभदायक है।

एक बार मैं भी स्वयं सूखी खुजली से ग्रसित हो गया था, तब इसी प्रयोग ने मुझे मुक्त कराया था। बड़ा ही प्रशंसित योग है—

नींबू का रस २ तोले, चमेली का तेल ५ तो०, दोनों को इतना हिलायें कि दूध के समान श्वेत हो जाए। रात के समय सब शरीर पर मर्दन करके सो रहें। दूसरे दिन प्रातःकाल नींबू का रस और गेहूं की भूसी मिलाकर गर्म पानी से उबालकर डालें, ईश्वर कृपा से दो एक दिन में ही सूखी खुजली मिट जाएगी और काया निर्मल हो जाएगी।

कण्डूनाशक अद्भुत प्रयोग

३ माशा भुनी हुई फिटकड़ी मुर्गी के एक अण्डे की सफेदी में मिलाकर शरीर पर मालिश करें। हर प्रकार की कण्डू के लिए अक्सीर औषधि है।

तदनुसार

फिटकड़ी को सरसों के तेल में बारीक पीसकर शरीर पर अभ्यंग करें। सूखी तथा तर दोनों प्रकार की खुजली के लिए असीम लाभदायक है। कभी-कभी फिटकड़ी को पानी में धोकर स्नान करने से ही खुजली मिट जाती है। अनुभूत प्रयोग है।

कण्डू की अन्तिम चिकित्सा

यदि दुर्भाग्यवश किसी रोगी को उपर्युक्त प्रयोगों में से कोई भी लाभदायक सिद्ध न हो, तो उनके लिए हमने अपनी पूर्व-लिखित पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में एक बड़ा ही चमत्कारी प्रयोग अंकित कर दिया है। वह संन्यासियों का

गुप्तातिगुप्त प्रयोग है, जो कि कभी निष्फल नहीं जाता। आवश्यकता के समय लाभ उठायें।

चम्बल का अक्सीरी प्रयोग

पीली काही आवश्यकतानुसार लेकर सरसों के तेल में भली प्रकार पीसलें और घोट मिलाकर चम्बल के ऊपर लेप करदें। ईश्वर कृपा से १-२ लेप में ही पूर्ण लाभ हो जायेगा।

द्वितीय प्रयोग

इस प्रयोग से एक ही दिन में चम्बल शर्तिया मिट जाता है। सैकड़ों बार का अनुभूत प्रयोग है—

जमाल गोटे की गिरी ४ माशा, दार चिकना दो माशे। दोनों को वारीक पीस कर दो नींबुओं के रस में खरल करें और चम्बल पर लेप करें। थोड़ी देर कष्ट तो अवश्य होगा, किन्तु रोग उसी दिन मिट जायेगा।

तृतीय प्रयोग

आवश्यकतानुसार चने की दाल रात को बकरी के दूध में भिगोदें और प्रातः एक माशा फिटकरी मिलाकर खूब घोटें तथा अति सूक्ष्म करके चम्बल पर लेप करदें। ३-४ दिनों के प्रयोग से चम्बल का नाम तक न रहेगा।

स्नायु रोग (नहरुआ)

यह रोग तालाव, पोखर आदि का पानी पीने से हो जाता है। यथार्थ में यह एक वारीक कीड़ा होता है, जो पानी के साथ पेट में जाकर स्नायु रोग का कारण बन जाता है। यह बड़ा ही कष्टप्रद रोग है। निम्न प्रयोग स्नायु के लिए परम लाभदायक सिद्ध हुए हैं।

प्रथम प्रयोग

सोहागा और फिटकड़ी बराबर-बराबर लेकर बारीक पीसलें और शहद में मिलाकर लेप किया करें। कुछ दिन लगाते रहने से नहरुआ मिट जायेगा।

द्वितीय सरल प्रयोग

१ माशा अनबुझा चूना आधा सेर गाय के दही में मिला कर रोगी को पिलादें। २-३ दिन में नहरुआ अन्दर ही अन्दर सड़ जायेगा और रोगी स्वस्थ हो जायेगा।

ईश्वरीय चमत्कार

मोर का पंख बारीक-बारीक कतर लें और गुड़ में लपेटकर गोली बनालें। तीन गोलियाँ रोगी को सेवन कराएँ, नहरुआ मिट जायेगा। चमत्कारी प्रयोग है।

उपदंश (आतशक)

यह रोग बड़ा ही भयंकर तथा संक्रामक है जो कि रोगी की छूत लगने अथवा माता-पिता से प्राप्त होता है। आधुनिक चिकित्सकों के मतानुसार इस रोग का कारण एक सूक्ष्म लहरदार कीटाणु होता है, जो कि अंग्रेजी में 'स्पायरो टापेलेग' कहलाता है।

उपदंश के कारण

चूंकि यह रोग छूतदार है; अत: उपदंश रोगियों का साथ करने, उनके चुम्बन आलिंगन करने तथा उनके कपड़े पहनने से हो जाता है। ऋतुमती स्त्रियों, वेश्याओं के प्रसंग से भी हो जाता है, और किसी-किसी को पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिलता है।

उपदंश की पहचान

प्राय: सबसे पहले जननेन्द्रिय पर एक लाल फुन्सी-सी प्रकट होती है, जो धीरे-धीरे बढ़कर घाव के रूप में आ जाती है। किन्तु घाव में पीड़ा बहुत थोड़ी हुआ करती है; अपितु फुन्सी को दबाने से कड़ी प्रतीत होती है। धीरे-धीरे इसका पानी शरीर के अन्य भागों पर लगने से फुन्सियाँ तथा घावउत्पन्न होते हैं और किसी-किसी व्यक्ति के तो सारे शरीर पर घाव तथा लाल चकत्ते से प्रकट हो जाते हैं और सारा शरीर फूट निकलता है।

सर्वोत्तम उपदंश नाशक वटी

रीठे का छिलका आवश्यकतानुसार बारीक पीसकर कपड़ छान करलें और पानी की सहायता से चने के बराबर गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय रोगी को १ गोली प्रातःकाल १० तोला दही के साथ दिया करें और सायंकाल पानी से दें। १५ दिन के निरन्तर सेवन करने से पुराने-से-पुराना रोग भी जड़मूल से दूर हो जायेगा। सैकड़ों बार का परीक्षित पूर्ण विश्वस्त प्रयोग है।

उपदंशक्षतहर मलहम

२० तोला त्रिफला को किसी बर्तन में रखकर आग पर जलायें और बारीक पीसकर थोड़ा-सा शहद मिला कर मलहम सा बना लें तथा प्रतिदिन घावों पर लगाया करें। ३-४ दिन में उपदंश के बिगड़े-से-बिगड़े घाव भी नितान्त ठीक हो जायेंगे।

उपदंश व्रण नाशक अन्य रोग

यह लेप भी उपदंश के घावों के लिए अक्सीर है। एक

दो बार के लगाने से ही पीड़ा जलन दूर हो जाती है, और कुछेक बार के लगाने से सूखकर बिल्कुल ठीक हो जाते हैं।

सेवन विधि इस प्रकार है—

काली हरड़ों को नींबू के रस में घिसकर उपदंश के घावों पर लेप करते रहें। ईश्वर कृपा से निश्चय ही रोग-मुक्त हो जायेंगे।

एक सरल चुटकुला

यह अति सरल प्रयोग भी उपदंश के घावों के लिए बड़ा ही प्रभावक लाभप्रद सिद्ध हुआ है। हमारे एक मित्र वैद्य महोदय को किसी रोगी ने यह अद्‌भुत कथा सुनाई। एक बार उसके उददंशक्षत इस प्रकार बिगड़े कि किसी औषधि से ठीक न हों। हर समय उनमें से पीप बहा करती थी, और वह बेचारा जीवन से भी निराश हो चला था। संयोगवश उसे किसी दयार्द्र व्यक्ति ने बताया कि कपड़े के एक टुकड़े को शहद में तर करके घावों पर रखा करो। उसने दूसरे दिन वैसा ही किया। शहद का घाव पर लगना था कि ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो आग अंगारा रख दिया हो। बड़े धैर्य से उसने कष्ट सहन किया। परन्तु जब कष्ट असह्य होने लगा, तो उसे हटा कर पानी से तर कपड़ा उसके ऊपर रख दिया। इससे कुछ-कुछ शान्ति पड़ गई। अगले दिन पुनः उसने वैसा ही किया। इस बार पींड़ा भी कुछ कम हुई और घाव भी कुछ-कुछ सूखते से जान पड़े। शनैः शनैः घाव साफ हो गया और कुछ ही दिनों में वह नितान्त रोगमुक्त हो हो गया। ईश्वर की यह विचित्र लीला सुनकर वैद्य महोदय दंग रह गए। फिर एक-दो नितान्त सत्य निकला।

सारांश यह है कि उपदंश के घावों के लिए अकेला शहद भी अद्भुत लाभकारी है। स्वयं परीक्षा कर देखें, आशा है कि पूर्ण लाभ प्राप्त होगा। किन्तु साथ में कोई खाद्य औषधि भी सेवन करने से अति शीघ्र लाभ प्राप्त हो जाता है।

उपदंश की एक पैसे की दवा

एक अत्यधिक अनुभवी वैद्य महोदय से हमें यह अद्भुत योग प्राप्त हुआ। सुनकर पहले तो मुझे विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि प्रयोग देखने में नितान्त साधारण सा है, किन्तु जब मैंनें परीक्षा की तो आशा से भी अधिक लाभप्रद पाया।

प्रयोग इस प्रकार है —

२ माशा फिटकड़ी खील करके पीसलें और पानी के साथ खिलादें। कुछ दिनों तक नित्य प्रातः सायं सेवन कराते रहें। ईश्वर कृपा से निश्चय ही आराम हो जाएगा। चमत्कारी प्रयोग है।

तदनुसार

कुटकी अति सूक्ष्म पीसकर रखें और उसमें से ६ माशा प्रतिदिन ताज़ा जल के साथ सेवन कराएँ। कुछ दिन के सेवन से ही उपदंश का नामोनिशाने तक मिट जाएगा। औषधि के सेवन काल में केवल बेसनी रोटी और घी खिलायें। अन्य वस्तुओं से परहेज रखना परम आवश्यक है।

बूटी का चमत्कारी योग

अज्ञान व्यक्ति कुछ वस्तुओं को तुच्छ और निरर्थक समझ कर फेंक दिया करते हैं। वे मूढ़ उस जगदाधार विश्वम्भर की लीला को क्या जानें, जिसने इन छोटी-छोटी वस्तुओं में ही

दीन हित के लिए अनमोल गुण भर दिए हैं। नीचे हम एक ऐसी ही साधारण बूटी का प्रयोग आपको भेंट करते हैं, जो कि उपदंश जैसे दुखदाई रोग लिए भी अक्सीर है। इस बूटी में तथा ऐसी ही असंख्य बूटियों में और क्या-क्या गुण भरे हुए हैं, इसका ज्ञान तो आपको तभी हो, जब कि आप एक बार 'देहाती जड़ी बूटियाँ' नामक पुस्तक पढ़लें। खैर !

प्रयोग इस प्रकार —

सत्यानाशी बूटी की जड़ छिलका १ तो०, काली मिर्च ५ दाने, आधा सेर जल में ठंडाई की भांति घोट छान कर ४ तोला शुद्ध मधु मिलाकर पिलाया करें। कुछ दिनों के सेवन से उपदंश, फोड़ा-फुन्सी, दाद, खाज आदि समस्त त्वचा रोग निर्मूल हो जाते हैं, क्योंकि यह अनुपम रक्तशोधक जड़ी है।

अन्तिम प्राकृतिक योग

प्रकृति की गोद में फलने फूलने वाले ये साधारण वृक्ष भी कैसे-कैसे अनुपम गुणों से भरपूर हैं, इसका बखान यह जड़ लेखनी कदापि नहीं कर सकती। निम्न प्रयोग को जो सज्जन बना कर परीक्षा करेंगे, उन्हें इस बात की सत्यता का भली प्रकार आभास मिल सकता है। हमारे एक मित्र वैद्य का यह दर्प्य योग है।

योग

निम्ब वृक्ष की छाल, कचनार वृक्ष की छाल, इन्द्रायण की जड़, कीकर की फली, कटेली छोटी (पत्ते, जड़ तथा फल सहित), पुराना गुड़ प्रत्येक १० तोले। सब औषधियों को २ सेर पानी में पका कर क्वाथ बनायें। जब तीन चौथाई पानी

जल कर केवल चतुर्थांश रह जाए तो छान कर बोतल में भरलें।

सेवन विधि—

पूरी बोतल की सात मात्राएं बना कर एक मात्रा प्रातःकाल पिलाया करें। इससे प्रतिदिन दस्त आया करेंगे। दस्त आने के पश्चात् ५ तोला अर्क मकोय पिला दिया करें। जब ठीक हो जाए, तो पुनः पिलाना शुरू करदें और सातों मात्रएं क्रमशः पिलादें।

यदि उपदंश के रोगी को पहले सात दिन यह औषधि पिलाएं, तत्पश्चात् कोई रेचन देकर पूर्वोक्त रीठे की गोलियाँ अथवा अन्य कोई खाद्य औषधि सेवन कराई जाये, तो ईश्वर कृपा से कुछ ही दिनों में रोग निर्मूल हो जायेगा। कदापि असफलता न होगी।

अति सरल प्रयोगावली

प्रथम

भैंस की चरबी गर्म करके पाँवों के पिछली ओर एड़ी से ऊपर दोनों मछलियों पर मला करें। सात दिन निरंतर यही क्रिया करने से उपदंश का नाम तक न रहेगा, बड़ा ही आश्चर्यजनक प्रयोग है।

द्वितीय

हंसराज बूटी को फूंक कर राख करलें और रोगी को रत्ती-रत्ती की मात्रा दिन में आठ बार केवल पानी से दें। केवल तीन दिन में रोग निर्मूल हो जायेगा।

विशेष सूचना

पुराने से पुराने उपदंश के शर्तिया इलाज के लिए 'संन्यासी

'चिकित्सा शास्त्र' नामक पुस्तक में वर्णित उपदंश प्रकरण का तीसरा विशेष संन्यासी प्रयोग देखें। इस रोग की करामात से बड़े-बड़े वैद्य और हकीम भी दंग रह गए हैं। सम्भवत: उपदंश के लिए उस से बढ़ कर निश्चयात्मक प्रयोग अन्य नहीं।

श्वित्र कुष्ठ

शरीर के सौन्दर्य का सब से बड़ा शत्रु यह रोग है। इसमें समस्त शरीर पर धीरे-धीरे सफेद दाग फैल जाते हैं। प्राय: यह रोग पैतृक हुआ करता है, किन्तु कभी-कभी दूध के साथ खट्टी वस्तुएँ अथवा मछली खा लेने से भी हो जाता है।

साध्य श्वित्र कुष्ठ का निदान

रोगी के शरीर पर दाग़ की जगह सुइ चुभोएं। यदि त्वचा में से रक्त निकले, तो रोग साध्य समझना चाहिए। ऐसे रोगी निम्न प्रयोगों का धैर्यपूर्वक सेवन करते रह कर रोगमुक्त हो सकते हैं। किन्तु यदि त्वचा में से पानी जैसा द्रव्य निकले तो रोग असाध्य समझ लेना चाहिए। क्योंकि वे दाग औषधियों से नहीं जाते हैं।

श्वित्र कुष्ठ के लिए सर्वोत्तम अर्क

चाहे रोगी का सारा शरीर ही क्यों न श्वेत हो गया हो, किन्तु इस प्रयोग के निरन्तर सेवन से ईश्वर कृपा से निश्चय ही लाभ हो जाता है। बड़ा ही चमत्कारी और सरल प्रयोग है।

नीम वृक्ष की छाल, मुण्डी बूटी के फूल, कच्ची हल्दी, गुड़ प्रत्येक बराबर-बराबर लेकर कूटलें तथा किसी मिट्टी के घड़े में डालकर दस गुना पानी भर दें। तथा मटके का मुंह

भलीभाँति वन्द करके १५ दिन तक घोड़े की लीद में दबा रहने दें। तत्पश्चात् निकाल कर भबके द्वारा अर्क खींचलें और बोतलों में सुरक्षित रखें। श्वित्र कुष्ठ के लिए यह अक्सीरी अर्क है। इसमें से १० तो० प्रातः और १० तो० सायं पिलाया करें। ३-४ मास तक सधैर्य निरन्तर सेवन करते रहें और दूध, दही, छाछ व नमक से परहेज रखें तो मैं विश्वास से कह सकता हूं कि समस्त दाग निश्चय ही मिट जायेंगे।

श्वित्र कुष्ठ नाशक वटी

ये गोलियाँ भी श्वित्र कुष्ठ के लिए अनुपम गुणकारी हैं। विशेषता यह है कि बनने में अति सरल हैं। किन्तु पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए इन्हें उस समय तक धैर्य सहित निरन्तर सेवन करते रहें, जब तक कि रोग जड़मूल से नष्ट न हो जाए।

प्रयोग इस प्रकार है —

कनेर की जड़ की छाल और लाल मिर्च दोनों को समान मात्रा में लेकर चने के बराबर गोलियाँ बनालें। पहले रोगी को कोई उत्तम विरेचन देकर फिर दोनों समय १-१ गोली दूध के साथ देना प्रारम्भ करें। श्वित्र कुष्ठ की रसायनोपम गोलियाँ हैं।

श्वित्र कुष्ठ का सर्वोत्तम प्रयोग

वही है, जोकि हमने अपनी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में लिख दिया है। क्योंकि वह एक महान संन्यासी का ही विशेषातिविशेष योग है, जो कि आज तक कभी निष्फल नहीं गया। इच्छुकजन उक्त पुस्तक में देखने का कष्ट करें।

कुष्ठ रोग (कोढ़)

यह बड़ा ही घृणित और दुस्साध्य रोग है। आप में से सभी इस रोग से भलीभाँति परिचित होंगे। स्थानाभाव के कारण हम यहाँ इसका विस्तृत वर्णन न लिख कर केवल कुछेक अचूक प्रयोग लिख देते हैं।

नीम के कुष्ठनाशक अद्भुत प्रयोग

प्रथम

नीम की छाल १ सेर, हल्दी १ सेर, गुड़ दो सेर, सब को मिट्टी के बड़े से मटके में डालकर १। मन पानी भर दें और घोड़े की लीद के अन्दर मटके को भली-भांति बन्द करके दबा दें। १५ दिन बाद निकाल कर अर्क खींच लें और १० तोला प्रात: और १० तोला सायं पिलाते रहें। बेसनी रोटी घी के साथ खाने को दें। अन्य वस्तुओं से परहेज करें। कोढ़ के लिए सर्वोत्तम औषधि है।

द्वितीय

निम्बोली की गिरी पहले दिन १, दूसरे दिन २, फिर इसी प्रकार १-१ नित्य बढ़ाकर १०० दानों तक ले जाएँ। तत्पश्चात् १-१ दाना घटाते हुए फिर १ तक ले आएँ। भला देखिए कैसा अद्भुत प्रयोग है। केवल निम्बोली की गिरी खाते रहने से कुष्ठ जैसा भयंकर रोग भी निर्मूल हो जाता है। सेवन काल में रोगी को बेसनी रोटी और घी के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से परहेज कराएँ। प्रत्यक्ष में साधारण, किन्तु गुणों में अनुपम प्रयोग है। यथासमय लाभ उठायें।

तृतीय

यह संन्यासियों के हृदय का एक रहस्यमय प्रयोग है।

कहीं खोजकर कम से कम १०० साल पुराना नीम वृक्ष तलाश करें। उसका छिलका बारीक पीसकर चूर्ण बनालें और हथेलीभर मात्रा प्रतिदिन खिलाते रहें। कुछ ही दिनों में लाभ प्रकट होने लगेगा। कुष्ठ को नितांत मिटा देने वाला प्रयोग है।

चतुर्थ

नीम के २ तोला पत्ते प्रतिदिन ठंडाई की भांति घोट कर पिलाते रहें, और नीम का मद वदन पर मलते रहें। ईश्वर कृपा से निश्चय ही कुष्ठ निर्मूल हो जायेगा।

कुष्ठनाशक चमत्कारी बूटी

नीम बूटी ताजा और हरी भरी लेकर पानी से साफ करलें और पत्थर के कूंडे में घोटकर इसका एक बोतल रस प्राप्त करलें। इसको मन्द आग पर गर्म करके फाड़ लें और साफ करके डेढ़ पाव शुद्ध मधु मिलाएँ। पुनः आग पर रखकर इतना पकाएँ कि एक बोतल भर औषधि रह ज़ाए। रोगी को नित्य प्रातः २॥ तौला औषधि निराहार मुख पिलाया करें। कुष्ठ के लिए परम लाभप्रद सिद्ध होगी।

आक का चमत्कार

आक के फूल एक ही पौधे से लेकर छाया में सुखा कर बारीक पीस लें। पहिले दिन ३ माशा, दूसरे दिन ६ माशा इसी प्रकार प्रतिदिन ३ माशा बढ़ाते चले जायँ, और निरंतर ३७ दिन तक एक ही कुएँ के पानी से सेवन कराते रहें। फिर क्रमशः ३-३ माशा प्रतिदिन घटाकर पुनः ३ माशा पर लाकर छोड़ दें। सेवन काल में बेसनी रोटी और घी खूब खिलाएँ। ईश्वर कृपा से निश्चय ही लाभ हो जायेगा।

ज्वराधिकार

ज्वर क्या है ?

हृदय प्रकरण में हमने आपको वताया था कि शरीर-सम्राट् हृदय की जब किसी कारणवश ऊष्मा बढ़ जाती है, तो उसका प्रभाव शरीर के समस्त अंगों पर पड़ता है। क्योंकि रक्त-नलियां, जो हृदय से निकल कर विविध अंगों तक जाती हैं, वे हृदय की ऊष्मा को रक्त के साथ ले जाकर सभी अंगों तक पहुँचा देती हैं, फलस्वरूप सारा ही शरीर गर्म हो जाता है और प्रत्येक अंग अपने काम में ढीला पड़ जाता है। इसी दशा को 'ज्वर' अथवा 'ताप' कहते हैं, अंग्रेजी में उसे (Fever) और यूनानी भाषा में बुखार कहते हैं। ज्वरों के सम्बन्ध में कुछ विशेष मूल्यवान् आदेश, अनुभवी चिकित्सकों की कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी की बातें, ज्वर रोगी के लक्षण देखकर मौत का हाल पहले ही जान लेना आदि अनेक उल्लेखनीय बातें हम आपको अपनी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में समझा कर बता चुके हैं। उक्त पुस्तक में हमने जैसे-जैसे चमत्कारी संन्यासियाना प्रयोग आपको भेंट किए हैं, उनके समान आपको अन्यत्र कदापि न मिले होंगे। आप लोगों में से जिन सज्जनों ने वह पुस्तक पढ़ी होगी, वही जानते होंगे। एक प्रयोग तो हमने ऐसा लिखा है जिससे तीव्र से तीव्र ज्वर भी केवल ५ मिनट में उतर जाता है। अकेला ही हजारों रुपये का प्रयोग है। आप में से जिन्होंने हमारी 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' पुस्तक अव तक न पढ़ी हो, मैं उनसे बार-बार अनुरोध करूँगा कि वे एक बार अवश्य देखें। बड़े ही काम की पुस्तक है। आप के साथ दूसरों का भी कल्याण होगा।

'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में ज्वरों के सम्बन्ध में सभी मुख्य-मुख्य बातें लिखी जा चुकी हैं। हाँ केवल बोहरान के विषय में विशेष विवरण इस पुस्तक में लिखने का वायदा किया था। अस्तु कथनानुसार अंकित कर रहा हूं। बोहरान की पूरी जानकारी होना प्रत्येक वैद्य, हकीम, तथा साधारण व्यक्ति के लिए भी परमावश्यक है। अस्तु ध्यान से पढ़ें।

बोहरान क्या है ?

'बोहरान' शब्द यूनानी भाषा का है, जिसका अर्थ है शत्रु का शत्रु पर आक्रमण करना। किन्तु वैद्यक भाषा में इसका अर्थ 'निर्णायिक वैद्य' है, अर्थात् वह वैद्य जो रोग के साध्य, कष्टसाध्य या असाध्य होने का निश्चित निर्णय करें। हकीमों की भाषा में दूसरा अर्थ यह भी है कि रोग और रोग की प्रकृति में जो संग्राम होता है, उसे बोहरान कहते हैं। सारांश यह है कि बोहरान के द्वारा ही हम रोग के साध्य, असाध्य होने का निश्चय कर सकते हैं, और उसी की सहायता से रोग पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

बोहरान की उपेक्षा से हानियाँ

प्राचीन चिकित्साविज्ञों के मतानुसार बोहरान के दिनों में प्रस्वेद अथवा रेचन देना विष देने के समान है, इससे रोगी दुर्बल हो जाता है और रोग का सामना करने की क्षमता उसमें नहीं रह जाती। किन्तु खेद के साथ लिखना पड़ता है कि आजकल के अधिकांश वैद्य-डाक्टर या तो बोहरान को जानते ही नहीं अथवा कुछेक जानकार भी उपेक्षा कर जाते हैं, और प्रायः बोहरान के दिनों में भी रोगी की

बैचैनी दूर करने के लिए एस्प्रीन अथवा एन्टीफेब्रीन आदि हृदय को दुर्बल बना देने वाली औषधियाँ दे बैठते हैं अथवा कोष्ठबद्धता निवारक औषधि दे देते हैं, परिणामस्वरूप रोगी की मृत्यु हो जाती है और वही कहावत हो जाती है कि 'न रोगी रहा और न रोग'।

बोहरान के दिन ज्ञात करना

बोहरान के दिन केवल लक्षणों से ही नहीं जाने जा सकते, अपितु यूनानी हकीमों ने दीर्घानुभव के उपरान्त बोहरान के दिनों की गणना-विधि भी लिख दी है। इतने पर भी यदि वैद्य लोग इसकी उपेक्षा कर जाएँ, तो निस्संदेह वे दोषी हैं। अतः मैं अपने पाठक वैद्यों से अनुरोध करूंगा कि हमारी यह पुस्तक पढ़ने के पश्चात् वे जब भी किसी ज्वर-रोगी की चिकित्सा करें, तो इस जानकारी से लाभ उठाते हुए बोहरान का अवश्य ध्यान रखें, तभी सफलता मिलेगी।

चिरकालीन अनुभव के अनुसार ४, ७, ११, १४, २०, २२, और २४ तेज बोहरान के दिन हैं और २७ तथा ३१ भी बोहरान के दिन हैं, किन्तु इन दिनों में तनिक कम होता है। कभी-कभी ३४ व ३७ को भी बोहरान हो सकता है, किन्तु साधारण तौर पर २० दिन तक विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

इनके अतिरिक्त कुछ दिन ऐसे होते हैं जिनमें कभी बोहरान होता है और कभी नहीं भी होता है। वे ६ दिन हैं —३, ५, ९, ११, १३, १७। यद्यपि प्रायः उपरोक्त दिनों में ही बोहरान होता है, परन्तु कभी-कभी इनके अतिरिक्त दिनों में भी हो जाता है, जो बड़ा ही कठिन और भयंकर होता है।

बोहरान के लक्षण जानने के लिए ९ दिन हैं —६, ८, १०, १२, १५, १६, १८, १९ तथा २८। तिजारी ज्वर में सातवां और ग्यारहवां दिन खतरनाक होता है।

रेचन (जुलाब) के लिए उपयुक्त दिन

यदि रोगी को जुलाब देने की आवश्यकता है तो निम्न दिनों में देना चाहिये। क्योंकि इन दिनों में बोहरान नहीं होता। वे दिन १३ हैं —२२, २३, २५, २८, २९, ३३, ३६, ३८, ३९,। और यदि इनके अतिरिक्त निम्न दिनों में बोहरान न पड़े, तो इनमें भी जुलाब दिया जा सकता है। वे दिन हैं —८, १०, १२, और १६।

बोहरान के लक्षण

जिस प्रकार प्रत्येक रोग के लक्षण पूर्व ही प्रकट होने लगते हैं, उसी प्रकार बोहरान के लक्षण भी पहले ही प्रकट हो जाते हैं। जिनसे कई घंटे पूर्व ही इसकी सूचना मिल जाती है। यदि बोहरान दिन को आने वाला है, तो लक्षण रात को, और यदि रात को आने वाला है, तो लक्षण दिन में ही प्रकट हो जाते हैं।

बेचैनी, करवटें बदलना, कभी होश आजाना और कभी अचानक बेहोश हो जाना, घबराहट की बातें करना, कमर और सिर में दर्द होना, आँखों में विचित्र-विचित्र से दृश्य घूमना, कानों में सनसनाहट होना, शरीर टूटना, रोगी का उठ-उठ कर भागना आदि बोहरान आने के पूर्व लक्षण हैं।

बोहरान की समाप्ति के लक्षण

जब रोगी को पसीना आकर शरीर हल्का हो जाये, घबराहट और बेचैनी दूर हो जाये, होश की स्वाभाविक बात करने लगे, तो समझ लें कि बोहरान समाप्त हो गया है।

ज्वरों के भेद

चिकित्सा ग्रन्थों में तो ज्वरों के असंख्य भेद वर्णित हैं, जो कि इस छोटी पुस्तक में नहीं लिखे जा सकते। हाँ कुछेक बहुप्रचलित प्रमुख ज्वरों का संक्षिप्त विवरण और उनके प्राकृतिक सरल प्रयोग अंकित किये जाते हैं। आवश्यकता के समय इनसे पर्याप्त लाभ होगा। ऐसी हमें पूर्णाशा है।

पित्त-ज्वर

गर्म पदार्थों के अधिक सेवन अथवा तेज धूप में अधिक चलने फिरने से पित्त दूषित होकर पित्त-ज्वर का कारण बन जाता है। इसमें रोगी को जलन, प्यास बेचैनी, मूत्र अधिकता आदि कष्ट अधिक सताते हैं। वमन में पीले रंग का पानी निकलता है।

पित्त ज्वर के लिए सरलातिसरल प्रयोग

प्रथम

कपूर की तीन टिकियां साबत ही एक सफेद बोतल में डालकर पानी से भर दें, और रोगी को ३ बार ५-५ तोले की मात्रा में पिलाया करें। बीसियों रोगी लाभ उठा चुके हैं पित्त-ज्वर की अचूक औषधि है।

द्वितीय

सूखा धनिया ३ तोला, कूटकर मिट्टी के कोरे कूजे में

रात के समय आधा सेर पानी में भिगो दें और प्रातःकाल छान कर मिश्री मिला कर रोगी को थोड़ा-थोड़ा पिलाएँ। प्यास और जलन शांत होगी और दो एक दिन में ज्वर उतर जायेगा।

तृतीय

श्वेत चन्दन का चूरा ४ माशा, कासनी की जड़ ४ माशा, खरबूजे के बीज ४ माशा, घोट छानकर मिश्री मिला कर प्रातः सायं रोगी को पिलाया करें। पित्त-ज्वर के लिए असीम लाभप्रद है।

कफ-ज्वर

ठंडे और भारी पदार्थं खाने व ठंडे स्थान में रहने से कफ दूषित होकर इस ज्वर का कारण बन जाता है। इसमें रोगी की नाड़ी मंद, जीभ और मूत्र का रंग श्वेत हो जाता है। नींद अधिक आती है, खांसी व जुकाम भी हो जाता है। प्राय: यह ज्वर बच्चों और बूढ़ों को ही होता है।

कफ-ज्वर का प्रथम योग

कटेली की जड़, हरी गिलोय, बाँस के पत्ते ६-६ माशा लेकर आधा सेर पानी में पकायें। जब आधा पाव शेष रहे, तो दो तोला शहद मिलाकर पिलाएँ। ज्वर और खांसी दोनों के लिए हितकर है। परीक्षा कर देखें।

द्वितीय प्रयोग

यह प्रयोग देखने में नितांत साधारण है किन्तु लाभ में अनुपम सिद्ध हुआ है।

उत्तम देशी अजमायन १ तोला प्रातःकाल के समय मिट्टी के कोरे कूजे में डालकर डेढ़ पाव जल में भिगोदें। और दूसरे दिन प्रातः घोट छानकर थोड़ा नमक मिलाकर पिलाला करें। कुछ ही दिनों में कफ-ज्वर जाता रहेगा।

वातज ज्वर के लिए उत्तम औषधि

बनफशा के फूल, गुलाब के फूल १-१ तोला, कद्दू की मींगी, सौंफ ६-६ माशा, पिप्पली १ माशा। सब को पाव भर जल में घोट छानकर ३ तोला मिश्री मिला, थोड़ा गर्म करके रोगी को पिलाया करें। यह वात ज्वर क लिए अगद है और उत्कृष्ट कोष्ठबद्धता नाशक भी है।

द्वितीय प्रयोग

यह योग पुराने वातज्वर के लिए अत्यधिक लाभदायक है। कुछ दिनों के सेवन से ही जीर्ण से जीर्ण रोगी भी नितांत स्वस्थ हो जाते हैं। शतशोनुभूत है।

योग इस प्रकार है —

बनफशा के फूल ६ माशा, हरी गिलोय एक तोला, सौंफ ६ माशा, चिरायता ३ माशा, पित्तपापड़ा ३ माशा, गावजवां ३ माशा, नीम की छाल ३ माशा, मुलहठी १ माशा। सबको रात के समय पाव भर पानी में भिगो दें और प्रातः छानकर शहद या मिश्री से मीठा करलें। पहले खूबकला ६ माशा फांक कर ऊपर से वह शर्बत पीलें। केवल ७ दिन के सेवन से ही पर्याप्त लाभ हो जायेगा।

विषमज्वर (मलेरिया)

यह बड़ा कठिन प्रकार का ज्वर है। सरकार और चिकित्सकों के लाख प्रयत्न करने के उपरान्त भी केवल भारत में लाखों प्राणी मर जाते हैं। प्राचीन वैद्यों ने इसका कारण वर्षा के कारण जल तथा वायु का दूषित हो जाना बताया है, किन्तु आधुनिक चिकित्सकों के मत से इसका कारण मच्छर का काटना हैं।

विषमज्वर के लक्षण

ज्वर बहुत जाड़े से चढ़ता है, इसके अतिरिक्त रोगी को बहुत गर्मी प्रतीत होती है और बेचैनी, तिल्ली का वढ़ जाना, आमाशय के निकट पीड़ा होना भी इस ज्वर के लक्षण हैं। कफ के कारण यह ज्वर प्रतिदिन, पित्त के कारण तीसरे दिन और वात के कारण चौथे दिन बारी से आया करता है। इसके लिये उत्तमोत्तम सरल प्रयोग आपको भेंट किये जाते हैं। लाभ उठायें।

प्रथम योग

यह प्रयोग बारी के सभी ज्वरों के लिए परम गुणप्रद है और बनाने में अति साधारण है।

नीम के हरे पत्ते १ तोला, फिटकड़ी की खील ६ माशा दोनों को बारीक पीसकर पारी द्वारा चने के बराबर गोलियां बना लें और बारी आने से दो घण्टे पूर्व २ गोली और फिर १ घण्टे के अन्तर से २ गोलियां और दे दें। ईश्वर कृपा से पहले ही दिन, नचेत् दूसरी बार ज्वर कदापि न होगा। दैनिक, तृतीयक, चौथिया आदि हर प्रकार के बारी ज्वर के लिए अक्सीर है।

मलेरिया के लिए देशी कुनीन

करंजवा की मींगी १ तोला, काली मिर्च ६ माशा दोनों को बारीक पीसकर शीशी में रख लें। ज्वर आने से दो घण्टे पहले ६ रत्ती मात्रा ताजा जल से सेवन कराएँ। पुराने से पुराना ज्वर एक दो दिन में ही छूट जायेगा। स्वाद में यह औषधि कुनीन की भांति कड़वी है, किन्तु गुणों में उससे भी बढकर सिद्ध हुई है।

एक ओर अनुभूत औषधि

यह औषधि भी मलेरिया ज्वरों के लिए विशेष लाभकारी है। अनेक वैद्य इसे सैकड़ों रोगियों पर अनुभव कर चुके हैं। आप भी परीक्षा करके लाभ उठायें।

प्रयोग इस प्रकार है —

लाल फिटकड़ी लोहे के तवे पर रखकर मन्द-मन्द आँच पर जलाएँ। ऊपर से आक का दूध इतना डालें कि औषधि काली हो जाय। बारीक पीसकर ज्वरागमन के पूर्व २-२ रत्ती ३ बार पानी से खिला दें। बस अक्सीर के समान लाभप्रद सिद्ध होगी।

तिजारी की शर्तिया दवा

धतूरे के पत्तों का रस ३ बूंद बताशे या मिश्री में डाल कर रोगी को ज्वर आने से दो घण्टे पूर्व खिलादें। ज्वर कदापि न होगा। शर्तिया दवा है।

चौथिया ज्वर का शर्तिया इलाज

प्राचीन हकीमों ने चौथिया ज्वर की मियाद १२ साल

तक बताई है। यह बड़ी ही कठिनता से जाने वाला ज्वर है। किन्तु हमारी पूर्वलिखित पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में एक विशेष गुप्त संन्यासी प्रयोग ऐसा मिलेगा, जिसके सामने बड़े-बड़े वैद्य हकीमों ने भी घुटने टेक दिये हैं। वह प्रयोग चौथिया को निश्चय ही जड़ से मिटा देता है।

कम्प तथा बारी ज्वरों के दो अक्सीरी प्रयोग

प्रथम

आक की जड़ की छाल छाया में सुखा लें और बारीक पीसकर आधी मात्रा में पिसी हुई काली मिर्च मिला दें। तदनन्तर गाय के दूध में पीसकर चने के बराबर गोलियां बनालें और रोगी को ज्वरागमन से दो घण्टे पूर्व १ से २ गोली तक पानी के साथ खिलादें। अधिकाधिक तीन दिन में ज्वर शर्तिया छूट जाएगा।

द्वितीय

यह प्रयोग पूर्वोक्त सभी प्रयोगों से अधिक सरल है, और लाभ में किसी से कम नहीं। स्वयं मैं भी इसका अनुभव कर चुका हूं।

रोगी को ज्वरागमन से डेढ़ घंटे पूर्व एक नींबू चीर कर उस पर काली मिर्च, नमक, भुनी हुइ फिटकड़ी बारीक पीसकर छिड़कलें और रोगी को चुसाएं। इसी प्रकार आधा घंटे पश्चात दूसरा टुकड़ा भी चुसा दें। ईश्वर कृपा से उसी दिन ज्वर न होगा। नचेत् दूसरे दिन पुनः चुसाएं। अति प्रशंसित प्रयोग है।

मन्थर ज्वर (मोतीझरा)

आजकल भारतवर्ष में मोतीझरा से गाँव-गाँव के लोग भली प्रकार परिचित हैं, अतः हम विशेष विवरण न लिखकर केवल कुछेक प्रशंसित योग लिखते हैं जो सज्जन परीक्षा करेंगे, निश्चय ही इस घातक रोग से मुक्त हो जायेंगे। विवरण 'देहाती अनुभूत संग्रह' में देखें।

मोतीझरा का सर्वोत्तम योग

गुलबनफशा ६ माशा, मुनक्का ९ दाने, कासनी की जड़ ७ माशा, सौंफ ९ माशा, आलू बुखारा ५ दाने, खूबकला ७ माशा, रात को गरम जल में भिगोकर रख दें और प्रातःकाल छानकर ४ तोला खमीरा बनफशा मिलाकर पिलाया करें। अद्भुत लाभकारी है। सुविख्यात हकीम स्व० अजमल खाँ का विशेष योग है।

चमत्कारी संन्यासी प्रयोग

रुद्राक्ष का दाना (जिसकी माला साधू पहिनते हैं) और चित्रक दोनों को पानी में थोड़ा-थोड़ा घिसकर रोगी को पिलाएं। २-३ बार पिलाने से ही दाने शीघ्र निकल कर रोगी को आराम हो जाता है।

राजयक्ष्मा (तपेदिक)

यह बड़ा ही भयंकर रोग है। इसका पूरा-पूरा हाल हम 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में सविस्तार लिख चुके हैं। वैसे आप भी इस रोग से परिचित होंगे ही। इसके लिए आपको दो लाख रुपए के प्रयोग भेंट करता हूं।

राजयक्ष्मा की दुग्ध चिकित्सा

विदेशी विद्वानों के अन्वेषणानुसार स्त्री का दूध पुरुष के लिए अमृत तुल्य है। विलायत में एक बार एक राजयक्ष्मा के रोगी की पुत्री मर गई। उसकी स्त्री को स्तनों में दूध चढ़ जाने से पीड़ा होने लगी। उसके रोगी पति ने दूध चूसना आरम्भ कर दिया। २-४ दिन में ही उसे अपने स्वास्थ्य पर अपूर्व लाभ प्रतीत हुआ। अतः इसी क्रिया को जारी रखकर नितान्त रोगमुक्त हो गया।

राजयक्ष्मा के लिए लाभप्रद स्नान

यदि राजयक्ष्मा के रोगी को नित्य प्रातः सायं टब में बिठाकर गर्दन तक दूध भरकर कम से कम से कम एक घण्टे स्नान कराया जाय तो कुछ दिनों के निरन्तर प्रयोग से अपूर्व लाभ होता है। धनाढ्य लोग परीक्षा करके लाभ उठायें।

पुरुषों के गुप्तरोग

पुरुषों के गुप्त रोगों में प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, बाजीकरण मन्दता और नपुंसकता आदि प्रमुख हैं। एक समय था जबकि हमारे देश में इन रोगों का नाम वैद्यों के अतिरिक्त और कोई जानता ही न था, किन्तु आज इनसे भारत का प्रत्येक नौजवान भली भांति परिचित है। प्रत्युत ९९ प्रतिशत नवयुवक इनमें से किसी न किसी रोग में अवश्य ही ग्रसित पाए जाते हैं। उनके मुरझाये हुए पीले चेहरे, गढ़ों में धंसी हुई आंखें और अशक्त शरीर देख कर यह कहा नहीं जा सकता कि वे युवा हैं। यौवन की मदमस्त उमंगें, चेहरे और शरीर का सौंदर्य व तेज, अपितु जीवन का सारा सुख

ही नष्ट हो जाता है। यहां यह बता देना हम आवश्यक समझते हैं कि ये रोग भारत में अंग्रेज लाये थे। भारतीयों ने न केवल अंग्रेजों का वरन् उनके साथ-साथ इन रोगों का भी हृदय खोलकर स्वागत किया, क्योंकि भारतीयों का सत्कार सारे संसार में प्रख्यात है। अंग्रेजों ने इन रोगों के साथ ही वह उत्तम विधियां भी हमें प्रदान करदीं, जिनसे हम सर्वदा इन रोगों से मालामाल बने रहेंगे। और वे विधियां हैं—हस्त मैथुन, गुदामैथुन आदि। मेरे प्यारे भाइयो! अब तो तनिक आँखें खोलो, देखो आज अंग्रेज चले गए, किन्तु उनके कुचक्रों में तुम आज भी मुक्त नहीं हो सके। आज भी तुम्हारी अवस्था कितनी दयनीय है। तुम मनुष्य होकर भी मानव जीवन के यथार्थ सुख से वंचित हो, युवा होकर भी यौवन के आनन्द को न जान सके। ये सब उन्हीं कुक्रियाओं और घृणित पापाचारों का परिणाम है, जो अंग्रेज तुम्हें दे गये हैं। मैं स्थानाभाव के कारण अधिक तो कुछ कहना नहीं चाहता, हाँ बार-बार यही अनुरोध करता हूं कि अपने लिए नहीं तो संतान के सुख के लिए, स्वतन्त्र भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपने को इस कीचड़ से बचाओ, वरन् तुम्हारा प्रिय देश रसातल को चला जायेगा। अर्जुन और भीम की संतानों का संसार से अस्तित्व ही मिट जायगा।

अपनी पूर्वलिखित पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में भी हमने आपको इन रोगों के विषय में सविस्तार समझाया था कि इन समस्त रोगों के मूल कारण कुत्सित विचारों का मस्तिष्क में भरे रहना, हस्तमैथुन, अप्राकृतिक मैथुन और बहुमैथुन आदि ही होते हैं, जो न केवल हमारे

स्वास्थ्य, यौवन और सौंदर्य को ही छीन लेते हैं, वरन् जीव-नान्त के भी कारण बन जाते हैं।

अब यहाँ हम पूर्वोक्त रोगों का संक्षिप्त विवरण लिखते हुए आपको कुछ ऐसे उत्तम और सरल प्रयोग भेंट कर रहे हैं, जिन्हें यदि अधिकाधिक रोगी प्रयोग में लाएँ, तो सम्भवतः इन रोगों को हमारा देश ही छोड़ कर भाग जाना पड़े। इन रोगों के लिए संन्यासियों के अनुपम प्रयोग तो संसार भर में प्रसिद्ध हैं ही, जिन्हें कि हम खोज-खोज कर 'संन्यासी चिकिसा शास्त्र' में लिख चुके हैं, किन्तु निम्न प्रयोग भी गुणों में लाजवाब सिद्ध हुए हैं। आप भी परीक्षा करके लाभ उठायें।

प्रमेह

इस रोग में मूत्र के साथ, पूर्व अथवा पश्चात् श्वेत द्रव निकला करता है। जब यह निस्सरण सीमा से भी अधिक बढ़ जाता है, तो प्रमेह कहलाता है। विशेष कर जब धातु (वीर्य) निकलने लग जाता है, तो बड़ा ही भयंकर सिद्ध होता है। यह धातु प्रमेह कहलाता है। इसमें शौचादि के समय जोर लगाते ही वीर्य निकल जाता है।

प्रमेह के कारण व लक्षण

मुख्य कारण तो हस्त मैथुन, अप्राकृतिक मैथुन अथवा मैथुनाधिक्य ही हैं, किन्तु कभी-कभी मनमाने पदार्थ खाने और कोष्ठबद्धता के कारण भी हो जाता है। इसमें रोगी आलसी और सुस्त हो जाता है, काम से जी चुराता है, शरीर टूटता रहता है, सिर में पीड़ा व चक्कर उत्पन्न हो जाते हैं, भोजन नहीं पचता, मैथुन शक्ति दिन-दिन घटती

जाती है, और अन्त में रोगी निकम्मा व नपुंसक हो जाता है। इसकी विशेष पहचान यह है कि रोगी के नखों का भाग श्वेत पड़ जाता है।

प्रमेह की प्राकृतिक औषधि

औषधि नहीं, अपितु महौषधि कहिए। यह अति साधारण प्रयोग प्रमेह के लिए सचमुच बड़ा ही लाभकारी है। परीक्षा करने पर ही इसके गुणों का पता लगता है।

बट वृक्ष की कोंपल और गूलर की छाल दोनों बराबर बराबर लेकर छाया में सुखालें और कूट छानकर समभाग खांड मिलालें। आवश्यकता के समय रोगी को १-१ तोला मात्रा दोनों समय दूध के साथ सेवन सेवन कराएँ। कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से रोग जड़मूल से नष्ट हो जाएगा। पतले वीर्य को गाढ़ा करने में विशेष गुणकारी है। इच्छुक जन लाभ उठायें।

प्रमेह वटी

ये गोलियां भी प्रमेह के लिए असीम लाभप्रद हैं। अनेकों वैद्य केवल इन्हीं साधारण गोलियों से परम लाभ और यश लूट रहे हैं। बनाकर परीक्षा करें।

धतूरा के बीज और काली मिर्च दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक पीसलें और शहद के साथ चने के परिमाण की गोलियाँ बनालें। रोगी को नित्य प्रातःकाल एक गोली देकर ऊपर से पिसी हुई सौंफ पानी में मिलाकर पिलाया करें। प्रभु कृपा से गिनती के दिनों में ही प्रमेह का नाम तक न रहेगा।

प्रमेह का अनुभूत प्रयोग

शीशम के एक मुट्ठी पत्ते लेकर रात को इन्हें एक पाव पानी में भिगोए। प्रातःकाल कपड़ छान कर इन में २ तोला मधु मिलाकर पिलायें। प्रमेह के लिए अक्सीर तुल्य संन्यासी प्रयोग है।

नोट

शायद कुछ लोग यह पढ़ कर चौंकें कि प्रमेह की चिकित्सा भी मधु से हो सकती है। क्योंकि कुछ लोग मधु को अत्यन्त गरम मानते हैं। किन्तु इस प्रयोग में कोई संशय की बात नहीं, क्योंकि मधु की गर्मी को शीशम के पत्ते हर लेते हैं, और शीशम के पत्तों की शीतलता अधिक होने का भी डर नहीं रहता, क्योंकि मधु उसे कम कर देता है। कहने का अभिप्राय यह है कि प्रयोग बड़ा ही गुण-कारी है। जो सज्जन आवश्यकता के समय सेवन करेंगे, इसके लाभ को वही जान सकेंगे।

नितन्त सरल प्रयोग

आवश्यकतानुसार आम की बौर का चूर्ण तैयार करें और प्रतिदिन प्रातःकाल रोगी को शक्कर मिला कर खिलाया करें। कुछ दिनों में ही रोग जड़ से जाता रहेगा। इस प्रयोग को तुच्छ न समझें। कभी-कभी बड़े उत्तम योगों से भी बाजी मार ले जाता है। निर्धनों के लिए तो वरदान है।

तदनुसार

१. पीपल की छाल छाया में सुखाकर बारीक पीसलें, और सम भाग खांड मिश्रित कर ६ मा० मात्रा प्रतिदिन प्रातः सायं दूध के साथ दिया करें। परम लाभप्रद है। सूचना—छाल की भांति ही इसके फल विशेष गुणकारी हैं। लेवनविधि उपर्युक्त अनुसार ही रखें। प्रमेह को अत्यल्प काल में दूर कर देता है।

२. नोम के हरे हत्ते पीसकर टिकिया बनालें और फिर एक छटाँक गो घृत को आग पर चढ़ाकर गर्म करें। जब घृत पकने लगे तो टिकिया इसमें छोड़ दें। यहाँ तक कि टिकिया जल जाये। फिर जली टिकिया को निकाल कर फेक दें और घी को भोजन के साथ सेवन करें। नित्य बनाकर सात दिन तक निरन्तर सेवंन करने से प्रमेह जड़ से मिट जाता है।

स्वप्नदोष

यह रोग भी प्रमेह के कारणों से ही हो जाता है। मनुष्य की शक्ति को नष्ट करने वाला यह रोग बड़ा ही भयंकर होता है। सोते-सोते ही रोगी का वीर्य स्खलित हो जाता। और इसी प्रकार स्वतः शक्ति क्षीण होती रहती है। अधिकतर यह रोग विचारों के कारण हो जाया करता है। इसके लिए विशेषातिविशेष प्रयोग आपको भेंट किये जा रहे हैं जो कि बिना पैसों के ही बन जाते हैं और चमत्कारी प्रभाव दिखाते हैं। प्रायः लोग इस रोग की चिकित्सा पर समुचित ध्यान नहीं देते, और आगे

चलकर भारी हानि उठाते हैं। हम उन्हें चेतावनी देते हैं कि ऐसी भूल कदापि न करें। यही रोग आगे चलकर नपुन्सकता का कारण भी बन जाता है; अतः प्रारम्भिक अवस्था में ही निम्न प्रयोगों द्वारा इसे दूर करने की चेष्टा करें। ईश्वरकृपा से निश्चय ही पूर्ण लाभ उपलब्ध होगा।

स्वप्नदोषनाशक वटी

रीठे के बीज की गिरी निकाल कर बारीक पीसलें और समभाग खाँड मिला, पानी की सहायता से चने के बराबर गोलियाँ बनालें। दो-दो गोलियाँ प्रातः सायं पानी के साथ निगल जाया करें। ईश्वरकृपा से प्रमेह तथा स्वप्नदोष दोनों को लाभ होगा। स्वप्नदोष के रोगी को २ गोलियाँ सोते समय सेवन करनी चाहियें। पहले दिन ही स्वप्नदोष रुक जाएगा।

स्वप्नदोष हर चूर्ण

कीकर की निर्जीव फलियाँ कूटकर रस निकालें और उसमें उड़द के साबत दाने इतने डालें कि रस उनसे १२ अँगुल ऊपर रहे। जब रस शोषण हो जाये, तो उन्हें हाथों से मलकर ऊपर के छिलके उतार दें और पत्थर के कूण्डे में पीसलें। फिर गाय के शुद्ध घृत में भूनकर चूर्ण बनालें और बादाम पिस्ता आदि डालकर सुरक्षित रखें। २ तोला से ४ तोला तक खाँड मिलाकर प्रातःकाल खाया करें। न केवल स्वप्नदोष, वरन् प्रमेह, शीघ्रपतन आदि रोग भी मिट जायेंगे।

स्वप्नदोष का अद्भुत प्रयोग

एक नितान्त सफेद कौड़ी रुई में लपेट कर आग में

रखदें और राख हो जाने पर एक तोला राख की सात पुड़िया बनालें। रोगी को प्रतिदिन प्रातःकाल एक पुड़िया मक्खन में रख दिया करें। घी के साथ गेहूँ की रोटी खिलायें। ईश्वर की कृपा से ३-४ पुड़ियों के सेवन से ही रोग जड़मूल सहित जाता रहेगा। अचूक प्रयोग है।

अति सुगम औषधि

६ माशा चिरौंजी को कूटकर आधा सेर दूध में औटायें। जब पाव भर दूध रह जाये, तो सोते समय रोगी को पिलादें। २ दिन में रोग दूर हो जायेगा। मेरा अपना अनुभूतानुभूत प्रयोग है।

तदनुसार

प्रातः सायं फिटकड़ी भुनी हुई एक माशा पानी के साथ सेवन करते रहें। देखने में साधारण किन्तु गुणों में प्रशंसनीय प्रयोग है। स्वप्नदोष के रोगी परीक्षा कर देखें। अवश्य लाभ होगा।

शीघ्रपतन

इस रोग से भी आप सब भली-भाँति परिचित होंगे। मैं अपने प्रिय पाठकों से क्षमा चाहता हूं कि स्थान का अत्यधिक अभाव होने के कारण मैं इन रोगों के विषय में यहां अधिक नहीं लिख सका। खैर, कुछेक परम हितकर प्रयोग सेवार्पित हैं।

शीघ्रपतनान्तक अगद

ऐसे कच्चे आम जिनमें अभी तक गुठली न पड़ी हो,

आवश्यकतानुसार लेकर छाया में सुखालें। तत्पश्चात् इन्हें पीसकर रख छोड़ें और नित्य प्रातःकाल निराहार मुख १४ माशा चूर्ण थोड़ी-सी खाँड मिलाकर खा लिया करें। ईश्वर-कृपा से अल्पकाल में ही शीघ्रपतन जैसे दुष्ट रोग से मुक्ति हो जाएगी।

द्वितीय अगद

एक छुहारा लेकर गुठली निकाल दें और उसके स्थान पर २ रत्ती अफीम डालकर ऊपर से पीपल का दूध डालें। फिर छुहारे के चारों ओर इतना धागा लपेटें कि छुहारा दिखाई न दे। तदन्तर इसे गेहूं के आटे में गूँध कर गूगल में दबादें। जब आटा काला हो जाय तो निकाल कर छुहारे को पीसलें और चने के बराबर गोलियाँ बनालें। १-१ गोली प्रातः सायं दूध के साथ १५ दिन सेवन करें। शीघ्र-पतन दूर होकर प्राकृतिक स्तम्भन उत्पन्न हो जायेगा!

अन्य प्रयोग

गत पृष्ठों पर अंकित 'स्वप्नदोष हर चूर्ण' भी शीघ्र-पतन के लिए विशेषलाभप्रद है। यथासमय सेवन करके लाभ उठायें।

संन्यासी प्रयोग

हमारी पूर्वलिखित पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' का एक प्रयोग शीघ्रपतन दूर करके स्तम्भन उत्पन्न करने के लिए अक्सीर सिद्ध हुआ है। जिन लोगों ने वह पुस्तक पढ़ी है, उनके प्रशंसात्मक पत्रों का हमारे पास ढेर लग गया है। हमारे अन्यान्य पाठकगण भी लाभ उठायें।

बाजीकरण मन्दता व नपुन्सकता के लिए विशेषातिविशेष प्रयोगावली

प्रथम

कीकर का गोंद १ सेर परिमाण में लेकर छोटे-छोटे टुकड़े करें और किसी मिट्टी के खुले बर्तन में रखकर आग पर पकायें। ऊपर से श्वेत प्याज के पानी का छींटा देते और भूनते जायें, यहां तक कि पूरा डेढ़ पाव रस खत्म हो जाय। भली प्रकार भुन जाने पर गोंद को उतार कर पीस लें और इसके समभाग खाँड या मिश्री पीसकर मिला लें। बस बाजीकरण सर्वोत्तम औषधि तैयार है। नित्य प्रातः सायं १-१ तोला चूर्ण को दूध से खिलाया करें। प्रमेह तंथा नपुंसकता को दूर करके अपूर्व बाजीकरण उत्पन्न करता है। शतशोनुभूत प्रयोग है।

द्वितीय

३ नग श्वेत प्याज किसी वर्तन में डालकर ऊपर से गाय या भैंस का दूध इतना डालें कि ४ अंगुल ऊपर रहे। फिर मन्द-मन्द आंच पर पकायें। और गलने पर उतार लें तथा ठंडा करके गाय के घी में भली प्रकार भून लें। तदनन्तर गाय का दूध व समभाग मधु मिलाकर कवाम करें और ठंडा करके आधा प्रातः व आधा सायंकाल सेवन किया करें। अत्यधिक बाजीकरण है। इसके सेवन कर्ता कभी तृप्त नहीं होते।

तदनुसार

प्याज का रस २॥ तोला, शहद ५ तोला दोनों को

आग पर पकायें। जब कवाम बन जाए, तो उतार कर ठंडा करलें और रोगी को पिलादें। कुछ दिनों में ही चेहरा लाल हो जाएगा। बाजीकरण शक्ति अपूर्व रूप से बढ़ जाएगी। रोगी की इच्छानुसार दूनी मात्रा भी दे सकते हैं। प्रत्यक्ष में अति सुगम प्रयोग है किन्तु इसका मूल्य तो वही आंक सकेंगे जो इसका सेवन करेंगे।

अत्युत्तम संन्यासी प्रयोग

९ माशा विशुद्ध मधु कांच के गिलास में डालकर ऊपर से मलमल का कपड़ा बांध दें और फिर इस कपड़े पर गाय अथवा भैंस का दूध दुहें। पहले दिन लगभग डेढ़ पाव दूध दुहें, फिर आध पांव बढ़ाकर तीन पाव तक ले जायें और ४० दिन तक निरन्तर क्रिया जारी रखें। ध्यान रहे कि दूध दुहकर तत्क्षण पी लिया जाये। गिलास जमीन पर रखने अथवा विलम्ब करने की आवश्यकता नहीं। सेवन-काल में यदि गुड़गुड़ाहट, अतिसार आदि आरम्भ हों तो घबराएं नहीं, सेवन जारी रखें। सब रोग स्वतः दूर होकर बाजीकरण शक्ति बढ़ जायगी। एक बार नितांत नपुंसक भी सर्पुक शक्ति प्राप्त कर लेगा।

अद्‌भुत बाजीकरण

कौंच के बीजों की गिरी १० तोला मिलाकर चूर्ण बनालें और सात माशा रात को सोते समय गौ दुग्ध के साथ सेवन कर लिया करें। कुछ ही दिनों के सेवन से वीर्य

उत्पन्न होकर बाजीकरण शक्ति बढ़ेगी । कई बार का अनुभूत प्रयोग है ।

अन्य प्रयोग

१ तोला चना पाव भर पानी में भिगो दिया करें। प्रातःकाल निकाल कर घोट छानलें और मिश्री व मक्खन मिला कर चाटा करें। ऊपर से खूब दूध पियें। कुछ ही दिनों से अद्भुत रूप से लाभ प्राप्त होगा। बाजीकरण शक्ति बढ़ाने में यह अद्वितीय है।

नपुंसकता के लिए अद्भुत टकोर

भेड़ के दूध को आग पर रखकर गरम करें और उसमें दरदरी सोंठ कुटी हुई ५-५ तोला की दो पोटलियाँ डालकर बारी-बारी से इन्द्रिय तथा उसके पेड़ू आदि पर टकोर करते रहें। कम-से-कम आधा घण्टा प्रातः एक घण्टा सायंकाल टकोर किया करें। फिर एक पोटली को दवाई इन्द्रिय पर रखकर पट्टी बाँध दें। सात दिन की क्रिया जारी रखने से मुर्दा रगों में भी जान पड़ जायेगी। परीक्षा करके लाभ उठायें।

तदनुसार

काले तिल १० तोला कूटकर दो पोटलियाँ बनालें और प्याज के रस में गरम करके बारी-बारी से टकोर करें। यह अति लाभकारी प्रयोग है।

स्त्रियों के विशेष रोग

स्त्रियां मनुष्यों के जीवन का आधा अंग हैं। अपितु हमारा पारिवारिक सुख, शोभा तथा सृष्टि का उत्तरोत्तर बढ़ना स्त्रियों पर ही निर्भर है। ईश्वर ने संसार में हर जीव को जोड़े के साथ उत्पन्न किया है। उन जीवों में जिस प्रकार मनुष्य सर्वश्रेष्ठ जीव है उसी प्रकार उसका जोड़ा भी अनुकूल ही बनाया है। स्त्री रूप, सौन्दर्य आदि गुणों के अतिरिक्त प्रेम की भी साक्षात् मूर्ति होती हैं। जहाँ स्त्री में उपरोक्त गुण विद्यमान हैं, वहाँ एक गुण ऐसा भी है जो आज के युग में स्वयं उन्हीं के लिए अभिशाप बन गया है। और वह गुण है—लज्जा-शीलता। बेचारी स्त्रियां लज्जा के कारण अपने बड़े से बड़े कष्ट को भी कभी प्रकट नहीं कर सकतीं, और अन्दर ही अन्दर घुटकर नरक-तुल्य जीवन भोगती हुई संसार से चली जाती हैं।

किन्तु खेद का विषय है कि हम पुरुष लोग स्त्री जाति से प्रेम करते हुए भी उनके रोगों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते। यदि हमें कोई बुरे से बुरा रोग भी हो जाता है, तो हम डाक्टर अथवा वैद्य के पास जाकर सारा हाल कह अपना इलाज करा लेते हैं, किन्तु याद रहे कि स्त्री जाति वैद्य डाक्टरों से कुछ कहना तो दूर रहा, स्वयं अपने पति से भी नहीं कह सकती। ऐसी दशा में हम पुरुषों का यह प्रथम कर्त्तव्य हो जाता है कि उनके स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रखें। प्रदर, मासिक धर्म की रुकावट, मासिक धर्म का

अधिक आना आदि स्त्रियों के रोग हैं जो कि उनके स्वास्थ्य, सौंदर्य और यौवन को धूल में मिला देते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे रोग भी हैं, जैसे गर्भ स्थापित न होना आदि। ऐसी दशा में पुरुष अपने को नितान्त दूध का धुला समझकर सारा दोष केवल स्त्री के सिर पर मढ़ देते हैं, और वह बेचारी बांझ कहलाकर दूध की मक्खी की भाँति फेंक दी जाती है। यह नारी जाति के प्रति घोर अत्याचार हमारे हिन्दू समाज में प्रतिदिन हुआ करता है। मैं इस विषय पर स्थानाभाव के कारण कुछ अधिक तो नहीं लिख सकता, केवल इतना ही कह देना चाहता हूं कि प्रायः पुरुषों की दुर्बलता के कारण ही सन्तान उत्पन्न नहीं होती; अतः पुरुष को पहले अपनी जाँच कराकर तब कोई निर्णय करना चाहिए। नीचे हम स्त्रियों के कुछ प्रमुख रोगों का हाल और उनके निवारणार्थ कुछेक सरल प्रयोग लिखते हैं, जिनसे आप बिना डाक्टर के पास गये और बिना अधिक व्यय किये अपने घर की पीड़ित स्त्रियों का कष्ट निवारण कर सकेंगे। स्त्री रोगों के लिए कुछ जादू असर चुटकुले हम अपनी दूसरी पुस्तक 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में भी लिख चुके हैं। आप में से अधिकांश उनसे अपूर्व लाभ प्राप्त कर रहे होंगे। जिन सज्जनों ने अभी तक उस पुस्तक को न देखा हो, मैं उनसे अनुरोध करूँगा कि एक बार अवश्य देखें। क्योंकि पुस्तक बच्चों, स्त्रियों तथा पुरुषों के सभी रोगों को घर बैठे दूर कर देने वाली है। आशा है कि पाठक गण अपूर्व लाभ उपलब्ध करेंगे।

प्रदर (ल्यूकोरिया)

स्त्रियों के लिए यह बड़ा ही भयानक है। इसे वैद्यक भाषा में प्रदर और आंग्ल भाषा में ल्यूकोरिया कहते हैं। एक तरह से इसे स्त्रियों का प्रमेह समझ लीजिये। जिस प्रकार प्रमेह मनुष्य को नितान्त निकम्मा और समस्त यौवन सुखों से वंचित कर देता है, उसी प्रकार प्रदर स्त्री के सुख सौंदर्य और यौवन का सबसे बड़ा शत्रु है। इस रोग में स्त्री की गुप्त योनि से श्वेत आर्द्रता बहती रहती है, मुख की कांति लुप्तहो जाती है, और स्वास्थ्य दिन-दिन गिरता ही जाता है। कमर में हल्की-हल्की पीड़ा होती रहती है, सिर दुखता रहता है, हृदय धड़कता है। कभी-कभी गुप्त योनि में खुजली भी होने लगती है, भूख नहीं लगती, पाचन शक्ति बिगड़ जाती है और शरीर टूटता रहता है। यदि इस रोग की चिकित्सा ठीक प्रकार न कराई जाए तो रोगिणी मौत के मुंह में जा गिरती है। अतः इसकी चिकित्सा में कदापि उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

प्रदर नाशक चूर्ण

इमली के बीज गर्म रेत में डालकर अधभुने से करलें और उनके छिलके उतार कर खरल में डालकर बारीक कूटें। तत्पश्चात् कपड़े में छान कर सम भाग खाण्ड मिलायें और ६ माशा से एक तोला तक की मात्रा प्रातः समय पानी से देदें। प्रदर की अचूक औषधि है। कुछ ही दिनों के प्रयोग से रोगिणी स्वस्थ्य हो जाएगी।

द्वितीय प्रकार

यह प्रयोग भी उपरोक्त प्रयोग की भाँति ही हैं। इसके बनाने में कोई व्यय नहीं पड़ता और ईश्वर कृपा से पुराना

से पुराना प्रदर भी जड़ से मिट जाता है। आवश्यकता के समय बन कर सेवन करायें।

मौलसिरी की छाल आवश्यकतानुसार लेकर छाया में सुखालें और बारीक पीसकर कपड़छान करके सम भाग खाँड मिलालें। इनमें से प्रतिदिन प्रातःकाल एक तोला ताजा पानी के साथ दिया करें। एक सप्ताह के निरन्तर सेवन से पूर्णतया लाभ हो जायेगा, स्वयं परीक्षा कर देखें।

प्रदर की दुग्ध चिकित्सा

यद्यपि इस चिकित्सा पद्धति में समय अवश्य अधिक लगता है, किन्तु लाभ की पूरी-पूरी गारंटी की जा सकती है। जो सज्जन चाहें परीक्षा कर देखें।

प्रयोग इस प्रकार है—

दूध को पानी में मिलाकर दिन में दो बार किसी दाई से गर्भाशय को धुलवाया जाय और यही क्रिया एक मास तक जारी रखी जाय। फिर बन्द करदें। फिर एक मास तक धोने की क्रिया करायें। इसी प्रकार तीन बार करने से शर्तिया लाभ हो जाता है।

एक और सरल प्रयोग

ढाक की गोंद और खांड दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक पीसकर चूर्ण बना रखें और प्रतिदिन प्रातः काल निराहार मुख ६ माशा की मात्रा पानी के साथ दिया करें। दस दिन के निरन्तर सेवन से निश्चय ही आराम हो जायेगा। अनेक बार का अनुभूत परम विश्वस्त प्रयोग है।

आवश्यकता के समय सेवन कराके इन बेजुबान गायों की रक्षा करें।

प्रदर नाशक दुग्ध

स्त्रियों के प्रदर रोग के लिए पीपल का दूध भी एक अनुपम औषधि है। आवश्यकता के समय पीपल का दूध १० बूँद प्रातःकाल बताशे में डालकर प्रदर-रोगिणी को सेवन कराया करें और ऊपर से आधा सेर गौ दुग्ध पिलाया करें। कुछ दिनों में ही श्वेत प्रदर रोग जड़मूल से नष्ट हो जायेगा, अचूक प्रयोग है।

प्रदर की अनुपम वटी

ये गोलियाँ प्रदर के लिए बड़ी ही अचूक सिद्ध हुई हैं, आवश्यकता के समय लाभ उठायें।

हजारदानी के बीज आवश्यकतानुसार लेकर वट वृक्ष के दूध में खरल करके गोलियाँ बनालें तथा प्रदर रोग से पीड़ित स्त्री को २-२ गोलियां प्रातः सायं पानी के साथ दिया करें। निश्चय लाभ होगा।

प्रदर नाशक मधुर चूर्ण

सरयाली के बीज बारीक पीसकर समभाग मिश्री मिलालें और प्रातः सायं एक हथेली भर पानी से दिया करें। कुछ ही दिनों में रोग निर्मूल हो जायेगा।

मासिक धर्म रुक जाना

स्त्रियों के लिए मासिक धर्म का नितान्त रुक जाना अथवा रुक-रुक कर अत्याल्प आना बड़ा ही खतरनाक सिद्ध होता

है। क्योंकि जो विषैला द्रव्य रक्त के साथ निकल जाना चाहिए, वह अन्दर ही रुककर सिर पीड़ा, अपस्मार (मृगी) और उन्माद आदि भयंकर रोगों का कारण बन जाता है। नीचे कुछेक सरल प्रयोग अंकित किये जाते हैं, जिनसे रुका हुआ मासिक खुल कर नियमित रूप से आने लगता है।

अनुपम अर्क

नागफनी बूटी के पके फलों का रस ४ तोला लेकर ५ तोला पानी में मिला कर गर्म करें। जब उबाल आ जाए तो गरम गरम ही रात के समय पिलायें। कुछ दिनों में निश्चय ही लाभ हो जाएगा।

सर्वोत्तम क्वाथ

३ तोला लाल मजीठ कूट कर २० तोला पानी में पकायें और २ तोला मिश्री सिलाकर मिलायें। ३-४ बार पिलानेसे मासिक धर्म खुलकर आने लगता है।

अति सरल—अति लाभप्रद

यह प्रयोग देखने में जितना ही सरल है लाभ में उतना ही वढ़ चढ़ कर है। इसके सेवन से कुछ दिनों में ही चिर-काल का रुका हुआ मासिक धर्म भी जारी हो जाता है। परीक्षा कर देखें।

१ छटांक प्याज को १ सेर पानी में डालकर पकाएँ, जब डेढ़ पाव जल शेष रह जाये, तो उसमें आधी छटांक गुड़ मिलाकर गरम गरम ही पिलादें, कुछ दिनों तक इसी प्रकार नित्य पिलाया करें। ऋतु जारी हो कर नियमित रूप से आने लगेगा।

तदनुसार

२॥ तो० सौंफ और ४ तोला गुड़ (चार वर्ष) पुराना तीन पाव पानी में डाल कर पकायें। जब पकते पकते पाव भर पानी शेष रहे, तो छानकर गरम गरम पिलायें और रजाई उढ़ाकर रोगिणी को लिटादें। २-३ बार के सेवन से निश्चय ही मासिक धर्म खुल कर आ जाएगा।

आश्चर्यजनक प्रयोग

नीम के हरे पत्तों को थोड़े से पानी में उबाल कर रोगिणी की नाभि के नीचे बाँध दें। यदि मासिक धर्म कष्ट से आने की शिकायत होगी तो बिना किसी कष्ट के मासिक खुल कर आ जाएगा। यह बन्द मासिक को जारी करने के लिए लाभप्रद है।

अन्य प्रयोग

ऊंटनी का दूध गरमागरम गुड़ मिश्रित करके रोगिणी को पिलायें और गरम कपड़ा उढ़ाकर लिटादें। इससे रजोधर्म खुल जाएगा।

मासिक धर्म की अधिकता

यह रोग भी बड़ा ही खतरनाक है। कभी कभी तो सेरों खून निकल जाता है और स्त्री का जीवन संकट में आ उपस्थित होता है। ऐसी दशा में निम्न प्रयोग बड़े ही लाभकारी सिद्ध हो चुके हैं।। तत्काल रक्त प्रवाह को रोक कर रोगिणी को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं।

चमत्कारी दवा

इसकी पहली मात्रा ही नदी के समान बहती हुई रक्त-धारा को भी तत्काल रोक देती है ।

कागज को जला कर राख करलें और ६ माशा राख मुल्तानी मिट्टी के स्वरस के साथ सेवन करायें। प्रथम मात्रा ही जादू सा प्रभाव दिखाएगी । तथापि दो-चार दिन पर्यन्त कराते रहें।

आश्चर्यजनक पोटली

गधे की ताजा लीद बारीक कपड़े में पोटली बांधकर दाई से योनि के अन्दर रखवा दें दूसरी बार रखवाने की शायद ही आवश्यकता पड़े ।

मिट्टी का चमत्कार

एक इतनी पुरानी ईट लें, जो कि हाथ से भुरती हो, इसे सूक्ष्म पीस कर ६ माशा मात्रा पानी में घोलकर रोगिणी को बिना बताए पिलादें । ३ दिन के निरन्तर सेवन से तीव्र रक्त प्रवाह भी निश्चय ही रुक जाएगा । अनेक बार का परीक्षित प्रयोग है ।

बाँझपन

यदि बाँझपन में स्त्री का कोई दोष बाधक होता है, तो उन में सर्वप्रमुख कारण मासिक धर्म की अनियमितता और सपीड़ा आना ही होता है। अस्तु सबसे पहले ऐसी औषधियाँ सेवन करायें, जिनसे मासिक धर्म नियमित रूप से आने लगता है। तदन्तर गर्भ स्थापक औषधियाँ दें । निश्चय ही सफलता होगी ।

गर्भ-स्थापक चूर्ण

असगंध नागौरी आवश्यकतानुसार लेकर चूर्ण बनालें, और उसको घी में चिकना कर रखें। मासिक धर्म के बाद ६ माशा प्रति दिन दूध के साथ लेते रहें। एक मास के निरन्तर सेवन से निश्चय ही आशा फलवती हो जायगी। परीक्षा करके लाभ उठायें।

द्वितीय प्रयोग

यह प्रयोग भी परम गुणकारी है। इसके निरन्तर सेवन से ७ दिन में निश्चय ही गर्भ स्थापित हो जायगा। इच्छुक जन लाभ उठायें।

एक जायफल्ल को खरल में डालकर अति बारीक पीस लें, और उसकी ७ पुड़ियाँ बनालें तथा मासिक धर्म स्नान के पश्चात् एक पुड़िया प्रातःकाल पानी से दिया करें। ७ दिन में गर्भ स्थापित हो जायगा। यह एक विशेष संन्यासी प्रयोग है जो कि ईश्वर कृपा से निराश जनों की भी आशा निश्चय ही फलवती करता है। अचूक प्रयोग है।

तृतीय प्रयोग

पीपल के फल लाकर छाया में सुखाकर चूर्ण बनालें और रजो-धर्म से निवृत्त होने पर प्रतिदिन रात के समय ४-४ माशा दवा गर्म दूध से देते रहें। ईश्वर कृपा से पहले मास ही आशा पूर्ण हो जायेगी।

गर्भपात

यह रोग भी बहुत बुरा है। जिस स्त्री को लग जाता है, कठिनता से ही छोड़ता है। कई स्त्रियाँ बार-बार गर्भ-

पात हो जाने के कारण तंग आ जाती हैं और यह कामना करने लगती हैं कि फिर गर्भ स्थापित हो न हो। यह गर्भ-रक्षा के लिए एक अत्युत्तम चमत्कारी प्रयोग है, परीक्षा करके अवश्य ही लाभ उठायें।

गर्भरक्षक माला

दवा का पिला देना तो दूसरी बात है। कई वस्तुओं का शरीर से स्पर्श कर देना ही बड़ा प्रभावकारी होता है। यथा गर्भिणी स्त्री को यदि कहरवा की माला गले में पहिना दी जाय, तो हरगिज गर्भपात नहीं हो सकता।

हितकर

स्त्री रोगों के लिए भी संन्यासियों के चुटकुले जादू असर माने जा चुके हैं। न केवल जनसाधारण अपितु वैद्य व हकीम भी इन्हें मान गये हैं। वे सब 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' में देखें।

शिशु-रोग

बच्चों के विचित्र रोगों के लिए 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' नामक पुस्तक में आपको पर्याप्त ज्ञान व उत्तमोउत्तम योग प्राप्त हो सकते हैं, तथापि यहां भी हम स्थानानुसार कुछेक प्रयोग भेंट कर रहे हैं, जो निस्सन्देह परम लाभकारी हैं।

तुतलापन दूर करना

प्रतिदिन बच्चे की जिह्वा पर तनिक सा स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी) का दूध लगा दिया करें। कुछ ही दिनों में जबान स्पष्ट हो जायेगी।

मुंह के छाले दूर करना

यदि कभी बच्चे के मुँह में छाले हो जायें, जिस के कारण दूध पीने में भी कष्ट होता हो, तो उस समय भुना हुआ सुहागा बारीक पीसकर शहद मिला कर छालों पर कई बार लगाएँ। ईश्वरकृपा से दो एक दिन में ही छाले नितान्त मिट जायेंगे।

शिशु-काम के लिए उत्तम प्रयोग

सुहागा या फिटकड़ी भुनी हुई पानी में घोल कर बच्चे की माँ के स्तनों के उस भाग पर लगादें, जिस भाग को बच्चा मुँह में लेकर दूध चूसता है। फिर बालक को दूध पिलाएँ। कई बार इस प्रयोग को करने से कठिन-से-कठिन खांसी भी दूर हो जायेगी। अनुभूत प्रयोग है।

शिशु कासघ्न वटी

१ तोला काकड़ासिंगी बारीक पीसकर मधु के साथ चने के परिमाण की गोलियाँ बनालें और १ गोली पानी या दूध में घोलकर दिया करें। दो चार दिन में पूर्ण आराम हो जायेगा। यह भी शतशोनुभूत प्रयोग है।

अतिसार की सर्वोत्तम दवा

धाय के फूल बारीक पीसकर रखें और बालक की माता के

दूध में घोलकर पिलाएँ। २-३ मात्राओं में ही बच्चे के दस्त बन्द हो जायेंगे।

डब्बा रोग

यह बच्चों का निमोनिया होता है। जिसकी पहचान यह है कि सांस लेते समय पसली के नीचे गढ़ा सा पड़ता है, साँस की गति तीव्र हो जाती है, ज्वर भी तेज हो जाता है। यह वड़ा ही कठिन रोग है। हम आपको कुछेक अति प्रशंसित प्रयोग भेंट कर रहे हैं जो हजारों वैद्यों द्वारा सैकड़ों बच्चों पर अनुभूत हो चुके हैं।

डब्बा की सफल औषधि

अमलतास की सावत फली को जलाकर राख करलें और डब्बा रोग से पीड़ित बालक को एक चुटकी शहद में मिला कर चटाएँ। ईश्वरकृपा से निराशा-जनक अवस्था में भी अक्सीरवत् प्रभाव दिखाएगी।

शिशु-क्षय

इस रोग में बालक दिन-दिन सूखता चला जाता है। मुख की कांति प्राय: ज्यों की त्यों बनी रहती है, किन्तु विशेषकर टांगें आदि सूखकर लकड़ी जैसी हो जाती हैं, नितम्बों पर सिलवटें पड़ जाती हैं और बालक सूखकर हड्डियों का ढांचा मात्र रह जाता है। इसके लिए हम एक चमत्कारी प्रयोग आपको भेंट करते हैं, जो कि बनने में अति सरल व सस्ता है। आवश्यकता के समय बनाकर रोगी बालकों को स्वास्थ्य प्रदान करें और लाभान्वित होकर सेवक को शुभाशीष द्वारा स्मरण करें।

शिशुक्षयारि वटी

आवश्यकतानुसार सूखे हुए आमले लेकर बारीक पीसलें और दही के पनीर से मूँग के बराबर गोलियाँ बनालें। रुग्ण बालक को १-१ गोली प्रातः सायं मां के दूध में घोल कर दें। ईश्वर कृपा से गिनती के दिनों में बालक हृष्ट-पुष्ट हो जायेगा। सैकड़ों बालक इससे स्वस्थ किए जा चुके हैं।

बाल रक्षक वटी

ये गोलियाँ बच्चों के समस्त रोगों के लिए अक्सीर हैं। यदि स्वस्थ बालकों को भी कभी-कभी सेवन कराईं जायें, तो वे सदैव हर प्रकार के रोगों से सुरक्षित रहेंगे। शत-शोनुभूत है।

सूखा आंवला बारीक पीस कर पानी के साथ-साथ रत्ती की गोलियां बनालें और दोनों समय एक-एक गोली पानी में घोल कर दिया करें।

अंतिम प्रकरण

सर्प दंश व बिच्छू दंश के लिए विशेष प्रयोग

प्रथम (सर्प दंश के लिए)

तम्बाकू की लकड़ी आवश्यकतानुसार लेकर राख बनालें। इसे दो दिन पर्यन्त किसी मिट्टी के बर्तन में भिगो रखें। तीसरे दिन इसका सत्व लेकर यथाविधि कड़ाही में डाल कर नमक तैयार कर लें। बस अक्सीर तैयार है।

इसे अतिसूक्ष्म पीसकर शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय ४ रत्ती से १ माशा तक की मात्रा पानी के साथ खिलायें। साथ ही २-३ रत्ती दवा दंशित स्थान पर नश्तर लगा कर मलदें। एक दो बार के लगाने व खिलाने से विष का प्रभाव नष्ट हो जायेगा। और रोगी नितान्त स्वस्थ हो जायेगा। हमारे एक परिचित वैद्य महोदय का कई बार का अनुभूत प्रयोग है, और ईश्वर कृपा से आज तक कभी असफलता नहीं हुई। परीक्षा कर देखें।

द्वितीय

इटसिट, तान्दला व हुलहुल, तीनों बूटियाँ बराबर-बराबर लेकर और हरी-हरी को ही कूटकर १-१ तोले की गोलियाँ बनालें ये गोलियाँ सूखकर छोटी हो जायेंगी। रोगी को १ गोली दूध की लस्सी में घोटकर पिलाएँ व एक गोली लस्सी में घोल कर दंशित स्थान पर लेप करदें। यदि एक बार में लाभ न हो तो दो घण्टे पश्चात् पुनः दें। सर्प दंशित रोगी ईश्वर कृपा से नितान्त स्वस्थ हो जायेगा।

तृतीय

ज्येष्ठ के महीने में जामुन वृक्षकी छाल इकट्ठी करके छाया में सुखालें और कूट कर डिब्बों में भर लें। आवश्यकता के समय ५ तोला चूर्ण व १ तोला काली मिर्च कूट कर मिला दें और ताजा पानी में घोलकर रोगी को पिलायें। तत्काल विष दूर हो जायेगा और साँप-काटा रोगी कदापि न मरेगा। कई बार का अनुभूत और परम विश्स्त प्रयोग है।

प्रथम (बिच्छू दंश के लिए)

मूलियों को खरल में कूटकर रस निकालें और छान कर शीशियों में भर रखें। बिच्छू के काटे स्थान पर फुरेरी लगाते ही तुरन्त ठंडक पड़ जाती है।

द्वितीय

नीम की छाल को हुक्के की चिलम में तम्बाकू के स्थान पर रखकर रोगी को कश लगवायें। ३-४ कश लगाते ही बिच्छू-दंश की पीड़ा दूर हो जायेगी और रोगी को तत्काल आराम हो जायेगा।

तृतीय

प्याज को काटकर दो टुकड़े करें और कटे हुए भाग पर चूना कलई बुझा हुआ लगा कर काटे हुए स्थान पर अच्छी तरह मलें। ईश्वर कृपा से बिच्छू -दंश से चीखता-चिल्लाता रोगी भी तत्काल आराम प्राप्त कर लेगा। हमारे एक मित्र श्री शम्भूदयाल जी चौधरी का सैकड़ों बार का अनुभूत प्रयोग है, कभी निष्फल नहीं जाता। आवश्यकता के समय परीक्षा करके लाभ उठायें।

चतुर्थ

२ माशा चूर्ण रीठा पानी के साथ रोगी को खिलादें और रीठे का छिलका सिरके में बारीक पीस कर दंशित स्थान पर लेप करदें। सूख जाने पर पुनः लेप करें, तुरन्त पीड़ा दूर होकर विष का प्रभाव भी नष्ट हो जायेगा।

बस, अब हम आपसे विदा चाहते हैं। हमारी पूर्व लिखित, पुस्तक, 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' भी आपने देखी ही होगी और यह पुस्तक भी आपके हाथों में है। ये दोनों पुस्तकें कैसी हैं, मैं इस बात को दुहराना नहीं चाहता। अपितु यदि इनसे हमारे प्रिय पाठकों को कुछ भी कल्याण हो सका तो हमारा परिश्रम सफल हो जायेगा। परमात्मा आपको अपूर्व लाभ प्रदान करें।

शुभकामनाओं के साथ—
अमोलक चन्द्र शुक्ला

२२-१२-७४

चिकित्सा साहित्य

(एलोपैथिक, होम्योपैथिक, आयुर्वेदिक एवं प्राकृतिक)

नाम पुस्तक	लेखक	छपा मूल्य
एलोपैथिक		
माडर्न एलोपैथिक गाइड	डा० कोकचा	30.00
आधुनिक एलोपैथिक इन्जैक्शन बुक	,,	12.00
कुशल कम्पाउण्डर्स गाइड	,,	12.00
एलो०,आयु०यूनानी टव्लेट्स गाइड	,,	12.00
नपुंसक चिकित्सा	,,	6.00
पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा	,,	6.00
होम्योपैथिक		
होम्यो० पारिवारिक चिकित्सा	राजेश दीक्षित	8.25
—सरल होम्योपैथिक चिकित्सा	डा० प्रेम चन्द	2.50
आयुर्वेदिक		
आयुर्वेद गाइड	पं. अमोलचन्द्र शुक्ल	25.50
संन्यासियों की गुप्त बूटियाँ (देहाती जड़ी बूटियाँ)	रामनारायण वैद्य	15.00
औषधियों का भण्डार	पं. अमोलचन्द्र शुक्ल	16.50
देहाती अनुभूत योग संग्रह भाग 1	,,	8.25
देहाती अनुभूत योग संग्रह भाग 2	,,	8.25
पैसे-पैसे के वैद्यक चुटकुले	,,	6.00
संन्यासी चिकित्सा शास्त्र (साधू की चुटकी)	,,	8.25
घर का वैद्य बड़ा	,,	16.50
देहाती एकौषधि चिकित्सा	,,	6.00
पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज	,,	15.00
वैद्यरानी (लेडी डाक्टर)	रामनारायण	4.50
वैद्यराज (घरेलू डाक्टर)	,,	4.50
देहाती इलाज	,,	4.50
घर का वैद्य छोटा	ऋषिकुमार	1.50
बाल रोग चिकित्सा	,,	1.50
टोटका चिकित्सा	पं. अमोलचन्द्र शुक्ल	1.50

नाड़ी ज्ञान तरंगिणी	रघुनाथ प्रसाद	4.50
सरल चिकित्सा अरुणोदय	द्वारका प्रसाद	6.00
पेटेन्टअदवियात (पेटेन्ट मैडिसन्स)	आर० एस० बंसल	6.00
दांतों का डाक्टर	के० सी० गुप्त	4.50
— रस तरंगिणी भाषा	कविराज विद्याधर	12.00
इलाजुलगुर्बा	———	15.00
चूर्ण भण्डार	डा० कोकचा	4.50
स्वप्नदोष चिकित्सा	रामनारायण	4.50
घरेलू दवाइयां	राजेश दीक्षित	8 25
हमारी आंखें	डा० अग्रवाल	8.25
स्त्री रोग विज्ञान	पं. रामगोपाल	8.25
रोगों की सरल चिकित्सा	राजेश दीक्षित	4.50
रोगों की अचूक चिकित्सा	,,	4.50
घर में वैद्य	अशोक के. भटनागर	4.50
स्वयं चिकित्सा	,,	4.50
हींग के गुण-उपयोग	डा० कोकचा	4.50
तुलसी के गुण-उपयोग	,,	4.50
प्राकृतिक चिकित्सा		
सूर्य किरण चिकित्सा	राजेश दीक्षित	3.00
अपना कद कैसे बढ़ायें	,,	4.50
स्वमूत्र द्वारा चिकित्सा	,,	3.00
देहाती प्राकृतिक चिकित्सा	पं० अमोल चन्द	8.25
प्राकृतिक चिकित्सा सार	के० प्रसाद	12 00
विभिन्न रोगों की सरल प्रा० चि०	चौ० जुगल किशोर	12.00
प्राकृतिक चिकित्सा की महिमा	,,	12.00
प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार	,,	12.00
प्राकृतिक चिकित्सा की देन	जुगल किशोर	71.00

सूचना

देहाती पुस्तक भण्डार द्वारा ३१ मई, १९७४ तक प्रकाशित लगभग तीन हजार में से दो हजार छोटे-बड़े प्रकाशनों के छापने व बेचने के अधिकार व सारा पुराना स्टाक, अब उसके तीन संस्थापकों में से दो संस्थापकों द्वारा अलग संस्थापित संस्था हिन्द पुस्तक भण्डार' के पास हैं।

इसलिए कृपालु पाठक भविष्य में इन पुस्तकों के आर्डर 'हिन्द पुस्तक भण्डार' के पास ही भेजें। पत्र लिखकर सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।